* ओड़िशा संस्करण

www.epaper.azadsipahi.in

30 जून, 2023
आषाढ़, शुक्ल पक्ष, द्वादशी
संवत 2080
पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹3.00

रांची
शुक्रवार, वर्ष 08, अंक 250

कलम कलम बढ़ाये जा

आजाद सिपाही

राजस्थान के सीएम अशोक गहलोत के पैर में चोट लगी, अस्पताल लाया गया

गृह मंत्री ने लखीसराय की सभा में कांग्रेस पर कसा तंज

20 साल से हो रही राहुल बाबा की लांचिंग : शाह

- लोगों से पूछा, राहुल चाहिए या नरेंद्र मोदी
- बिहार के सीएम नीतीश कुमार पर साधा निशाना

आजाद सिपाही संवाददाता

पटना/लखीसराय। गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि 20 साल से राहुल बाबा की लॉचिंग की जा रही है। इस बार भी कांग्रेस ने पटना से राहुल गांधी को लांच किया। बिहार की जनता भ्रष्टाचारियों के साथ नहीं जाती है। 2024 में जनता को तय करना है कि 20 बार फेल राहुल बाबा चाहिए या नरेंद्र मोदी चाहिए। मोदीजी 2024 में भी देश का नेतृत्व करना चाहते हैं। शाह गुरुवार को बिहार के लखीसराय में एक सभा को संबोधित कर रहे थे। शाह ने बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा कि 20 से ज्यादा पार्टियां इकट्ठा हुई। ये 20 पार्टियां कौन हैं? इन्होंने 20 लाख करोड़ का घपला, घोटाला-भ्रष्टाचार किया है। नीतीश बाबू आपकी राजनीति पैदाइश ही भ्रष्टाचार का विरोध करके हुई। इंदिरा के आपातकाल के विरोध से ही शुरू हुई। किस मुंह से आप इनके साथ मिल कर मुंगेर और बिहार कि जनता के बीच आइयेगा।

साधा। अपने 27 मिनट के भाषण में आठ बार नीतीश कुमार का नाम लिया। उन्होंने कहा कि 'पलटूराम' नीतीश बाबू कहते हैं कि नौ साल में क्या किया? मैं कहता हूं कि नीतीश बाबू, जिनके कारण आप मुख्यमंत्री बने, जिनके साथ इतना साल बैठे, कुछ तो लिहाज करो। नीतीश बाबू, आप सुनना चाहते हो, तो पूरा हिसाब देने आया हूं।

नीतीश सीएम बने रहना चाहते हैं : गृह मंत्री ने कहा कि नीतीश बाबू को पूछना चाहता हूं आपने क्या किया? जो नेता हर बार बदले, उस पर विश्वास कर सकते हैं क्या? ऐसे आदमी के हाथ में बिहार सौंपना चाहिए क्या? इसलिए कांग्रेस की चौखट पर बैठे हैं। वह बस मूर्ख बना रहे हैं। वह सीएम बने रहना चाहते हैं। अमित शाह ने पटना में आयोजित विपक्षी एकता की बैठक में शामिल एक-एक पार्टियों का नाम लेकर निशाना साधा।

पूरी दुनिया मोदी-मोदी कह रही है : अमित शाह ने कहा कि मोदी जी विश्व में जहां- जहां जाते हैं, मोदी-मोदी-मोदी के नारे लगते हैं। अभी-अभी अमेरिका गये थे कोई इनका अपॉइंटमेंट, कोई हस्ताक्षर, तो कोई पैर छूकर आशीर्वाद मांग रहा है। यह मोदी जी का सम्मान नहीं है, ये मुंगेर वालों आपका, बिहार और 130 करोड़ भारतीय जनता का सम्मान है।

आप के बाद यूसीसी को उद्धव का सशर्त समर्थन

नयी दिल्ली (आजाद सिपाही)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के देशभर में यूनिफॉर्म सिविल कोड (यूसीसी) लागू करने के बयान का आम आदमी पार्टी (आप) के बाद उद्धव ठाकरे गुट की शिवसेना ने समर्थन किया है। हालांकि उद्धव ने सरकार के स्पष्टीकरण की शर्त रखी है। शरद पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) ने न तो यूसीसी का समर्थन किया है और न ही विरोध। वह अभी निष्पक्ष है। वहीं, नेशनल कांफ्रेंस लीडर फारूक अब्दुल्ला ने कहा है कि सरकार को यूसीसी लागू करने के नतीजों पर बार-बार विचार कर लेना चाहिए। गौरतलब है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 27 जून को भोपाल में भाजपा के 10 लाख बूथ कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए देशभर में यूनिफॉर्म सिविल कोड जल्द लागू करने की वकालत की थी।

हूल दिवस आज: सीएम भोगनाडीह में सिदो-कान्हू को देंगे श्रद्धांजलि

- सीएम 12.10 बजे शहीद स्थल पहुंचेंगे, फिर कई कार्यक्रमों में होंगे शामिल

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची/बड़हरवा। संताल हूल दिवस शुक्रवार को है। इस मौके पर संताल के वीर शहीद सिदो-कान्हू को सभी श्रद्धांजलि देते हैं। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन सिदो-कान्हू की 167वीं वर्षगांठ पर उनकी जन्मस्थली भोगनाडीह में श्रद्धांजलि देंगे। वह इसके लिए गुरुवार शाम साढ़े सात बजे रांची से वनांचल एक्सप्रेस से रवाना हुए। हेमंत वहां कई कार्यक्रमों में भी शामिल होंगे।

भोगनाडीह का है विशेष स्थान : झारखंड के आदिवासियों द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध किया गया विद्रोह 'हूल क्रांति' के रूप में जाना जाता है। अंग्रेजों से विरुद्ध लड़ते हुए 20 हजार आदिवासी क्रांतिवीरों ने अपनी जानें अर्पित की हैं। हूल क्रांति दिवस प्रत्येक वर्ष 30 जून को मनाया जाता है। इस क्रांति की मशाल 1857 के स्वाधीनता संग्राम से पहले प्रज्वलित की गयी थी। यह क्रांति सिदो तथा कान्हू नामक दो भाइयों के नेतृत्व में 30 जून, 1855 ई को वर्तमान साहिबगंज ज़िले के भोगनाडीह से प्रारंभ हुई थी। इसलिए इस स्थान का विशेष महत्व है। इसलिए मुख्यमंत्री ट्रेन यात्रा कर भोगनाडीह गये हैं।

हेमंत 12:55 बजे पहुंचेंगे भोगनाडीह : ट्रेन की यात्रा में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन 30 जून की सुबह 5:50 बजे बड़हरवा रेलवे स्टेशन पर उतरेंगे। यहां से हेमंत पतना प्रखंड के धरमपुर स्थित आवास पहुंचेंगे, जहां वह विश्राम करेंगे। लगभग 12:10 बजे शहीद स्थल पंचकठिया में पहुंचेंगे। यहीं से सिदो-कान्हू को श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद 12:55 बजे भोगनाडीह पहुंचेंगे। भोगनाडीह में शहीद की प्रतिमा पर माल्यार्पण करेंगे। शहीद के वंशजों से मुलाकात करने के बाद विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों में हिस्सा लेंगे। शाम करीब चार बजे मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन पतना धरमपुर आवास आयेंगे। वह रात 10 बजे बड़हरवा रेलवे स्टेशन से भागलपुर-रांची वनांचल एक्सप्रेस से ही रांची के लिए रवाना हो जायेंगे।

खादगढ़ा बस स्टैंड में खड़ी नौ बसें जलीं

- आग लगने के कारण की जांच की जा रही
- किसी के हताहत होने की सूचना नहीं

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। रांची के लोअर बाजार थाना क्षेत्र के कांटा टोली स्थित खादगढ़ा बस स्टैंड में खड़ी नौ बसों में गुरुवार को आग लग गयी। इनमें से छह बसें जल कर खाक हो गयीं, जबकि तीन बसों को पूरी तरह से जलने से बचा लिया गया। इस घटना के कारण पूरे इलाके में अफरा-तफरी का माहौल रहा। घटना की जानकारी मिलने का बाद फायर ब्रिग्रेड की टीम ने आग पर काबू पाया। आग कैसे लगी, इसका खुलासा अब तक नहीं हो पाया है। इस घटना में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है।

प्राप्त जानकारी के मुताबिक दोपहर में एक बजे के करीब खदगड़ा बस स्टैंड में खड़ी पांच बसों में अचानक आग लग गयी। आग की लपटें इतनी भयानक थीं कि किसी भी व्यक्ति को बचाव के लिए पास पहुंचा संभव नहीं था। इस बीच किसी ने पुलिस और फायर ब्रिग्रेड को फोन किया। वे तत्काल घटना स्थल पहुंचे। आग बुझाते-बुझाते चार और बसें आग की चपेट में आ गयीं। हालांकि तीन बसों का कुछ हिस्सा जला। जिन बसों में आग लगी, उनमें निशांत ट्रैवेल्स, मां भवानी ट्रैवेल्स, राधेश्याम और एलडी मोटर्स की बसें शामिल हैं। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है।

विपक्षी दलों की बैठक 13-14 जुलाई को बेंगलुरू में होगी

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। एकता की कवायद के बीच विपक्षी दलों की अहम बैठक 13 और 14 जुलाई को होगी। एनसीपी नेता शरद पवार ने इसके बारे में जानकारी दी है। उन्होंने बताया कि विपक्ष की अगली बैठक बेंगलुरू में होगी। इससे पहले कहा जा रहा था कि बैठक 10 या 12 जुलाई को होगी। इतना ही नहीं, बैठक के लिए हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला को चुना गया था। इस बीच में बैठक के शिमला की जगह जयपुर में आयोजित किये जाने की खबर भी सामने आयी थी। पटना बैठक में शामिल विपक्षी दलों के एक महत्त्वपूर्ण सहयोगी ने संकेत दिया था कि सत्तारूढ़ एनडीए (नेशनल डेमोक्रेटिक एलायंस) के सामने विपक्ष अपने गठबंधन को पीडीए का नाम दे सकता है। इस पीडीए का विस्तार पेट्रियॉटिक डेमोक्रेटिक एलायंस हो सकता है। इसमें पेट्रियॉटिक शब्द जोड़कर विपक्ष यह बताने की कोशिश कर सकता है कि वह भाजपा से कहीं ज्यादा राष्ट्रवादी है। बेंगलुरू में हो रही बैठक पटना में हुई पिछली बैठक में आये दलों के नेताओं की सहमति से हो रही है। इसमें एनसीपी, राजद, जदयू, झामुमो, शिवसेना (यूटीबी), डीएमके, वामदल, समाजवादी पार्टी, एनसी, पीडीपी, तृणमूल समेत अन्य की सहमति है।

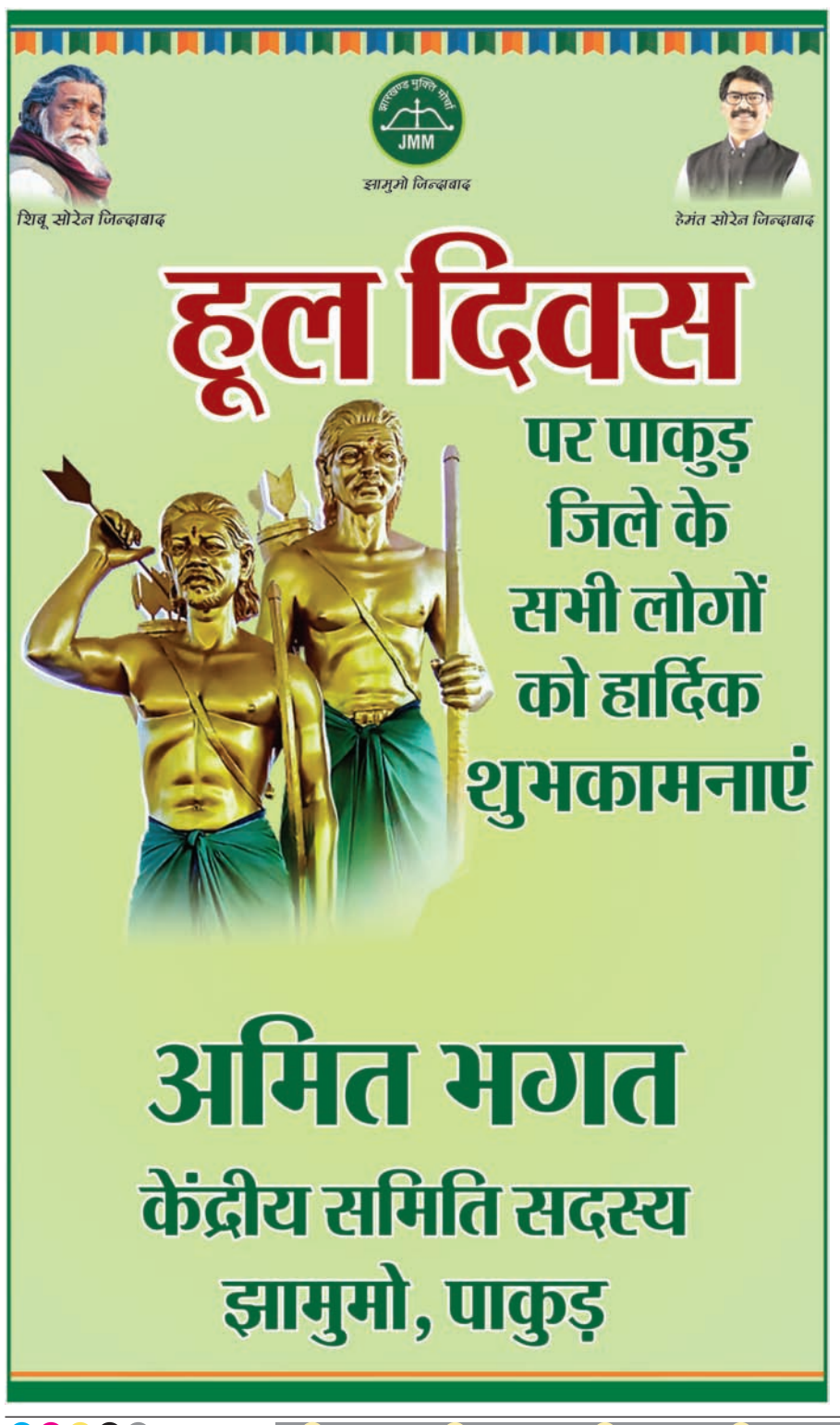

सीएम ने दिया निर्देश, कॉलेजों में जारी रहेगी इंटर की पढ़ाई

- स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग ने लिया निर्णय

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राज्य में 10वीं पास बच्चे कॉलेजों में भी इंटर की पढ़ाई कर सकेंगे। मुख्यमंत्री हेंमत सोरेन के निर्देश पर स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग ने यह निर्णय लिया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग ने राज्य के अंगीभूत एवं डिग्री संबद्ध महाविद्यालयों में सत्र 2023-25 में इंटरमीडिएट की पढ़ाई जारी रखने का निर्णय लिया है।

स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के सचिव की अध्यक्षता में झारखंड अधिविध परिषद के अध्यक्ष और सचिव की हुई बैठक में निर्देश दिया गया। यदि किसी जिला या क्षेत्र में माध्यमिक परीक्षा-2023 में उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को इंटरमीडिएट कक्षा में नामांकन लेने में कठिनाई हो तो पूर्व के वर्षों की भांति अंगीभूत एवं डिग्री संबद्ध महाविद्यालय में इंटरमीडिएट कक्षा में नामांकन ले सकते हैं। इस वर्ष जैक की मैट्रिक परीक्षा में चार लाख से ज्यादा परीक्षार्थी सफल रहे हैं। इन विद्यार्थियों को इंटरमीडिएट में नामांकन लेने में समस्या आ रही है। इसी वजह से स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग ने छात्र हित को ध्यान में रखते हुए अंगीभूत एवं डिग्री संबद्ध महाविद्यालयों में इंटरमीडिएट में विद्यार्थियों का नामांकन और पढ़ाई जारी रखने का फैसला किया है।

गौरतलब है कि राज्य में अंगीभूत एवं संबद्ध डिग्री महाविद्यालयों में इंटरमीडिएट शिक्षा को पृथक्क करने की प्रक्रियाधीन है। इसी वजह से इस वर्ष माध्यमिक परीक्षा में उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं उनके अभिभावकों और कतिपय संबद्ध डिग्री महाविद्यालय के बीच इंटरमीडिएट में नामांकन को लेकर भ्रम की स्थिति है। ऐसे में विद्यार्थियों को नामांकन के सिलसिले में परेशानी उठानी पड़ रही है। इसे देखते हुए सरकार ने अंगीभूत महाविद्यालयों एवं संबद्ध डिग्री महाविद्यालयों में इंटरमीडिएट में नामांकन सुनिश्चित करने का निर्देश दिया था।

आजाद सिपाही
188100 Subscribers
झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
VIEWERSHIP 3 Crore 80 lakh+
Watch Time (HR) 11 Lakh+
YouTube Channel
Subscribe NOW
No 1 Channel

सर्राफा
सोना (बिक्री) 55,200 रु./10 ग्राम
चांदी 71,000 रु./प्रति किलो

मिशन 2024 : एकजुट होने पर चार सौ सीटों पर हो सकता है सीधा मुकाबला

■ उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल, पंजाब और दिल्ली में उम्मीद लगभग खत्म

■ कांग्रेस 227 क्षेत्रों पर ध्यान लगायेगी, तो बाकी दल 173 पर करेंगे फोकस

■ दो प्रतिशत वोट शेयर के अंतर को पाटने के लिए यही रास्ता अपनायेगा विपक्ष

आजाद सिपाही विशेष

लोकसभा चुनाव में अब एक साल से भी कम का समय बच गया है। इसके साथ ही भाजपा और कांग्रेस के साथ बाकी विपक्षी दल भी एकदम चुनावी मोड में आ गये हैं। जिन मुद्दों को लेकर जनता के बीच जाना है, उन्हें फिलहाल टेस्टिंग मोड में रखा गया है। अभी राजनीतिक दलों के भीतर लोकसभा की 542 सीटों के परिणाम का गहन विश्लेषण किया जा रहा है। इस विश्लेषण और आंकड़ों के जाल के खेल में विपक्ष का दृष्टिकोण पटना बैठक के बाद साफ होने लगा है। विपक्षी दलों को उम्मीद है कि बेंगलुरु में अगले महीने होनेवाली बैठक में एक फॉर्मूले पर विचार किया जा सकता है और वह यह कि चार राज्यों, उत्तरप्रदेश (80 सीट), पश्चिम बंगाल (42 सीट), पंजाब (13 सीट) और दिल्ली (सात सीट) को छोड़ कर बाकी चार सौ सीटों पर संयुक्त उम्मीदवार खड़ा किया जाये, ताकि यहां भाजपा को सीधे मुकाबले के लिए मजबूर किया जा सके। इनमें से 227 सीटें ऐसी हैं, जहां कांग्रेस और भाजपा के बीच सीधा मुकाबला हो सकता है और बाकी 173 सीटों पर दूसरे दल अपनी किस्मत आजमायेंगे। इतना ही नहीं, संयुक्त विपक्ष पिछले लोकसभा चुनाव में वोट शेयर में महज दो प्रतिशत के उस अंतर को भी पाटने पर फोकस करेगा, जिसके कारण भाजपा को लगातार दूसरी बार सत्ता मिली थी। बेंगलुरू में होनेवाली बैठक इन चुनावी समीकरणों को लेकर इसीलिए इतनी महत्वपूर्ण बतायी जा रही है। आखिर क्या हो सकती है विपक्ष की रणनीति और उसका परिणाम, बता रहे हैं आजाद सिपाही के विशेष संवाददाता राकेश सिंह।

राकेश सिंह

विपक्षी दलों की पटना घोषणा के बाद बेंगलुरु समझौते की तैयारी है। कहा जा रहा है कि विपक्ष को जीत का फॉर्मूला मिल गया है। भाजपा के खिलाफ करीब चार सौ सीटों पर विपक्ष का एक ही उम्मीदवार होगा। इसकी घोषणा अगले महीने बेंगलुरु बैठक में हो सकती है। विपक्षी खेमे की रणनीति के अनुसार कुल मिला कर राज्यों की तीन श्रेणियां बनायी जा रही हैं। इन सबके बावजूद विपक्ष में राहुल गांधी को छोड़ कर कोई भी अन्य नेता आत्मविश्वास के साथ यह कहने की हालत में नहीं है कि 2024 में विपक्ष सत्ता में आ जायेगा। इसके पीछे तीन सवाल हैं। एक, भाजपा के खिलाफ चार सौ सीटों पर एक ही उम्मीदवार रहा, तो क्या मोदी की हार संभव है? दो, गठबंधन कागजों पर है या जमीन पर भी उतरा है? तीन, सबसे बड़ी पार्टी अगर भाजपा रही, तो विपक्ष कैसे सरकार बना पायेगा?

पहले बात करते हैं, वन टू वन की। पिछले लोकसभा चुनावों के आंकड़ों के संदर्भ में बात की जाये, तो विपक्ष की रणनीति बहुत प्रभावी तो लगती है, लेकिन निर्णायक नहीं। भाजपा ने 46 सीटों पर चार लाख से ज्यादा वोटों के अंतर से विजय हासिल की थी। उधर विपक्ष ने 23 सीटों पर चार लाख से ज्यादा वोट हासिल किये थे। इनमें से कुछ पर विपक्षी दल भाजपा के खिलाफ जीते थे, तो कुछ में कांग्रेस के खिलाफ, तो कुछ में विपक्ष बनाम विपक्ष के बीच मुकाबला रहा था। जाहिर है कि कुल मिला कर ऐसी 69 सीटों का गणित बहुत कुछ बदलने वाला नहीं है। भाजपा ने 105 सीटों पर तीन लाख के ज्यादा अंतर से जीत हासिल की थी। इनमें से आधे में उसका मुकाबला कांग्रेस से हुआ था। ऐसी सीटों की कुल संख्या 131 रही थी। भाजपा को 2014 में 31 फीसदी और 2019 में 37 फीसदी वोट मिले थे और 2024 में 39 फीसदी वोट मिलने का अनुमान लगाया गया है, तो संयुक्त विपक्ष इन सीटों में सेंधमारी तो जरूर कर सकता है, लेकिन तीन लाख वोटों की दीवार गिरा नहीं सकता।

विपक्ष की नजर ऐसे में उन सीटों पर होनी चाहिए, जहां भाजपा ने दो लाख के अंतर से सीटें जीती थीं। 2019 में ऐसी सीटों की संख्या कुल मिला कर 236 थी और इसमें से भाजपा ने 164 सीटें जीती थी। यहां भी दिलचस्प आंकड़ा है कि इनमें से भाजपा ने 55 सीटें कांग्रेस के खिलाफ जीती थीं। तो कहानी आकर अटकती है, ऐसी सीटों पर, जो भाजपा ने पिछली बार एक लाख के कम के अंतर से जीती थीं। ऐसी सीटों की संख्या कुल 77 थी। अगर विपक्ष पूरा जोर लगा दे, तो यहां भाजपा को पटखनी दी जा सकती है। अगर विपक्ष इन 77 में से 60 सीटें निकाल लेता है, तो भाजपा 302 से घटकर 242 पर आ जाती है। ये आंकड़े यह भी बताते हैं कि उत्तरप्रदेश में विपक्ष का एक होना कितना जरूरी है। भाजपा ने पिछली बार यूपी में 20 सीटें एक लाख के कम के अंतर से जीती थीं। यानी अगर अखिलेश, कांग्रेस, जयंत चौधरी एक हो जाते हैं, तो यूपी में भाजपा की 20 सीटें कम हो जाने की गुंजाइश निकलती है। आंकड़ों के हिसाब से यह आंकड़ेबाजी रोचक लग रही है। लेकिन भाजपा दो बार से चुने जा रहे सांसदों का नया सिरे से सर्वे करवा रही है। एंटी इनकमबेंसी दूर करने की कोशिश कर रही है।

दूसरा सवाल गठबंधन का है। विपक्ष का कहना है कि महाराष्ट्र, तमिलनाडु, बिहार और झारखंड में मजबूत गठबंधन बन चुका है। इन राज्यों की कुल 142 सीटें (पुडुचेरी मिला कर) हैं, जहां विपक्ष का स्ट्राइक रेट 80 फीसदी पार होना चाहिए, अगर उसे सत्ता में आते हुए दिखना है। उधर कहा जा रहा है कि हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और कर्नाटक में कांग्रेस को गठबंधन की जरूरत ही नहीं है, क्योंकि वहां उसे किसी अन्य विपक्षी दल का डर नहीं है। कुछ हद तक उसे गुजरात में आप का डर जरूर है। इन राज्यों में कुल 130 सीटें आती हैं, जहां भाजपा पिछली बार 122 सीटें जीती थी। यहां कांग्रेस को अकेले ही लड़ना है।

तीसरी श्रेणी उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल, दिल्ली और पंजाब जैसे राज्यों की है, जहां कुल सीटें 142 हैं। सारा पेंच यहीं आकर फंसा हुआ है। अखिलेश यादव, ममता बनर्जी और अरविंद केजरीवाल के पाले में गेंद है। दरअसल सारी कुर्बानी यहीं दिखायी जानी है और एकता नहीं हुई, तो सारा रायता भी यहीं फैलना है।

संयुक्त विपक्ष के मुकाबले का गणित

23 जून को पटना में हुई बैठक में 15 से ज्यादा दलों और 30 से ज्यादा राष्ट्रीय नेताओं ने हिस्सा लिया था। केंद्र सरकार के दिल्ली अध्यादेश को लेकर आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के बीच विवाद और मायावती की बहुजन समाज पार्टी, के चंद्रशेखर राव की भारत राष्ट्र समिति और वाइएस जगनमोहन रेड्डी की वाइएसआर कांग्रेस पार्टी जैसी पार्टियों की गैरमौजूदगी के बावजूद विपक्षी दल बेहद उत्साहित हैं। इन विपक्षी दलों को इस बात का इलहाम है कि सत्ताधारी दल से मुकाबले के लिए चुनाव पूर्व गठबंधन का यह पहला प्रयास नहीं है। इसलिए इस प्रयास से पहले चुनावी गणित के आधार पर समीकरण भी तैयार किया जाना जरूरी है। तो भाजपा से मुकाबले के लिए संयुक्त विपक्ष का गणित क्या है।

पटना बैठक में 15 राजनीतिक दलों के नेता शामिल हुए। इस समय भाजपा संसद के निचले सदन लोकसभा में, जिसमें कुल 543 सांसद हैं, प्रभावशाली स्थिति में है। सदन में बहुमत का आंकड़ा 272 है। 2019 के आम चुनाव के नतीजों के अनुसार भाजपा के पास अपने 303 सांसद हैं और उसके नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के 50 सांसद हैं। कांग्रेस के 52 सांसद हैं, जबकि यूपीए के कुल 91 सांसद हैं। पटना बैठक में मौजूद 15 दलों के कुल 136 सांसद लोकसभा में हैं। साल 2019 में नीतीश कुमार का जदयू और उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना दोनों एनडीए का हिस्सा थे। बिहार के मुख्यमंत्री अब विपक्षी गठबंधन की अगुवाई कर रहे हैं। 2022 में शिवसेना में एक बड़े बंटवारे के साथ ठाकरे के नेतृत्व वाला गुट विपक्षी मोर्चे का हिस्सा है, जबकि एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाले दूसरे गुट ने भाजपा से हाथ मिला लिया है। संसद के उच्च सदन राज्यसभा में कुल 245 सीटें हैं। इनमें अकेले भाजपा के पास 93 सीटें हैं, जबकि कांग्रेस के पास 31 सीटें हैं। भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए के पास कुल 110 सीटें हैं। विपक्षी दलों (जो पटना बैठक में शामिल हुए) के राज्यसभा में भेजे गये सांसदों की कुल गिनती भी 93 है।

वोट में हिस्सेदारी की तुलना

2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा का वोट शेयर 37.36 फीसदी था, जबकि सत्ताधारी एनडीए गठबंधन का वोट 45 फीसदी रहा। हालांकि समय के साथ कई दल गठबंधन से निकल गये, जिसके बाद, अब एनडीए का वोट शेयर 39.92 प्रतिशत हो गया है। 2019 के लोकसभा चुनाव के नतीजों के मुताबिक पटना में मौजूद 15 विपक्षी दलों का वोट शेयर 37.99 फीसदी है। दिलचस्प बात यह है कि विपक्ष भले ही 2014 की तुलना में 2019 में भाजपा के खिलाफ ज्यादा मजबूती से एकजुट हुआ था, भगवा पार्टी न केवल अपनी सीटें (282 से 303) बढ़ाने में कामयाब रही, बल्कि इसके वोट शेयर (2014 में 31 फीसदी के मुकाबले 2019 में 37.36 प्रतिशत) में भी उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई। विपक्ष इसी दो प्रतिशत के अंतर को पाटने और सीधे मुकाबले की चार सौ सीटों पर भाजपा को घेरने की रणनीति तैयार करने में जुटा हुआ है। बेंगलुरु में यदि इस बारे में कोई फैसला हुआ, तो फिर भाजपा की राह में चुनौती खड़ी हो सकती है।

साहिबगंज में उत्तरप्रदेश के मंत्री स्वतंत्रदेव सिंह बोले

क्षेत्रीय पार्टी का पनपना देश के लिए घातक

आजाद सिपाही संवाददाता

साहिबगंज। झारखंड दौरे पर आये उत्तरप्रदेश के मंत्री स्वतंत्रदेव सिंह गुरुवार को साहिबगंज में थे। पत्रकारों से बात करते हुए मंत्री ने कहा कि क्षेत्रीय पार्टी के आने से राज्य का विनाश होता है.। साथ ही क्षेत्रीय पार्टी राज्य में भ्रष्टाचार और वंशवाद को बढ़ावा देती है। कहा कि देश की 125 करोड़ जनता पीएम मोदी के साथ है। देश के अंदर देवतुल्य भाजपा कार्यकर्ता हैं। देवतुल्य कार्यकर्ता और जनता के दम पर ही केंद्र में 2024 में भी पूर्ण बहुमत का सरकार बनायेंगे।

मोदी सरकार के नौ वर्षों का कार्यकाल बेमिसाल

केंद्र सरकार के नौ वर्षों की जन कल्याणकारी योजनाओं के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि केंद्र की मोदी सरकार के नौ वर्षों का कार्यकाल सबसे बेमिसाल रहा है। नौ वर्षों में गरीबों और दलितों का कल्याण हुआ। राष्ट्र के प्रति अपनत्व की भावना जागृत हुई है। वहीं, विपक्ष पर हमला करते हुए कहा कि कांग्रेस के शासन में ट्रेन की सीट तक उजड़ जाती थी, लेकिन बीते नौ साल में देशवासी इसे राष्ट्र की संपत्ति मानते हैं। स्वच्छ भारत जन सामान्य का आंदोलन बन गया है। स्वच्छ भारत मिशन के तहत गांव के गरीब, किसान, महिलाओं के लिए शौचालय बनी, गंदगी दूर भागा, गांव स्वच्छ हुआ। 48 करोड़ लोगों को बैंक से जोड़ा गया, जिससे सरकारी योजनाओं का लाभ अब सीधा बैंक एकाउंट में लाभुक को शत-प्रतिशत आ रहा है।

आदिवासी और दलित वर्ग को मिला सम्मान

यूपी के कैबिनेट मंत्री ने कहा कि केंद्र की मोदी सरकार ने आदिवासी और दलित वर्ग को सम्मान देते हुए सर्वोच्च सीट पर बिठाने का कार्य किया। भगवान बिरसा मुंडा जयंती को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। वहीं, विदेशों में भारत का सम्मान केंद्र की मोदी सरकार ने बढ़ाया, जिसके कारण विदेशों में भारत की जयकार हो रही है। जाति और धर्म से ऊपर उठ कर केंद्र की मोदी सरकार ने नौ वर्षों में कार्य किया। पाकिस्तान के खिलाफ एयर स्ट्राइक ओर सर्जिकल स्ट्राइक की, जिससे नौ साल में एक भी आतंकी हमला देश में नही हुआ है। आतंकी और आतंकवादी को पनाह देने वाला औरआतंकियों को पैदा करने वाला देश भारत से कांप रहा है। जम्मू, कश्मीर, श्रीनगर अब तेजी से विकास की राह पर चल रहा है।

केंद्र सरकार की उपलब्धियां गिनायीं

मौके पर राजमहल विधायक अनंत ओझा, भाजपा जिलाध्यक्ष रामदरश यादव, भाजपा प्रवक्ता सरोज सिंह, लोकसभा संयोजक बबलू भगत, पूर्व विधायक ताला मरांडी,रामानंद साह, अनंत सिन्हा, कुशमाकर तिवारी, अनंत सिन्हा, धर्मेंद्र कुमार, मनोज यादव, विनोद चौधरी,अनंत सिंहा, सुनील यादव सहित अन्य भाजपा कार्यकर्ता मौजूद थे।

अंग्रेजी शासन के विरुद्ध आजादी का पहला बिगुल : हूल क्रांति

मृत्युंजय शर्मा

झारखंड के राजनीतिक किस्से जितने चर्चित हैं, उतना ही गौरवशाली और समृद्ध झारखंड का इतिहास भी रहा है। संघर्षों की धरती झारखंड ने बिरसा का उलगुलान देखा, कई जनजातीय विद्रोह देखा और आजादी के बाद अलग राज्य का आंदोलन भी देखा है। झारखंड के इतिहास में अमिट छाप छोड़ने वाली ऐसी ही एक घटना थी 'हूल क्रांति'। राजमहल की पहाड़ियों से घिरा वर्तमान संथाल परगना का आदिवासी बहुल यह क्षेत्र ब्रिटिश हुकूमत के दौरान बंगाल प्रेसीडेंसी का हिस्सा हुआ करता था। आदिवासी पर्यावरण के उपासक होते हैं एवं उनका जीवन आधुनिक चकाचौंध से दूर जल, जंगल और जमीन के इर्द-गिर्द ही व्यतीत होता है। ब्रिटिश शासन की शोषण नीति के खिलाफ आदिवासियों की व्यापक गोलबंदी हुई। कर्ज अदा नहीं करने पर पूरे परिवार को बंधुआ मजदूर बना लेते, मालगुजारी नहीं देने पर उनकी जमीन नीलाम कर दी जाती थी। 30 जून, 1855 को झारखंड के आदिवासियों ने अंग्रेजी हुकूमत के अत्याचार के खिलाफ पहली बार विद्रोह का बिगुल फूंका। इस दिन 400 गांवों के 50000 लोगों ने साहिबगंज जिला के भोगनाडीह गांव पहुंच कर अंग्रेजों से आमने-सामने की जंग का एलान कर दिया।

हूल क्रांति की शुरुआत भले ही 1855 में हुई हो, लेकिन इसकी पृष्ठभूमि तैयार हो चुकी थी, जब 1765 में मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय ने ईस्ट इंडिया कंपनी को बिहार, बंगाल और उड़ीसा में दीवानी वसूलने का जिम्मा सौंप दिया। वर्तमान में संथाल परगना के नाम से जाना जाने वाला यह क्षेत्र पहाड़ की तलहटी में रहने वाले पहाड़िया समुदाय बहुल था। यहां के लोग तब जंगल झाड़ियों को काट कर खेती योग्य बनाते और उसे अपनी जमीन समझते थे। ये लोग अपनी जमीन की मालगुजारी किसी को नहीं देते, जबकि ईस्ट इंडिया कंपनी के जमींदार उनसे जबरन लगान वसूली करते थे। इसके परिणामस्वरूप आदिवासियों ने इस तुगलकी फरमान के विरोध में सशस्त्र आंदोलन करने का फैसला किया। इस क्रांति के

नायक बने सिद्धो-कान्हू और चांद-भैरव, जिनके नेतृत्व में तब संथाल आदिवासियों ने मालगुजारी नहीं देने और अंग्रेज हमारी माटी छोड़ो का जोर-शोर से एलान किया। विरोध की इस आग से घबराकर ब्रिटिश सरकार ने हूल क्रांति को कुचलने का प्रयास किया। हजारों लोगों ने प्राण की आहुति दी, वहीं अंग्रेजों को बड़ी क्षति का सामना करना पड़ा।

यह पहला अवसर था जब अंग्रेजों को भारत में इतने जोरदार प्रतिरोध का सामना करना पड़ा हो, तब विद्रोहियों को सबक सिखाने के लिए अंग्रेजों ने क्रूरता की सारी हदें पार कर दीं। चांद और भैरव को अंग्रेजों ने मार डाला। इसके बाद सिद्धो और कान्हू को भोगनाडीह में ही पेड़ से लटकाकर 26 जुलाई 1855 को फांसी दे दी गयी। संथाल की माटी के इन्हीं शहीदों की याद में हर साल 30 जून को हूल दिवस मनाया जाता है।

एक अंग्रेज इतिहासकार हंटर ने लिखा है कि इस महान क्रांति में लगभग 20000 आदिवासियों को मौत के घाट उतार दिया गया। गया। आदिवासियों के इस अदम्य शौर्य, साहस और बलिदान ने अंग्रेजी हुकूमत को झकझोर कर रख दिया। लगभग छह महीने तक चला हूल क्रांति का भीषण संघर्ष जनवरी 1856 में थमा। कुछ समय बाद 1857 में देश में स्वाधीनता संग्राम की शुरुआत हो चुकी थी। जब हूल क्रांति समाप्त हुआ, तब इस इलाके को संथाल परगना का नाम दिया गया। जिसका मुख्यालय दुमका बनाया गया। हूल क्रांति के 44 साल बाद वर्ष 1900 मे मैक पेरहांस कमेटी ने आदिवासियों की जमीन की सुरक्षा के लिए एक बंदोबस्त अधिनियम बनाया। इसमें यह प्रावधान किया गया कि आदिवासी की जमीन, कोई दूसरा आदिवासी ही खरीद सकता है। खरीदने और बेचने वालों के घर एक ही इलाके में होना चाहिए। झारखंड में आदिवासी जमीन का हस्तांतरण आज भी इन शर्तों को पूरा करने के बाद करने का प्रावधान है। 1949 में पारित संथाल परगना काश्तकारी अधिनियम में 1900 के बंदोबस्ती नियम को जोड़ा गया है, जो आज भी पूरे झारखंड प्रदेश में प्रभावी है।

झारखंड की पावन धरती स्वतंत्रता संग्राम के कई ऐतिहासिक घटनाओं की साक्षी रही है। यहां के आदिवासियों ने जल, जंगल और जमीन की रक्षा के लिए ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियों का जमकर विरोध किया। हूल दिवस झारखंड के माटी पुत्र सिद्धो, कानू, चांद भैरव की वीरता, त्याग और बलिदान को नमन करने का अवसर है। आज की युवा पीढ़ी विशेषकर आदिवासी समुदाय के लोगों को सिद्धो-कान्हू और चांद-भैरव के दिखाए हुए रास्तों का अनुसरण करते हुए अपनी संस्कृति का संरक्षण करें, यही इन वीर सपूतों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

(लेखक, झारखंड भाजपा के चुनाव प्रबंधन प्रमुख हैं)

आजाद सिपाही
188100 Subscribers
झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
VIEWERSHIP 3 Crore 80 lakh+
Watch Time (HR) 11 Lakh+
YouTube Channel
Subscribe NOW
1 Channel

वेदर

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
रांची	34.4 ℃	23.2 ℃
सूर्यास्त (आज)	:	18.39 बजे
सूर्योदय (कल)	:	05.06 बजे

आजाद सिपाही
रांची, शुक्रवार, 30 जून, 2023
www.azadsipahi.in

भगवान जगन्नाथ प्रभु की घुरती रथ यात्रा निकाली गयी

समाजसेवियों ने खींची रस्सी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। गुरुवार को समाजसेवी भानू प्रताप सिंह, आलोक कुमार दुबे, काली प्रसाद सिंह, संजीत यादव, स्वामी विमलेश कुमार, संतोष कुमार, जगन्नाथ साहू, मेंहुल दुबे, रोहन कुमार भगवान जगन्नाथ प्रभु की घुरती रथ यात्रा महोत्सव में शामिल हुए। इस दौरान सभी ने विष्णु सहस्त्रनाम का एक हजार एक मंत्रोच्चार किया और भगवान की आरती की। इसके साथ ही सभी ने भगवान को भोग लगाया और भक्त जनों के बीच प्रसाद वितरित किया। आलोक कुमार दुबे और भानू प्रताप सिंह ने पूजा अर्चना के बाद जगन्नाथ स्वामी से राज्य में

खुशहाली,अमन, तरक्की और अच्छी बारिश की कामना की। पूजा-अर्चना के उपरांत फूलों के रथ पर विराजमान प्रभु जगन्नाथ, भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ मौसी घर से मंदिर के लिए रवाना हुए।

वहीं हजारों श्रद्धालुओं के साथ आलोक दुबे, भानू प्रताप सिंह, काली प्रसाद सिंह, भरत तिवारी, संजीत यादव ने रस्सी खींची और पुण्य अर्जित किया। मीडिया कर्मियों से बात करते हुए आलोक दुबे ने कहा कि घुरती रथ यात्रा का उत्सव धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि भगवान के रथ को खींचने से सभी दुःख, दर्द और कष्ट समाप्त होते हैं और सौ यज्ञ करने के समान पुण्य की प्राप्ति की मान्यता है।

वहीं भानू प्रताप सिंह ने कहा कि वह 25 वर्षों से भगवान जगन्नाथ के रथ की रस्सी खींचते आ रहे हैं। इसमें अलग तरह की अनुभूति होती है, आत्मविश्वास पनपता है। श्रद्धा, भक्ति, ज्ञान, समर्पण और अहंकार मुक्त रथ यात्रा के पावन पुण्य से सभी के जीवन में सुख, समृद्धि,यश, कीर्ति और आरोग्य स्थापित होने की प्रभु से कामना करता हूं।

जरियागढ़ में महाप्रभु की पूजा-अर्चना की गयी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। जरियागढ़ में पारंपरिक तरीके से धूमधाम के साथ महाप्रभु जगन्नाथ की घुरती रथ यात्रा सम्पन्न हुई। भगवान बलभद्र, माता शुभद्रा और जगन्नाथ महाप्रभु मौसीबाड़ी से जरियागढ़ स्थित गढ़ आये। जरियागढ़ के वर्तमान ठाकुर जयेंद्र नाथ शाहदेव के साथ-साथ लाल शुभेंद्र नाथ शाह देव, कुमार नरेन्द्र नाथ शाहदेव, कुमार यशराज नाथ

शाहदेव और राजपरिवार के अन्य सदस्य एवं पुरोहित बसंत सारंगी, पुजारी रवि मिश्रा, शिशिर झा एवं ग्रामवासियों ने भक्ति भाव से महाप्रभु की पूजा अर्चना की। गढ़ में पूजा होने के पश्चात वापस भगवान के विग्रह को जयकारा लगाते हुए ठाकुर जयेंद्र नाथ शाहदेव के अगुवाई में भाव बिभोर ग्रामवासी, पंडित, पुरोहित एवं राजपरिवार के सदस्य महाप्रभु को मदन मोहन गुड़ी ले गये।

झारखंड पुलिस के पांच डीएसपी समेत 15 पदाधिकारी ट्रेनिंग में फेल

रांची (आजाद सिपाही)। झारखंड पुलिस अकादमी हजारीबाग में सीधी नियुक्ति से नियुक्त हुए डीएसपी, जिला कमांडेंट होमगार्ड, प्रोबेशन पदाधिकारी और कारा अधीक्षक का 16 जनवरी से 30 जनवरी तक प्रशिक्षण आयोजित कराया गया था। इसमें कुल 71 प्रशिक्षु पदाधिकारी शामिल हुए थे, जिनमें से 56 पदाधिकारी ट्रेनिंग में पास हुए, जबकि 15 पदाधिकारी इस प्रशिक्षण में फेल हो गये। इनमें पांच डीएसपी भी शामिल हैं।

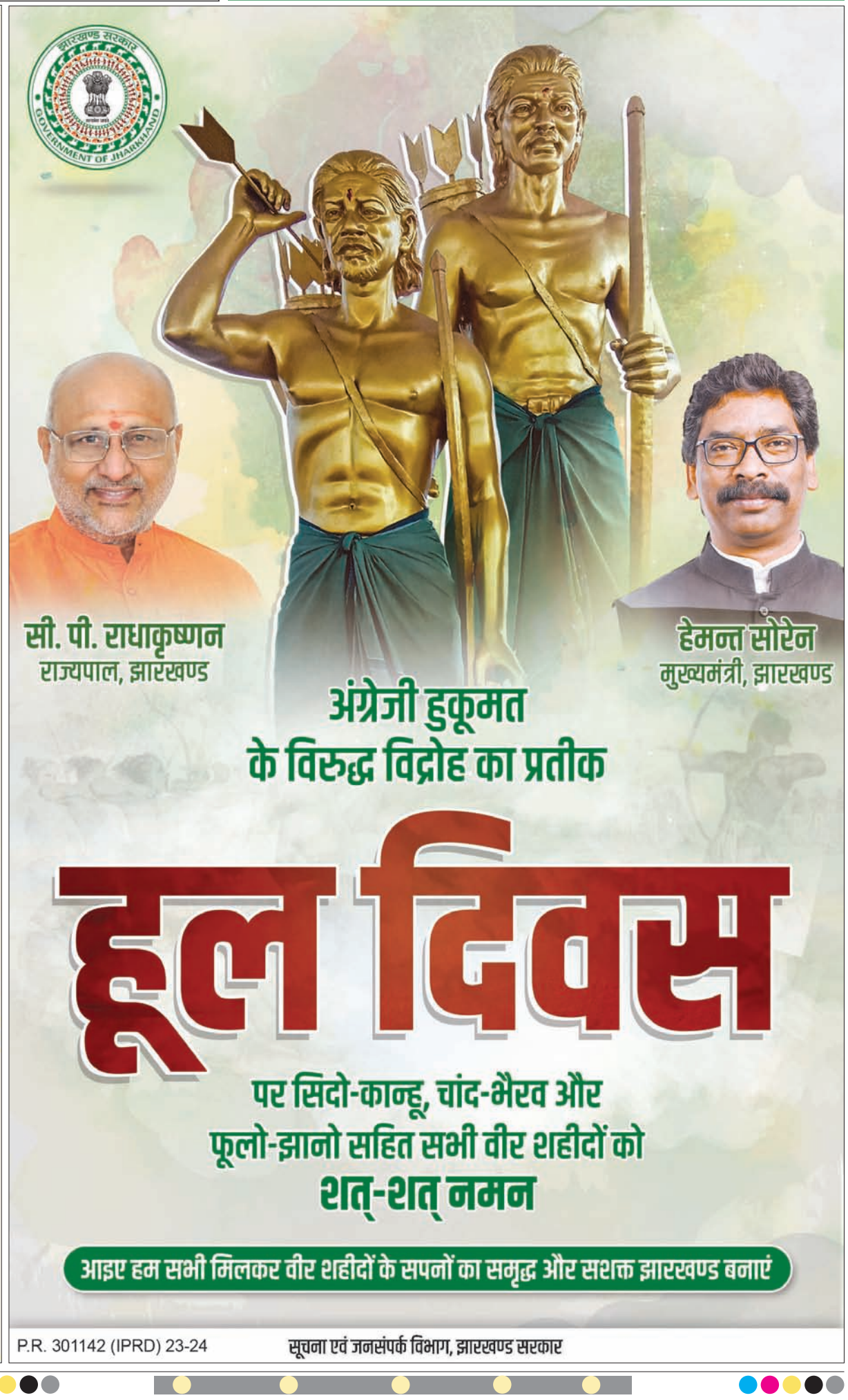

आजाद सिपाही
188100 Subscribers
झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
VIEWERSHIP 3 Crore 80 lakh+
Watch Time (HR) 11 Lakh+
YouTube Channel
Subscribe NOW
No 1 Channel

आजाद सिपाही
रांची, शुक्रवार, 30 जून, 2023
www.azadsipahi.in
04

राशिफल

डॉ एनके बेरा | 9431114351

मेष रोजगार-व्यापार में शुभ परिवर्तन। आर्थिक लाभ। मित्र का सहयोग। जमीन-जायदाद संबंधी कार्य सफल।

वृष पारिवारिक सुख-साधनों में वृद्धि। सामाजिक-राजनीतिक संपर्क-प्रभाव का लाभ।

मिथुन हर क्षेत्र सफलता प्राप्त करेंगे। बृहद योजना को साकार करने में कई लोगों का साथ मिलेगा।

कर्क सफलता की ओर अग्रसर रहेंगे। आर्थिक संतुलन बनाये रखेंगे। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी।

सिंह आमदनी में वृद्धि होगी। नया परिचय का क्षेत्र बढ़ेगा। घर-गृहस्थी में सुख-शांति का वातावरण।

कन्या कर्मक्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य करने का अवसर मिलेगा। आपके धैर्य से परिवार में महत्वपूर्ण कार्य पूरा होगा।

तुला रोग-शोक-दुःश्चिंताओं से छुटकारा। जमीन-जायदाद संबंधी विवादों का समाधान मिलेगा।

वृश्चिक अधूरा कार्य पूरा होगा। धन लाभ। मान-यश-प्रतिष्ठा-उपहार-पुरस्कार की प्राप्ति।

धनु षड्यंत्र विफल होगा। माता-पिता का सहयोग। वांछित सहयोग मिलेगा। मन प्रसन्न रहेगा।

मकर भौतिक सुख-सुविधा की प्राप्ति। पारिवारिक वातावरण सुखमय होगा। मनोकामनाएं पूरी होंगी।

कुंभ बिगड़ा काम बनेगा। व्यवसाय में लाभ। सपरिवार भ्रमण-मनोरंजन के साधन बनेंगे।

मीन नयी आशाओं का उदय। धैर्य व साहस से सभी कार्य पूरे होंगे। दांपत्य जीवन सुखद रहेगा।

अकीदत के साथ मनायी गयी बकरीद

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। ईद-उल-अजहा (बकरीद) पर गुरुवार की सुबह रांची और आसपास के क्षेत्रों की विभिन्न मस्जिदों और ईदगाहों में बकरीद की नमाज अदा की गयी। इसके बाद लोगों ने एक-दूसरे के गले मिल कर बकरीद की मुबारकबाद दी। कुछ जगहों पर मस्जिद के बाहर भी नमाज अदा की गयी। इस दौरान रांची पुलिस भी बेहद सतर्क रही। संवेदनशील स्थानों पर सुबह पांच बजे से ही पुलिस बल मुस्तैद थे।

रांची में ईद उल अजहा को लेकर काफी उत्साह देखने को मिला। हालांकि, तीन दिनों से हो रही लगातार बारिश की वजह से थोड़ी खलल जरूर पड़ी। बारिश की वजह से ही रांची के हरमू रोड ईदगाह में कई वर्षों के बाद नमाज

अदा नहीं की गयी। अंजुमन इस्लामिया ने यह तय किया कि ईदगाह में इस बार नमाज अदा नहीं की जायेगी। भारी बारिश की वजह से यह फैसला लिया गया। रांची के मेन रोड, डोरंडा, हिंदपीढ़ी, बरियातू, कांके, पिठोरिया, अरगोड़ा सहित तमाम मस्जिदों में हल्की बूंदाबांदी के बीच ईद उल अजहा की नमाज अदा की गयी।

पुलिस अलर्ट, सभी थाना प्रभारी रहे मौजूद : बकरीद को देखते हुए राजधानी के सभी संवेदनशील इलाकों में पुलिस बल के साथ ड्रोन की टीम को भी तैनात किया गया था। सभी थाना प्रभारी नमाज के वक्त अपने अपने इलाकों में भ्रमणशील रहे। रांची में दो हजार पुलिस बलों की तैनाती की गयी थी। खासकर वैसे ही इलाके जहां बकरीद के समय पूर्व में सामाजिक सौहार्द्र बिगड़ा था, वहां विशेष निगरानी रखी जा रही थी।

राज्यपाल ने ईद-उल-अजहा की दी मुबारकबाद : राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने ईद-उल-अजहा के अवसर पर राज्य वासियों को दिली मुबारकबाद दी है। राज्यपाल ने गुरुवार को कहा कि त्याग और बलिदान का प्रतीक यह त्योहार सभी को मानवता की सेवा के लिए प्रेरित करता है। उन्होंने कहा कि इस अवसर पर हम सभी समाज में आपसी सद्भाव, एकता और भाईचारे की भावना को और सुदृढ़ करने का संकल्प लें। उन्होंने सबकी तरक्की और खुशहाली की दुआ की।

धनबाद में कर्मवीर सिंह ने वैज्ञानिकों से की मुलाकात

रांची/ धनबाद (आजाद सिपाही)। भाजपा के महा जनसंपर्क अभियान के तहत गुरुवार को भाजपा प्रदेश संगठन महामंत्री कर्मवीर सिंह ने धनबाद में वैज्ञानिकों से मुलाकात की। उन्होंने केंद्रीय खनन एवं ईंधन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक समूह से भारत सरकार की योजनाओं संबंधित चर्चा की।

झारखंड कैडर के अजय भटनागर बने सीबीआइ के विशेष निदेशक

बालासोर रेल हादसे की जांच कर रहे अफसर का कार्यकाल बढ़ा

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड कैडर के आइपीएस अधिकारी अजय भटनागर को केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआंइ) का विशेष निदेशक बना दिया गया है। वहीं, ओड़िशा के बालासोर जिले में हुए भीषण रेल हादसे की जांच की निगरानी कर रहे सीबीआइ अधिकारी विप्लव कुमार चौधरी का कार्यकाल बढ़ा दिया गया है। सीबीआइ के ज्वाइंट डायरेक्टर के रूप में उनको डेढ़ साल का सेवा विस्तार मिला है।

1989 बैच के आइपीएस अफसर हैं अजय भटनागर : झारखंड कैडर के 1989 बैच के सीनियर आइपीएस अजय भटनागर को सीबीआइ का विशेष निदेशक बनाने संबंधी आदेश जारी कर दिया गया है। इससे पहले वह सीबीआइ में अतिरिक्त निदेशक थे। श्री भटनागर 20 नवंबर 2024 तक पद पर बने रहेंगे।

झारखंड पुलिस में अहम पदों पर किया है काम : सीनियर आइपीएस ऑफिसर अजय भटनागर झारखंड पुलिस में महत्वपूर्ण पदों पर काम कर चुके हैं। झारखंड में वह पुलिस मुख्यालय में एडीजी (मुख्यालय), सीआइडी के एडीजी, स्पेशल ब्रांच के डीआइजी रह चुके हैं। हजारीबाग के वह एसपी भी रह चुके हैं। अजय भटनागर सीआइएसएफ से सीआरपीएफ और एनपीए तक में सेवा दे चुके हैं।

संयुक्त निदेशक पंकज कुमार श्रीवास्तव का कार्यकाल बढ़ा : सीबीआइ के एक अन्य संयुक्त निदेशक पंकज कुमार श्रीवास्तव का कार्यकाल भी 24 नवंबर 2023 तक बढ़ा दिया गया। मध्यप्रदेश कैडर के 1992 बैच के आइपीएस अधिकारी श्रीवास्तव वर्तमान में एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम कर रहे हैं। आदेश में कहा गया है कि मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति ने श्रीवास्तव के कार्यकाल को 9 फरवरी, 2023 से 24 नवंबर, 2023 तक बढ़ाने को मंजूरी दे दी है।

बंधु तिर्की और सीबीआइ को लोअर कोर्ट रिकॉर्ड उपलब्ध कराने का निर्देश

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड हाइकोर्ट के जस्टिस नवनीत कुमार की कोर्ट ने गुरुवार को आय से अधिक संपत्ति मामले में सजायाफ्ता पूर्व मंत्री बंधु तिर्की और सीबीआइ को लोअर कोर्ट रिकॉर्ड (एलसीआर) उपलब्ध कराने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने मामले में बहस के लिए 3 अगस्त की तिथि निर्धारित की है।

सीबीआइ की विशेष अदालत ने छह लाख 28 हजार आय से अधिक रुपये अर्जित करने के मामले में बंधु तिर्की को सजा सुनायी थी, जिसके खिलाफ दायर क्रिमिनल अपील की गुरुवार को सुनवाई हुई। मामले में लोअर कोर्ट रिकॉर्ड (एलसीआर) की फोटो कॉपी की प्रति पूर्व मंत्री और सीबीआइ को उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया है, क्योंकि इससे पहले सीबीआइ की ओर से समय की मांग की गयी थी। याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता निलेश कुमार ने और सीबीआइ की ओर से अधिवक्ता अनिल कुमार ने पैरवी की। सीबीआइ ने बंधु तिर्की के खिलाफ पूर्व मुख्यमंत्री मधु कोड़ा कांड में 11 अगस्त, 2010 को आय से अधिक संपत्ति अर्जित करने के मामले में आरसी 5/2010 दर्ज की थी। 16 जनवरी, 2019 को आरोप तय किये गये थे। सीबीआइ के विशेष न्यायाधीश पीके शर्मा की कोर्ट ने 28 मार्च, 2022 को बंधु तिर्की को दोषी करार देते हुए तीन साल की सजा सुनायी थी।

महत्वपूर्ण न्यूज

बड़ा हादसा टला, राजधानी एक्सप्रेस के इंजन का करेंट वायर टूट कर गिरा

रांची (आजाद सिपाही)। रांची-लोहरदगा लाइन के टांगर बसली स्टेशन के समीप राजधानी एक्सप्रेस ट्रेन के इंजन का लाइन करेंट वायर अलग होकर गिर गया, जिसकी वजह से बीच रास्ते में करीब एक घंटे तक ट्रेन खड़ी रही। इंजन में खराबी आने से यात्रियों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। ट्रेन अपने निर्धारित समय से एक घंटे की देरी 10.15 में रांची रेलवे स्टेशन पहुंची। रेलवे के अधिकारियों ने बताया कि आंधी-तूफान और अत्याधिक बारिश के कारण इंजन से लाइन करेंट वायर अलग हो गया था। हालांकि सूचना मिलने के बाद इसे ठीक करा लिया गया है। बता दें कि यह ट्रेन दिल्ली से रांची आ रही थी।

दो आइपीएस को अतिरिक्त पद का प्रभार

रांची (आजाद सिपाही)। झारखंड के दो आइपीएस को अतिरिक्त पद का प्रभार दिया गया है। इससे संबंधित अधिसूचना सरकार ने जारी की है। जारी अधिसूचना के मुताबिक, जैप डीआइजी के पद पर पदस्थापित सुनील भास्कर डीआइजी गृह रक्षा वाहिनी और अग्निशमन सेवा के अतिरिक्त प्रभार में रहेंगे। वहीं जैप 1 कमांडेंट के पद पर पदस्थापित वाइएस रमेश को कमांडेंट गृह रक्षा वाहिनी और अग्निशमन सेवा का अतिरिक्त प्रभार दिया गया है।

एमएलए समरी की पत्नी की शिकायत पर एसटी-एससी आयोग ने लिया संज्ञान

रांची (आजाद सिपाही)। बीजेपी के कांके विधायक समरी लाल की पत्नी अनीता देवी द्वारा कांके थाना प्रभारी को लेकर की गयी शिकायत पर राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग ने संज्ञान लिया है। इस मामले में आयोग ने रांची के डीसी और एसएसपी को नोटिस जारी किया है। आयोग ने दोनों अधिकारियों से इस मामले में की गयी कार्रवाई की रिपोर्ट प्रस्तुत करने का निर्देश दिया है। बता दें कि विधायक समरी लाल की पत्नी अनीता देवी ने कांके थाना प्रभारी आभास कुमार पर दुर्भावना और द्वेषपूर्ण भावना से ग्रसित होकर जाति सूचक शब्दों का प्रयोग कर सार्वजनिक रूप से उन्हें अपमानित करने का आरोप लगाया है। अनीता देवी ने इस पूरे मामले की जानकारी देते हुए राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग में लिखित शिकायत दर्ज करवायी थी।

रांची विश्वविद्यालय के नये क्रिकेट कोच को किया गया सम्मानित

रांची (आजाद सिपाही)। रांची विश्व विद्यालय के नये क्रिकेट कोच के रूप में नियुक्त होने पर चंचल भट्टाचार्य को गुरुवार को सम्मानित किया गया। सामाजिक संस्था विवेकानंद यूथ क्वेक फाउंडेशन और रिलेशंस ने संयुक्त रूप से अंगवस्त्र और उपहार देकर उन्हें सम्मानित किया। उल्लेखनीय है कि 12 सालो के बाद रांची विश्वविद्यालय को क्रिकेट कोच मिला है। चंचल भट्टाचार्य भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धौनी के मेंटर रह चुके हैं। इस अवसर पर मुख्य रूप से विवेकानंद यूथ क्वेक फाउंडेशन के अध्यक्ष गौरव अग्रवाल, रिलेशंस के निदेशक आशुतोष द्विवेदी, यशवंत वर्मा आदि उपस्थित थे।

नाबार्ड के आम महोत्सव का समापन

रांची (आजाद सिपाही)। नाबार्ड द्वारा झारखंड राज्य सहकारी बैंक, शहीद चौक, रांची के परिसर मे आयोजित आम महोत्सव का आज समापन हो गया। महोत्सव में झारखंड के 10 जिलों के आदिवासी किसानों द्वारा उनके बागान में उत्पादित आम की किस्में जैसे मालदा, आम्रपाली, मल्लिका, दशहरी और हिमसागरका विक्रय किया गया। यह कार्बाइड फ्री और बेहद स्वादिष्ट थे। आम के साथ किसानों द्वारा उत्पादित मोटे अनाज और अन्य कृषि उत्पाद जैसे सब्जियां, अचार, घी, सरसों का तेल आदि भी बिक्री किया गया। इस तीन-दिवसीय आम महोत्सव में किसानों द्वारा लगभग 115 क्विंटल आम की बिक्री की गई, जिसका कुल मूल्य लगभग रु 8 लाख है। नाबार्ड इस महोत्सव को सफल बनाने हेतु सभी ग्राहकों, मीडिया बंधुओं एवं अन्य हितधारकों का धन्यवाद करता है।

कई लोग झामुमो में हुए शामिल

रांची (आजाद सिपाही)। रांची के हरमू रोड स्थित झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के केंद्रीय कार्यालय (कैम्प) में कई लोगों ने गुरुवार को पार्टी का दामन थामा। पार्टी के दामन थामने वालों में लोहरदगा जिला की जिला परिषद सदस्य राधा तिर्की के नेतृत्व में धनबाज उरांव (मुखिया), पूनम उरांव (पंचायत समिति सदस्य), सुमंती उरांव (वार्ड सदस्य) सहित कई महिला और पुरुष पार्टी में शामिल हुए। सभी ने पार्टी के नीती-सिद्धान्तों पर आस्था और पार्टी के अध्यक्ष दिशोम गुरू शिबू सोरेन और कार्यकारी अध्यक्ष सह मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के नेतृत्व पर विश्वास व्यक्त करते हुए पार्टी के वरिष्ठ नेता विनोद कुमार पांडेय के समक्ष पार्टी में शामिल हुए।

जेएसएससी पीजीटी अर्थशास्त्र के 47 अभ्यर्थी सफल

रांची (आजाद सिपाही)। जेएसएससी (पीजीटी) संयुक्त स्नातक प्रशिक्षित शिक्षक प्रतियोगिता परीक्षा-2016 के तहत अर्थशास्त्र के 47 अभ्यर्थी सफल हुए हैं। बता दें सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद राज्य मेधा सूची जारी करते हुए इन अभ्यर्थियों की नियुक्ति हुई है। आयोग ने पहले ही कई विषयों में शिक्षकों की नियुक्ति के लिए अभ्यर्थियों से विकल्प मंगा लिए हैं। गौरतलब है कि इससे पहले भी कई विषयों के सफल अभ्यर्थियों से जिले का विकल्प मांगा गया था। जिसमें आयोग ने कहा था कि इससे संबंधित सूचना आयोग के वेबसाइट पर जारी किया जायेगा। बताते चलें कि चयनित अभ्यर्थियों 47 अभ्यर्थियों में सामान्य वर्ग के 44 उम्मीदवार, अति पिछड़ा वर्ग के एक और पिछड़ा वर्ग के 2 अभ्यर्थी हैं। हालांकि जेएसएससी का कहना है कि यह अंतिम रिजल्ट नहीं है। अंतिम रिजल्ट के बाद कट ऑफ मार्क्स जारी होगा।

हजारीबाग के कुद में टाइटेनियम महिंद्रा का नया शोरूम खुला

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। हजारीबाग के कुद में हजारीबाग रेलवे स्टेशन के निकट टाइटेनियम महिंद्रा का नया शोरूम और वर्कशॉप का विधिवत पूजा के साथ शुभारंभ हुआ। पूजा के उपरांत सभी ग्राहकों के लिए (सेल्स और सर्विस) शोरूम और वर्कशॉप खुल गया है। हजारीबाग के कुद और आसपास के ग्रामीण इलाकों के लिए यह महिंद्रा का काफी उपयोगी शोरूम और वर्कशॉप है। टाइटेनियम महिंद्रा में महिंद्रा के ट्रेओ, यारी, ई-अल्फा, ई-अल्फा कार्गो, आदि सभी मॉडल और वेरिएंट उपलब्ध है। इसके साथ-साथ इनकी बुकिंग शुरू हो गयी है। महिंद्रा ट्रेओ यारी एक इलेक्ट्रिक रिक्शा तीन पैसेंजर की सीटिंग कैपेसिटी के साथ आता है। इसकी बैटरी फुल चार्ज होने में 3.5 घंटे का समय लेती है और फुल चार्ज में इसकी ड्राइविंग रेंज 85 किलोमीटर है। इसकी शुरुआती कीमत 2.16 लाख से है। ई- अल्फा भी एक इलेक्ट्रिक रिक्शा तीन पैसेंजर की आरामदायक सीटिंग कैपेसिटी के साथ आता है। इसकी शुरुआती कीमत 1.75 लाख से है। सभी गाड़ियों में विशेष एक्सेंज ऑफर और विशेष डिस्काउंट भी उपलब्ध है। शोरूम में फाइनेंस की सुविधा भी उपलब्ध है।

प्रधानमंत्री सौभाग्य योजना के अंतर्गत देश के हर कोने में आज विद्युत संरचना मौजूद : संजय सेठ

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। आजादी के अमृत महोत्सव को मनाते हुए गुरुवार को आइएमए भवन में आयोजित बिजली उत्सव के मंच से रांची के लोकसभा सांसद संजय सेठ ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में शुरू की गयी जनकल्याणकारी योजनाओं की उपलब्धि को बताया। प्रधानमंत्री सहज बिजली योजना के अंतर्गत देश के हर कोने तक विद्युत संरचना को स्थापित करने की उपलब्धि को ऐतिहासिक बताते हुए सांसद ने कहा कि दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना के अंतर्गत आज भारत के हर कोने तक बिजली पहुंच गयी है। इस योजना को महज 6 सालों में क्रियान्वित किया गया है, जो कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जैसे कुशल राजनेता के दिशा निर्देश में ही संभव था। साल 2015 से 2021 तक चली इस योजना के अंतर्गत न सिर्फ भारत के हर टोले तक बिजली पहुंचाने का काम केंद्र सरकार ने किया, बल्कि गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले नागरिकों

को निशुल्क बिजली का कनेक्शन दिया। बिजली जैसी मूलभूत सुविधा को जनता से दूर रखकर पूर्व की कांग्रेस सरकार ने जनता को ठगने और पीछे धकेलने का काम किया है।

उन्होंने कहा कि सौभाग्य योजना से 11 लाख 41 हजार लोग अब तक लाभान्वित हो चुके हैं और इस परियोजना को सफलतापूर्वक करने के लिए केंद्र सरकार ने 472 करोड़ रुपए लगाए हैं, प्रधानमंत्री सहज बिजली योजना के अंतर्गत अब तक 25,000 गाँव तक बिजली पहुंचाई जा चुकी है जिसकी लागत लगभग 5,500 करोड़ रुपये हैं. इस योजना के अंतर्गत अब तक गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले 2 लाख 48 हजार परिवार लाभान्वित हो चुके हैं और उन्हें निशुल्क बिजली का कनेक्शन दिया जा चुका है, सांसद संजय सेठ ने जानकारी दी। झारखंड में कुल 25 केवीए के 55,000 नए ट्रांसफार्मर लगे हैं, इन्हें लगवाने के लिए केंद्र सरकार ने 3,500 करोड़ का अनुदान दिया है। इस मौके पर उन्होंने रांची जिला में लगे 1369 नए ट्रांसफॉर्मरों को केंद्र सरकार की रांचीवासियों के लिए सौगात बताया, इन ट्रांसफॉर्मरों को बनाने में कुल 430 करोड़ की लागत आयी, जिसका 60 प्रतिशत केंद्र सरकार ने दिया। इससे गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले कुल 26,382 परिवार लाभान्वित हुए और उनके जीवन में रौशनी आयी। केंद्र सरकार की भविष्यवादी योजना के बारे में बताते हुए लोकसभा सांसद न कहा कि,भारत आज ना सिर्फ बिजली का उत्पादन कर रहा है बल्कि अपने तकनीक में सुधार कर रहा है। आज भारत विद्युत उत्पादन में 3200 करोड़ रुपये बचा रहा है। भविष्य में भारत विश्व में ऊर्जा का बड़ा निर्यातक बनने जा रहा है।

गिरिडीह के बर्खास्त मेयर के जाति प्रमाण पत्र मामले की हाइकोर्ट में सुनवाई छह को

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड हाइकोर्ट में गुरुवार को गिरिडीह के बर्खास्त मेयर सुनील कुमार पासवान की ओर से उनके जाति प्रमाण पत्र को गलत बताते हुए रद्द करने के आदेश के खिलाफ दायर अपील याचिका पर सुनवाई हुई। याचिकाकर्ता ने फिजिकल कोर्ट में सुनवाई करने का आग्रह करते हुए कोर्ट से समय की मांग की। कोर्ट ने विस्तृत सुनवाई के लिए 6 जुलाई की तिथि निर्धारित की।

पिछली सुनवाई में मामले में याचिकाकर्ता और राज्य सरकार ने सुप्रीम कोर्ट के कई जजमेंट को कोर्ट के समक्ष प्रस्तुत किया था। इसकी सुनवाई हाइकोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्र की अध्यक्षता वाली खंडपीठ में वर्चुअल रूप से हुई थी। याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता विनोद सिंह ने बहस की। एकल पीठ ने इस संबंध में याचिकाकर्ता सुनील कुमार पासवान की रिट याचिका को खारिज कर दिया था, जिसके पास बाद उनकी ओर से खंडपीठ में अपील दायर की गयी है। अनुसूचित जाति के फर्जी प्रमाण पत्र पर चुनाव लड़ने का आरोप सही पाये जाने के बाद सुनील पासवान को मेयर पद के अयोग्य घोषित किया गया था।

उल्लेखनीय है कि अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित गिरिडीह नगर निगम के मेयर पद पर सुनील कुमार पासवान का चयन वर्ष 2018 में हुआ था। उनके खिलाफ झामुमो कार्यकर्ता ने उनके जाति प्रमाण पत्र को संदिग्ध बताते हुए जांच की मांग की थी।

राज्य के उत्कृष्ट विद्यालयों में प्रवेशोत्सव 1 जुलाई को

निदेशक ने जिला शिक्षा पदाधिकारियों को लिखा पत्र

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राज्य के 80 उत्कृष्ट स्कूलों में 1 जुलाई को फ्रेशर्स डे का आयोजन होगा। इसके लिए झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद की निदेशक किरण कुमारी पासी ने सभी जिला शिक्षा पदाधिकारी सह जिला कार्यक्रम पदाधिकारी को पत्र लिखा है। पत्र के जरिये उन्होंने कार्यक्रम के बारे में विस्तार से जानकारी दी है। निदेशक ने कहा है कि राज्य के 80 उत्कृष्ट विद्यालय में नामांकन की प्रक्रिया शुरू है। इसे 30 जून तक पूर्ण कर लेना है। नामांकन की प्रक्रिया खत्म होने के साथ ही सत्र 2023-24 के लिए पठन पाठन का कार्य विधिवत रूप से प्रारंभ कर दिया जायेगा। सभी उत्कृष्ट विद्यालयों में बच्चे पहली बार पठन-पाठन के लिए आयेंगे। ऐसे में आवश्यक है कि उनके प्रवेश को हर्षोल्लास के साथ उत्सव के रूप में मनाया जाये। नये नामांकित बच्चों का स्वागत किया जाये। इसलिए 1 जुलाई को सभी उत्कृष्ट विद्यालयों में प्रवेशोत्सव समारोह का आयोजन किया जाएये।

प्रवेशोत्सव समारोह की सूचना सभी विद्यार्थियों को दी जाये। साथ ही इसमें अभिभावकों को भी शामिल किया जाये। निदेशक ने कहा है कि सभी उत्कृष्ट विद्यालयों में प्रवेशोत्सव समारोह का आयोजन करने के लिए अपने स्तर से सभी विद्यालयों को निर्देशित करेंगे। समारोह के आयोजन के बाद इसका प्रतिवेदन राज्य कार्यालय को भी उपलब्ध कराना सुनिश्चित करेंगे।

ये गतिविधियां होंगी

प्रवेशोत्सव के लिए विद्यालय में एक समारोह आयोजित किया जाये, जिसमें विद्यालय के सभी बच्चों, शिक्षक और प्रधानाध्यापक और विद्यालय की प्रबंध समिति के सदस्य भी उपस्थित रहें।

नव प्रवेश करनेवाले छात्र-छात्राओं का विद्यालय परिसर में बाल संसद के सदस्यों द्वारा तिलक और पुष्प के साथ स्वागत किया जाये।

विद्यालय में प्रवेशोत्सव का कार्यक्रम विद्यालय में आयोजित प्रार्थना सभा को विस्तारित करते हुए किया जा सकता है। नये नामांकित बच्चों के स्वागत में गीत एवं अन्य सास्कृतिक कार्यक्रम विद्यालय में पूर्व से अध्ययनरत बच्चों द्वारा प्रस्तुत किए जा सकते हैं। विद्यालय के प्राचार्य के द्वारा नवनामांकित छात्र-छात्राओं और उनके अभिभावकों का उत्कृष्ट विद्यालय परिवार से जुड़ने और बच्चों को उज्ज्वल भविष्य के लिए संकल्पित होने के लिए विद्यालय परिवार की ओर से स्वागत किया जायेगा।

विद्यालय के प्रधान शिक्षक उत्कृष्ट विद्यालय के स्वरूप और अवधारण के बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे।विद्यालय में बच्चों के पठन-पाठन के लिए उपलब्ध करायी जाने वाली सुविधा के संबंध में जानकारी प्रदान करते हुए सभी अभिभावकों से बच्चों की शिक्षा के लिए उनकी भूमिका पर भी चर्चा करेंगे। विद्यालय के शिक्षकों से भी परिचय कराया जायेगा।

रामगढ़ जिले की चार दुकानों में बेचा जा रहा था कैस्ट्रॉल कंपनी का नकली तेल

छापामारी में 49 डिब्बा नकली ऑयल जब्त

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। कैस्ट्रोल कंपनी के पावर ऑफ अटॉर्नी होल्डर जमशेदपुर निवासी सूरज सोनी पिता ब्रजकिशोर प्रसाद ने कैस्ट्रोल कंपनी के डुप्लीकेट ऑयल बेचने के आरोप में रामगढ़ थाना में 4 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कराया है। इस मामले में थाना पुलिस ने कांड संख्या 161/23 धारा 420 आइपीसी 63/65 के तहत मामला दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है। मामले में थाना प्रभारी सह इंस्पेक्टर ने बताया कि कंपनी के शिकायत पर कैस्ट्रोल कंपनी के नकली ऑयल बेचने के आरोप में 4 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है।

क्या है मामला

कैस्ट्रोल कंपनी के पावर ऑफ अटॉर्नी होल्डर सूरज सोनी को गुप्त सूचना मिली थी कि रामगढ़ जिले के बाजारों में कैस्ट्रोल कंपनी के डुप्लीकेट ऑयल बेचे जा रहे हैं। सूचना पर रामगढ़ थाना पुलिस के सहयोग से सूरज सोनी ने चार दुकानों में छापामारी कर नकली कैस्ट्रोल ऑयल जब्त किया। आवेदन में सोनी ने कहा है कि कैस्ट्रोल कंपनी की मुख्यता पहचान क्या है कि ढक्कन में लगा हुआ बारकोड जो भी स्केन नहीं होता है और आसानी से मिट जाता है, ढक्कन को खोलने के बाद सिर में कैस्ट्रोल लिखा नहीं होता जबकि ओरिजिनल में कैस्ट्रोल लिखा होता है, जबकि ओरिजिनल में कैस्ट्रोल लिखा होता।

इन दुकानों में की गयी छापामारी

छापामारी के दौरान अग्रवाल इंटरप्राइजेज के संचालक सुरेश अग्रवाल पिता स्व रामेश्वर दास के यहां 3 पीस नकली ऑयल, बाइक रिपेयरिंग सेंटर के दीपक कुमार पिता नेपाल महतो के यहां एक पीस नकली ऑयल, रोनक हीरो हौंडा के मो मोइन अंसारी पिता स्व जलुद्दीन अंसारी के यहां 11 पीस नकली ऑयल, एस के बाइक सेंटर के सुनील कुमार पिता सुरेंद्र लाल महतो के यहां 29 पीस कैस्ट्रोल नकली डिब्बा प्राप्त हुआ।

दीपक प्रकाश ने पूर्व अंतरराष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी से की मुलाकात

रांची (आजाद सिपाही)। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष और सांसद दीपक प्रकाश ने गुरुवार को संपर्क से समर्थन अभियान के तहत रांची के डीबडीह में आठ बार इंटरनेशनल हॉकी में भारत का नाम रोशन करने वाली कांति बा और उनके पुत्र और नेशनल बास्केट बॉल प्लेयर अनिक लकड़ा से मुलाकात की। इस दौरान भाजपा प्रदेश मंत्री काजल प्रधान और प्रदेश कार्यसमिति सदस्य रागिनी सिन्हा उपस्थित थीं।

ट्रिपल टेस्ट पर हेमंत सरकार की मंशा साफ नहीं है : दीपक प्रकाश

रांची (आजाद सिपाही)। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष और सांसद दीपक प्रकाश ने गुरुवार को ट्रिपल टेस्ट को लेकर राज्य सरकार को कटघरे में खड़ा किया। उन्होंने कहा कि राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग का अभी तक पूर्ण गठन नहीं हुआ। आयोग अध्यक्ष विहीन है और दूसरी ओर राज्य सरकार कैबिनेट की बैठक में पिछड़ा वर्ग आयोग से ट्रिपल टेस्ट कराने का निर्णय लेती है। उन्होंने कहा कि यह सरकार पहले नामांकन फिर बाद में स्कूल खोलने पर विचार करती है। ट्रिपल टेस्ट को लेकर राज्य सरकार की मंशा साफ नहीं है। प्रकाश ने कहा कि राज्य सरकार की मंशा साफ रहती तो पंचायत चुनाव में पिछड़ों के हक को सरकार नहीं मारती। पंचायतों में भी पिछड़े समाज को उचित प्रतिनिधित्व मिलता लेकिन ऐसा नहीं हुआ और अब नगर निकाय चुनाव में भी राज्य सरकार पिछड़ा समाज को धोखा देने की तैयारी में है। उन्होंने कहा कि आखिर यह सरकार अध्यक्ष विहीन पिछड़ा वर्ग आयोग से कैसा ट्रिपल टेस्ट कराना चाहती है? आयोग की भी अपनी प्रक्रिया होती है। आयोग ट्रिपल टेस्ट का निर्णय तभी कर पाएगा जब वह पूरी तरह फंक्शन में आयेगा।

पायल सोनी ने सिंटेक्स की टंकी लगवायी

रांची (आजाद सिपाही)। बूटी बस्ती स्थित महतो टोला में विघ्नहर्ता पंचमुखी हनुमान मंदिर में गुरुवार को भरतीय जनता पार्टी की महानगर महिला मोर्चा अध्यक्ष पायल सोनी ने 500 लीटर की पानी टंकी लगवाई। इस दौरान पायल सोनी ने कहा कि यहां बहुत दिनों से पानी के लिए काफी सारी दिक्कतें होती थी। जिसके कारण भक्तों को पूजा करने में और हाथ पैर धोने में परेशानी होती थी। इसे लेकर मंदिर के पुजारी गिरधारी शास्त्रीजी ने मुझे बोला कि एक समाज सेवी होने के नाते आप इस मंदिर में एक सिंटेक्स पानी टंकी लगवा दें। इससे मंदिर में आए हुए सभी भक्तों का पानी की परेशानी कम हो जाएगी। यह सोच कर मैंने उनके कहने पर गुरुवार को 500 लीटर की पानी टंकी हनुमान मंदिर में देने का काम किया। इस दौरान मोहन महतो, कौशल पटेल, जयंती देवी, गायत्री देवी, शीला देवी, गीता देवी, सरिता देवी, सीता देवी, सोने लाल महतो, गिरी लाल महतो, मंदिर के पुजारी गिरधारी शास्त्री मुख्य रूप से उपस्थित रहे। इस कार्य में राधेश्याम गुप्ता के सहयोग से किया गया।

शिबू सोरेन ने रेल मंत्री को लिखा पत्र, कहा

स्टेशनों और हॉल्ट के नाम वहां की स्थानीय भाषा में भी लिखे जायें

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झामुमो सुप्रीमो दिशोम गुरु शिबू सोरेन ने केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव को पत्र लिखा है। उन्होंने कहा है कि झारखंड 1912 तक बंगाल का हिस्सा रहा था। इसके बाद बिहार का हिस्सा बना। 1908 से ही भारतीय रेल अस्तित्व में आया। इसके बाद देश में रेलवे लाइन बिछनी शुरू हुई। सुगम परिचालन के लिए स्टेशन तथा हॉल्ट बनाया जाने लगा। झारखंड के सभी रेल स्टेशन और हॉल्टों में नाम पट्टीकाओं में अंग्रेजी, हिंदी, बांगला और कई विशेष स्थानों पर उड़िया शब्दों में स्थान का नाम लिखा होता था। संविधान में लोक भाषाओं की महत्ता को स्वीकार करते हुए तथा आठवीं अनुसूची में संथाल भाषा की मान्यता के पश्चात संथाली भाषा में भी नामाकरण किया जाने लगा। झारखंड के

संथाल परगना, मानभूम सिंहभूम, धालभूम और पंचपरगना क्षेत्रों में बंग्लाभाषी लोगों की एक विशाल आबादी है। उन्होंने कहा है कि बांग्ला भाषा राज्य के एक बड़े हिस्से में बोली जाती है। राज्य के पाकुड़, बड़हवा, जामताड़ा, मिहिजाम, मधुपुर, जसीडीह, मैथन कुमारधुबी. चिरकुंडा, कालुवधान, धनबाद, गोमो, पारसनाथ, हजारीबाग रोड, मूरी, रांची. हटिया, चाकुलिया, गालूडीह, राखा माईन्स, टाटानगर, चरुडील, कान्द्रा, चक्रधरपुर, चाईबासा, बरकाकाना, रांची रोड, जैसे कई पुराने रेलवे स्टेशनों के नाम पट्टीकाओं में बांग्ला भाषा उल्लेखित रहता था। लेकिन कुछ सालों से यह देखा जा रहा है कि इस क्षेत्र से बांग्ला भाषा में लिखे नाम को मिटाया गया है, जो अत्यन्त अव्यवहारिक और दुर्भाग्यजनक है। इस इलाके के बांग्लाभाषी लोगों लोग झारखंड के मूलवासी हैं। झारखंड के मूलवासियों की जनभावना यह है कि वहां के निवासियों के स्थानों के नाम उस क्षेत्र के रेलवे स्टेशनों के नाम पट्टीकाओं पर लिख हो। उन्होंने रेल मंत्री से आग्रह किया है कि झारखंड सरकार से परामर्श कर बांग्ला भाषा स्थानों को चिह्नित कर अविलंब जनजातिय भाषाओं के साथ-साथ बांग्ला भाषा का भी प्रयोग अनिवार्य किया जाये।

रांची में क्राइम कंट्रोल को लेकर बड़ा कदम

अब सिटी एसपी के होंगे दो पद धुर्वा डीएसपी का भी होगा पद

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राजधानी रांची में क्राइम कंट्रोल के लिए अब सिटी एसपी के दो पद होंगे। वहीं, ग्रामीण एसपी के क्षेत्राधिकार में कटौती होगी। राजधानी में विधि व्यवस्था संभालने के लिए एडीएम लॉ एंड ऑर्डर की तर्ज पर एएसपी लॉ एंड ऑर्डर का भी पद होगा। धुर्वा डीएसपी का एक अतिरिक्त पद होगा। हटिया डीएसपी के क्षेत्राधिकार में पड़नेवाले कुछ थानों को वापस लेकर धुर्वा डीएसपी को दिया जायेगा।

वहीं, राजधानी में ट्रैफिक डीएसपी के दो अतिरिक्त पद सृजित किये जायेंगे। पुलिस अधिकारियों ने इन बिंदुओं पर विचार-विमर्श के बाद प्रस्ताव तैयार करने की दिशा में तैयारी शुरू कर दी है। जल्द ही प्रस्ताव तैयार कर पुलिस मुख्यालय के

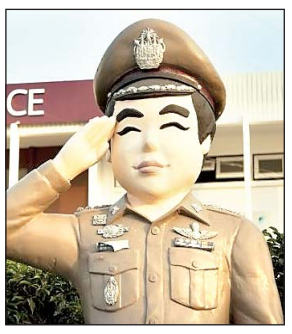

माध्यम से भेजा जायेगा, ताकि सरकार की अनुमति मिलने के बाद मामले में आगे की कार्रवाई की जा सके। राजधानी में एक साउथ सिटी एसपी और एक नॉर्थ सिटी एसपी के पद पर विचार किया गया है।

सिटी एसपी के क्षेत्राधिकार के अंतर्गत शहरी थाना क्षेत्र के सीमावर्ती इलाके से सटे थाना जैसे नामकुम, रातू, नगड़ी सहित अन्य थानों को समाहित किया जायेगा। राजधानी के थानों का स्ट्रेंथ बढ़ाने के लिए अलग से सभी थानों में पुलिस अफसर और जवानों के पद सृजित किये जायेंगे और पेट्रोलिंग के लिए गाड़ियों की संख्या बढ़ायी जायेगी।

ट्रैफिक व्यवस्था दुरुस्त करने के लिए कमांड सेंटर का करें उपयोग : राजधानी की ट्रैफिक व्यवस्था को दुरुस्त करने समेत विभिन्न मुद्दों को लेकर बुधवार को जिला प्रशासन के अधिकारी और स्मार्ट सिटी के सीइओ अमित कुमार की बैठक हुई। सीइओ ने कहा कि शहर के सर्विलांस, यातायात प्रबंधन, ग्रीन कॉरिडोर, वीआइपी व वीवीआइपी मूवमेंट, नगरीय सेवाओं तथा अन्य समस्याओं के त्वरित समाधान में स्मार्ट सिटी के कमांड कंट्रोल एंड कम्युनिकेशन सेंटर का अधिक से अधिक इस्तेमाल करें।

रिम्स में पांच साल के बच्चे की ओपन हार्ट सर्जरी कर दिल का छेद किया बंद

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। रिम्स के सीटीवीएस विभाग में पांच साल के बच्चे के दिल के छेद को सफलतापूर्वक बंद किया गया। विभाग के हेड डॉ विनीत महाजन ने बताया कि पांच वर्षीय मरीज धनबाद का रहनेवाला है। सांस फूलने की समस्या के बाद उसे रिम्स लाया गया था जांच के बाद पता चला कि उसके दिल में छेद है। इस वजह से अक्सर उसे तरह-तरह की परेशानी का सामना करना पड़ता था। वह दोस्तों के साथ खेलने-कूदने में असमर्थ था। रिम्स में भर्ती करने के दौरान उसका वजन मात्र 10 किलोग्राम था। सभी तरह की जांच के बाद डॉक्टर ने कंजेनाइटल हार्ट डिजीज को ठीक करने के लिए ओपन हार्ट सर्जरी का मन बनाया। करीब सात दिन पहले बच्चे के हार्ट की सर्जरी की गयी। उम्र कम होने के कारण यह सर्जरी काफी

जटिल थी। ऑपरेशन करीब चार से पांच घंटे तक चला। डॉ विनीत महाजन और उनकी टीम ने बच्चे के दिल के छेद को पूरी तरह से बंद कर दिया। डॉ विनीत महाजन ने बताया कि ऑपरेशन के बाद बच्चे की स्थिति काफी बेहतर है। उसे सात दिन के ऑब्जर्वेशन में रखा गया था, जिसके बाद बुधवार को उसे डिस्चार्ज कर दिया गया।एक माह के बाद उसे रूटीन चेकअप के लिए बुलाया गया है।

झारखंड के मरीजों को दूसरे राज्य जाने की जरूरत नहीं

डॉ विनीत महाजन ने कहा कि पहले ज्यादातर बड़ों की ओपन हार्ट सर्जरी की जाती थी, लेकिन अब बच्चों की सर्जरी भी की जा रही है। ऐसे में अब झारखंड के रोगियों को दूसरे राज्य जाने की जरूरत नही है। रिम्स में ही हार्ट की गंभीर से गंभीर सर्जरी की जायेगी।

मरीज के पास नही था आयुष्मान कार्ड, मुफ्त किया गया ऑपरेशन : डॉ विनीत महाजन ने बताया कि यह मरीज काफी गरीब परिवार से था। मरीज के पास आयुष्मान कार्ड भी नहीं था। ऐसे में रिम्स प्रबंधन द्वारा इस सर्जरी को पूरी तरह निःशुल्क किया गया। सर्जरी में जो भी दवाएं, इंप्लांट का इस्तेमाल किया गया, उसे रेंट पर उपलब्ध कराया गया। डॉ विनीत महाजन ने कहा कि रिम्स में सर्जरी के लिए रोगी को एक रुपया भी खर्च करना नही पड़ेगा। साथ ही 24 घंटे डॉक्टरों की टीम मौजूद रहेगी।

यूरिया सब्सिडी योजना जारी रहेगी, भारत यूरिया में आत्मनिर्भर बनने की राह पर : दीपक प्रकाश

रांची (आजाद सिपाही)। मोदी सरकार ने किसानों को करों और नीम कोटिंग शुल्कों को छोड़कर 242 रुपये प्रति 45 किलोग्राम की बोरी की समान कीमत पर यूरिया की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए यूरिया सब्सिडी योजना को जारी रखने की मंजूरी दे दी है। पैकेज में तीन वर्षों (2022-23 से 2024-25) के लिए यूरिया सब्सिडी को लेकर लगभग 3.70 लाख करोड़ रुपये आवंटित करने के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की गयी है। यह पैकेज हाल ही में अनुमोदित 2023-24 के खरीफ मौसम के लिए 38,000 करोड़ रुपये की पोषक तत्व आधारित सब्सिडी (एनबीएस) के अतिरिक्त है।मोदी सरकार के इस निर्णय पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी झारखंड भाजपा की ओर से बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कही। कहा कि मोदी सरकार किसानों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध है। श्री प्रकाश ने कहा कि मोदी सरकार के इस निर्णय से किसानों को यूरिया की खरीद के लिए अतिरिक्त खर्च करने की आवश्यकता नहीं होगी और इससे उनकी इनपुट लागत को कम करने में मदद मिलेगी। वर्तमान में, नीम कोटिंग शुल्क और लागू करों को छोड़कर यूरिया की एमआरपी 242 रुपये प्रति 45 किलोग्राम यूरिया की बोरी है जबकि बैग की वास्तविक कीमत लगभग 2200 रुपये है। यह योजना पूरी तरह से भारत सरकार द्वारा बजटीय सहायता के माध्यम से वित्त पोषित है। यूरिया सब्सिडी योजना के जारी रहने से जारी रहने से यूरिया का स्वदेशी उत्पादन भी अधिकतम होगा। उन्होंने कहा कि लगातार बदलती भू-राजनीतिक स्थिति और कच्चे माल की कीमतों में वृद्धि के कारण, पिछले कुछ वर्षों में वैश्विक स्तर पर उर्वरक की कीमतें कई गुना बढ़ रही हैं लेकिन नरेंद्र मोदी सरकार ने उर्वरक सब्सिडी बढ़ाकर अपने किसानों को उर्वरक की अधिक कीमतों से बचाया है। हमारे किसानों की सुरक्षा के अपने प्रयास में, भारत सरकार ने उर्वरक सब्सिडी को 2014-15 में 73,067 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 2022-23 में 2,54,799 करोड़ रुपये कर दिया है।

गिरिडीह के जमुआ में पांच करोड़ की लूट

पटना से कोलकाता पहुंचायी जा रही थी राशि

आजाद सिपाही संवाददाता

गिरिडीह। जमुआ थाना क्षेत्र के बाटी में नकद पांच करोड़ रुपये लूट की घटना हुई है। रकम एक एसयूवी में बॉक्स बना कर रखी गयी थी और उसे पटना से कोलकाता ले जाया जा रहा था। घटना 21 जून की देर रात की है। इस संबंध में गुजरात निवासी मयूर सिंह ने प्राथमिकी दर्ज करायी है। मामले की गोपनीय तरीके से जांच की गयी, लेकिन गुत्थी अब तक नहीं सुलझी है। आयकर विभाग को सूचना दी गयी है। पुलिस को प्रथम दृष्टया हवाला कारोबार का मामला लग रहा है।

मयूर सिंह का कहना है कि वह गुजरात में एक टेक्नीशियन के रूप में कार्यरत हैं। उसकी पहचान गोविंद सिंह सोलंकी नामक व्यक्ति से हुई। उसने अच्छा काम दिलाने का भरोसा दिलाया। बाद में गोविंद सिंह ने उसे गुजरात से दिल्ली और फिर दिल्ली से कानपुर जाने को कहा। वह कानपुर पहुंचा, तो वहां करण भाई नामक व्यक्ति ने उसे रिसीव किया। तीन दिन वहां रुकने के बाद उसकी मुलाकात गुजरात के ही जगत सिंह जडेजा उर्फ जगत भाई से करवायी गयी।

जगत सिंह उसे क्रेटा (आरजे 45 सीयू /9964) में बैठा कर पटना लाया। यहां उसे बताया गया कि इसी क्रेटा वाहन से पांच करोड़ रुपया पटना से कोलकाता ले जाना है। पटना की डीवाइ कंपनी से पांच करोड़ रुपये कैश लेकर गाड़ी के अंदर बने एक बॉक्स में डाल दिया गया। वे लोग कोलकाता के लिए 20 जून की रात लगभग 8-9 बजे रवाना हुए।

गाड़ी मयूर सिंह चला रहा था। मयूर सिंह और जगत सिंह 21 जून की रात लगभग 1:30 बजे जमुआ में टिकामगहा गांव के पास स्थित एक पेट्रोल पंप में रुके और तेल भरवाया। यहां से आगे बढ़े ही थे कि बाटी गांव के पास एक स्कॉर्पियो ने ओवरटेक कर गाड़ी रुकवायी। स्कॉर्पियो से पांच लोग उतरे और क्रेटा का दरवाजा खुलवाया और चाबी ले ली। दोनों को उतार कर अपराधी क्रेटा कार लेकर चलते बने। सुबह पांच बजे सड़क पर दोनों को एक होटल के पास अपनी क्रेटा कार दिखी। कार के फर्श के निचले हिस्से में बने बॉक्स को तोड़ कर पूरी राशि गायब कर दी गयी थी।

जहां से रकम लेने की बात, वहां लटका मिला ताला

मयूर के बयान के आधार पर पुलिस ने जांच शुरू की है। पटना की डीवाइ कंपनी का जिक्र मयूर ने किया है, लेकिन बताये पते पर पुलिस ने ऐसा कोई बोर्ड नहीं पाया। मयूर की निशानदेही पर पुलिस एक घर तक पहुंची, जिसे डीवाइ कंपनी का दफ्तर बताया गया था, लेकिन घर के कमरे में ताला लटका रहने के कारण जांच नहीं हो सकी।

झारखंड राज्य आवास बोर्ड ने 300 दुकानदारों को भेजा नोटिस, मचा हड़कंप

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड राज्य आवास बोर्ड की तरफ से तीन सौ दुकानों को नोटिस जारी किया गया है। इसके बाद दुकानदारों में हड़कंप मच गया है। मामला आवासीय परिसर में शॉपिंग मॉल और दुकान खोलने से जुड़ा है, जिसमें बोर्ड ने हरमू और अरगोड़ा स्थित करीब 300 दुकानों को चिह्नित कर नोटिस जारी किया है।

बता दें, आवास बोर्ड से वर्षों पहले आवास बनाने के लिए आवंटित जमीन पर दुकान और शॉपिंग मॉल बनाने वालों पर अब आवास बोर्ड ने सख्ती करने का फैसला किया है। ऐसे तीन सौ लोगों को झारखंड राज्य आवास बोर्ड ने नोटिस भेजा है। भेजे गये नोटिस में कहा गया है कि- क्यों नहीं आपके नाम से आवंटित जमीन के लीज को रद्द कर दिया जाये। झारखंड राज्य आवास बोर्ड के अध्यक्ष संजय लाल पासवान की सख्ती के बाद ऐसे लोगों को नोटिस भेजा गया है

क्या है मामला : दरअसल, झारखंड गठन के बाद राज्य में बिहार राज्य आवास बोर्ड की तर्ज पर झारखंड राज्य आवास बोर्ड का गठन किया गया था। आवास बोर्ड ने इसी के तहत रांची में कई नयी कॉलोनियों का निर्माण करवाया था, जिसमें हरमू हाउसिंग कॉलोनी, अरगोड़ा हाउसिंग कॉलोनी आदि का निर्माण हुआ था.। लोगों ने आवेदन देकर अपने नाम से जमीन का आवंटन लिया था। शर्त थी कि ऐसे लोग जमीन पर आवास का निर्माण करेंगे, जो पूरी तरह से आवासीय होगा। यहां तक सब कुछ ठीक ठाक रहा, लेकिन बाद में ऐसे लोगों ने जमीन पर आवास की जगह दुकान, शॉपिंग काम्प्लेक्स सहित पेट्रोल पंप की स्थापना कर ली, जो कि आवास बोर्ड के मैनुअल का उल्लंघन है। इसी मामले में अब नोटिस देकर लोगों से जवाब मांगा गया है। ऐसे आवंटियों की संख्या तीन सौ से ज्यादा है। इसमें धनबाद और जमशेदपुर के भी आवंटी शामिल हैं।

अब आगे क्या होगा : बता दें, आवास बोर्ड ने ऐसे लोगों को पहली बार नोटिस भेजा है। यह नोटिस तीन बार सर्व किया जायेगा। यदि आवंटियों के द्वारा संतोषजनक जवाब नहीं आता है तो उनकी जमीन की लीज को रद्द किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में उन्हें दुकान हटाने को कहा जा सकता है। दूसरा विकल्प यह है कि ऐसे आवंटियों पर आवास बोर्ड के माध्यम से जुर्माना लगाया जायेगा और फिर बाजार दर पर ऐसी जमीनों का फिर से आवंटन किया जायेगा।

बोर्ड अध्यक्ष ने कहा

झारखंड राज्य आवास बोर्ड के अध्यक्ष संजय लाल पासवान ने कहा हैं कि बोर्ड किसी को उजाड़ना नहीं चाहता, लेकिन इतना तय है कि ऐसे लोगों को नियम का ख्याल रखना चाहिए था। संजय लाल पासवान ने कहा कि तीसरी नोटिस के बाद भी यदि संतोषजनक जवाब नहीं आया, तो ऐसे लोगों पर जुर्माना लगाया जायेगा। उन्होंने कहा कि ऐसे आवंटियों को बाजार दर पर आवास बोर्ड में स्क्वायर फीट के आधार पर राशि जमा करानी होगी।

कुत्तों की लड़ाई ने पति-पत्नी को पहुंचाया सिविल कोर्ट, अब नौबत तलाक की आयी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। पति-पत्नी का रिश्ता बाकी सभी रिश्तों से काफी अलग होता है। इस रिश्ते में प्यार भी होता है और कभी-कभी तकरार भी होती है। ज्यादातर मामलों में समय के साथ पति-पत्नी का रिश्ता और भी मजबूत होता चला जाता है। हालांकि कुछ जोड़े ऐसे भी होते हैं, जिनमें प्यार कम और झगड़े ज्यादा होते हैं। अगर समय रहते स्थिति को ना संभाला जाये, तो रिश्ते कभी-कभी टूटने के कगार पर भी आ जाते हैं। रांची में भी एक पति-पत्नी का रिश्ता छोटे से विवाद के कारण टूटने के कगार पर पहुंच गया है। रिश्ता टूटने की सबसे बड़ी वजह बन रहे हैं पालतू कुत्ते। जी हां, आपको यह बात थोड़ी अटपटी जरूर लगेगी, लेकिन यह सच है। छोटी सी बात को लेकर शुरू हुआ झगड़ा कोर्ट की दहलीज तक पहुंच गया है।

रांची में वर्ष 2018 में एक युवक-युवती ने पूरे रीति रिवाज के साथ जन्म-जन्मों तक एक दूसरे का साथ निभाने की कसमें खाते हुए शादी क।लेकिन शादी के कुछ दिनों बाद ही उन्होंने एक दूसरे से अलग होने का फैसला कर लिया। विवाद इतना बढ़ गया कि घर की लड़ाई अदालत की चौखट तक आ पहुंची। दरअसल रांची के रहनेवाले प्रवीण और अपर्णा (बदला हुआ नाम) की शादी वर्ष 2018 में हुई थी। दोनों को कुत्तों से प्यार था। लड़की के पास जर्मन शेफर्ड नस्ल का कुत्ता था और लड़के के पास सामान्य ब्रीड का कुत्ता। शादी के बाद अपर्णा अपना कुत्ता लेकर ससुराल आ गयी। एक दिन अपर्णा के कुत्ते ने प्रवीण के कुत्ते को काट लिय, जिसके बाद पति-पत्नी के बीच कहा सुनी शुरू हो गयी। छोटी सी बात को लेकर शुरू हुई कहासुनी ने पारिवारिक विवाद का रूप ले लिया और घर की लड़ाई अदालत की दहलीज तक जा पहुंची। प्रवीण ने अपने वकील के माध्यम से कोर्ट में तलाक का आवेदन दाखिल कर दिया है, जिस पर रांची सिविल कोर्ट के फैमिली कोर्ट में सुनवाई चल रही है। प्रवीण और अपर्णा के मामले में सुलह की भी कोशिश की गयी, लेकिन ये कोशिश बेकार साबित हुई।

क्रिकेट में नस्लवाद

इंग्लिश क्रिकेट में नस्लवादी पूर्वाग्रहों और भेदभाव की परिपाटी को लेकर आई हालिया रिपोर्ट दुनिया भर में खेल के दायरे से बाहर भी लोगों का ध्यान खींच रही है। मार्च 2021 में इंग्लैंड एंड वेल्स क्रिकेट बोर्ड (इसीबी) ने इंडिपेंडेंट कमिशन फॉर एक्विटी इन क्रिकेट (आइसीइसी) गठित करके इस दिशा में जांच-पड़ताल की प्रक्रिया शुरू करवाई कि उसके यहां क्रिकेट जगत में नस्लवादी प्रवृत्तियों का कितना असर है। इस कमिशन ने व्यापक जांच-पड़ताल के बाद 317 पन्नों की जो रिपोर्ट दी है, उसे इंग्लिश क्रिकेट के लिए शर्मनाक बताया जा रहा है। कमिशन ने कहा है कि यह महज कुछ सड़े सेबों का मामला नहीं है। समस्या की जड़ें गहराई तक फैली हुई हैं। रिपोर्ट के मुताबिक नस्लवादी पूर्वाग्रहों के प्रमाण तो हर स्तर पर मिलते ही हैं- एशियाई और अफ्रीकी मूल के खिलाड़ियों को तरह-तरह के फिकरों का सामना करना पड़ता है- लेकिन बात यहीं तक सीमित नहीं है। नस्लभेद के साथ ही वर्ग और लिंग आधारित पक्षपात के भी प्रमाण कमिशन को बड़े पैमाने पर मिले। निम्न तथा मध्यमवर्गीय पृष्ठभूमि वाले खिलाड़ियों और महिलाओं को इसका दंश झेलना पड़ता है। खासकर महिला खिलाड़ियों के साथ तो पुरुष खिलाड़ियों के मुकाबले कम सुविधाएं और कम पारिश्रमिक जैसे मसले भी हैं। ये तमाम बुराइयां इंग्लिश क्रिकेट में पहले से रही हैं, लेकिन ये दबी-ढकी अवस्था में थीं। कमिशन की रिपोर्ट ने इसकी मौजूदगी स्थापित कर दी है। इस वजह से इंग्लिश क्रिकेट पर उंगलियां भी उठ रही हैं। लेकिन ध्यान देने की बात यह है कि यह रिपोर्ट अपने आप सामने नहीं आयी है। इसीबी ने कमिशन का गठन कर अपने अंदर की बुराइयों को देखने, समझने, स्वीकार करने और फिर उनसे मुक्त होने की जिस भावना का परिचय दिया, वह निश्चित रूप से काबिले तारीफ है। रिपोर्ट आने के बाद इसीबी ने समय रहते पक्षपात और भेदभाव पर काबू कर पाने में अपनी नाकामी के लिए स्पष्ट तौर पर उन सबसे माफी मांगी है, जिन्हें किसी रूप में इसका शिकार होना पड़ा। साथ ही उसने कहा है कि कमिशन की रिपोर्ट में दी गयी 44 सिफारिशों को तीन महीने के अंदर लागू किया जायेगा। निश्चित रूप से इस बात पर नजर रखी जानी चाहिए कि ईसीबी अपने इस वादे पर किस हद तक कायम रहता है और उसके द्वारा उठाये गये कदमों की बदौलत जमीन पर हालात कहां तक बदलते हैं, लेकिन चाहे नस्लवाद हो या लिंग, धर्म, जाति, भाषा, क्षेत्र आदि के आधार पर होने वाले अन्य भेदभाव, दूसरे क्रिकेट बोर्ड इनसे पूरी तरह मुक्त होंगे, ऐसा मानने की कोई ठोस वजह नहीं है। चूंकि ये बुराइयां समाज में अलग-अलग रूपों में नजर आती हैं, इसलिए स्वाभाविक है कि क्रिकेट भी इनसे अछूता नहीं होगा। बेहतर होगा कि अन्य क्रिकेट बोर्ड भी इनकी पहचान करके इनसे मुक्त होने की प्रक्रिया अपनी तरफ से और जल्द से जल्द शुरू करें।

नस्लभेद के साथ ही वर्ग और लिंग आधारित पक्षपात के भी प्रमाण कमिशन को बड़े पैमाने पर मिले। निम्न तथा मध्यमवर्गीय पृष्ठभूमि वाले खिलाड़ियों और महिलाओं को इसका दंश झेलना पड़ता है।

अभिमत
आजाद सिपाही

संविधान निर्माताओं ने महसूस किया कि विवाह और भरण-पोषण से जुड़े मामलों का संबंध किसी पूजा पद्धति से नहीं है, बल्कि इसका संबंध इंसानियत से है। निस्संतान व्यक्ति यदि किसी बच्चे को गोद लेकर अपनी वंश परंपरा को आगे बढ़ाना चाहता है या उससे उसको सुरक्षा बोध का अहसास होता है, तो उससे किसी पूजा पद्धति की अवमानना कैसे हो सकती है।

सभी नागरिकों के हक में है समान नागरिक संहिता

प्रो हरबंश दीक्षित

हैरानी की बात यह है कि शाहबानो के जिस मुकद्दमे में सुप्रीम कोर्ट ने लोगों से इस दिशा में आगे बढ़ने की पहल का आह्वान किया, उसके दुष्प्रचार ने समान नागरिक कानून की पहल को सबसे मर्मांतक चोट पहुंचायी। परिणाम इसका ठीक उलटा हुआ। इसे मुसलमानों के धार्मिक मामलों में दखलअंदाजी के रूप में प्रचारित किया गया।

संविधान का अनुच्छेद-44 सबसे अधिक दुष्प्रचारित हिस्सों में से एक है। इसके उपबंध के साथ बहुत अन्याय हुआ है। इसमें देश के सभी नागरिकों के लिए एक जैसा कानून बनाने की बात कही गयी है। सरकार से अपेक्षा की गयी है कि वह पंथ, क्षेत्र और भाषा से संबंधित बंटवारा करने वाले आधारों की परवाह किये बगैर सभी के लिए एक जैसा कानून बनाये। ऐसी व्यवस्था बनाये जो मानवीय गरिमा का सम्मान करती हो, उसे सुरक्षा बोध दे और सभ्य समाज के मानकों पर खरी उतरे।

दुर्भाग्यवश अनुच्छेद-44 की इस पवित्र मंशा को आगे बढ़ाने की बजाय उसको हमने अपनी फितरत के मुताबिक एक हौवा बना दिया। उस पर तार्किक बहस करने की बजाय उसे साम्प्रदायिक रूप देकर अछूत बना दिया। सुप्रीम कोर्ट का आग्रह बेकार गया। अदालत के निदेर्शों की हेठी की गयी। यह दस्तूर आज भी कायम है। वैसे तो हमारे देश में अधिकतर मामलों में एक जैसा कानून लागू होता है। जमीन की खरीद-फरोख्त, किरायेदारी और दीगर दीवानी मामलों में आजादी के पहले से ही एक जैसा कानून लागू होता है, लेकिन विवाह, उत्तराधिकार, वसीयत दत्तक ग्रहण जैसे मामलों में आजादी के पहले से ही अलग-अलग संप्रदायों के लिए अलग कानून रहे हैं।

पहले पुरुष एक से अधिक शादियां कर सकता था, वहीं हिंदू विवाह अधिनियम के जरिए उस पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

संविधान निर्माताओं ने महसूस किया कि विवाह और भरण-पोषण से जुड़े मामलों का संबंध किसी पूजा पद्धति से नहीं है, बल्कि इसका संबंध इंसानियत से है। निस्संतान व्यक्ति यदि किसी बच्चे को गोद लेकर अपनी वंश परंपरा को आगे बढ़ाना चाहता है या उससे उसको सुरक्षा बोध का अहसास होता है, तो उससे किसी पूजा पद्धति की अवमानना कैसे हो सकती है।

यदि किसी कानून से किसी महिला को सामाजिक सुरक्षा मिलती है या पति से अलग होने या पति के नाराज होने के बाद उसे दर-बदर भटकने की बजाय यदि गुजारे-भत्ते की व्यवस्था की जाती है, तो इसमें उसका धर्म कहां से आड़े आता है। महिला-पुरुष के वैवाहिक सम्बन्धों में यदि समानता सुनिश्चित की जाती है तो इससे किसी भी सभ्य समाज के लिए शर्मिंदगी नहीं, अपितु गर्व होना चाहिए।

आजादी के बाद इस दिशा में सकारात्मक पहल की गयी। समानता के सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए पारम्परिक हिन्दू विधि में व्यापक परिवर्तन किये गये।

पहले, पुरुष एक से अधिक शादियां कर सकता था, वहीं हिंदू विवाह अधिनियम के जरिए उस पर प्रतिबंध लगा दिया गया। पति-पत्नी को विवाह विच्छेद करके सम्मानपूर्वक एक-दूसरे से अलग रहने का अधिकार दिया गया। महिलाओं की आर्थिक सुरक्षा के मद्देनजर उन्हें भरण-पोषण का अधिकार दिया गया तथा पिता की संपत्ति में बेटियों को भी अधिकार देने की परम्परा की शुरूआत हुई। संतान को गोद लेने के मामलों में भी पति के एकाधिकार को तोड़ते हुए महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने की कोशिश की गयी। इनका सकारात्मक पहलू यह रहा कि हिंदू कानून में किये जाने वाले सुधार दूसरे संप्रदायों में पहले से ही थे।

मसलन, मुस्लिम कानून में बेटियों का उत्तराधिकार पहले से ही था। ईसाई कानून में पहले भी पुरुष को एक ही पत्नी रखने का अधिकार था। हिन्दू कानून में किये गये सुधारों में पारंपरिक विधि की जगह मानवाधिकारों और समानता के सिद्धांतों को तरजीह दी गयी, लेकिन वोट बैंक खिसकने की स्वार्थी सोच के कारण दूसरी जगहों पर ऐसा नहीं हो सका और उन्हें बेहतर होने के मौके से लगातार वंचित रखा गया। संविधान का अनुच्छेद-44 और अदालतों के कई निर्देश भी इस सोच पर बेअसर रहे। आधुनिक सोच का लाभ केवल हिंदुओं तक ही सीमित न रहे और वह दूसरे मतावलंबियों को भी हासिल हो इसके लिए अदालतें लगातार कोशिश करती रही हैं। मोहम्मद अहमद खान बनाम शाहबानो (1985) केस में सुप्रीम कोर्ट ने इस पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि यह अत्यंत खेद का विषय है कि संविधान के अनुच्छेद-44 में तय की गई राज्य की जिम्मेदारी अब निर्जीव शब्द समूह का संग्रह मात्र बन कर रह गयी है।

सरकारी उपेक्षा को ध्यान में रखते हुए अदालत ने कहा कि मुस्लिम समाज को इस मामले में पहल करने की जरूरत है, ताकि प्रगति की दौड़ में वे दूसरों से पीछे न रहें। हैरानी की बात यह है कि शाहबानो के जिस मुकद्दमे में सुप्रीम कोर्ट ने लोगों से इस दिशा में आगे बढ़ने की पहल का आह्वान किया, उसके दुष्प्रचार ने समान नागरिक कानून की पहल को सबसे मर्मांतक चोट पहुंचायी। परिणाम इसका ठीक उलटा हुआ। इसे मुसलमानों के धार्मिक मामलों में दखलअंदाजी के रूप में प्रचारित किया गया। निहित हितों के संरक्षण हेतु कुछ लोगों ने इसे पूरे कौम की अस्मिता पर खतरा करार दे दिया। कानून बना कर मुस्लिम महिलाओं को गुजारे भत्ते के अधिकार से वंचित करना पड़ा।

बाद के घटनाक्रम बताते हैं कि लोगों ने इस संदेश को बखूबी याद रखा। तार्किक विचारधारा के लोग अपनी बात कहते रहे, सुप्रीम कोर्ट निर्देश जारी करता रहा और सरकार शाहबानो प्रकरण के निहितार्थ के सबक का पालन करती रही।

मारकंडेय काटजू ने अपने बयान में समान नागरिक कानून की वकालत करके संविधान के अनुच्छेद-44 और सुप्रीम कोर्ट के निदेर्शों की परंपरा को आगे बढ़ाने का काम किया है। इसके पहले अन्य विद्वानों ने भी इसकी वकालत की है।

जमशेदपुर की खबरें

टाटा एजुकेशन एक्सीलेंस कार्यक्रम के तहत कार्यशाला का आयोजन, 14 स्कूलों के प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। टाटा एजुकेशन एक्सीलेंस प्रोग्राम (टीईईपी) के तहत ने स्कूलों में शैक्षणिक प्रक्रियाओं के चिन्हित कमियों को संबोधित करने के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया। टाटा मोटर्स मैनेजमेंट ट्रेनिंग सेंटर में आयोजित कार्यशाला में 14 स्कूलों ने भाग लिया। शिक्षा प्रक्रिया की परिपक्वता व विश्लेषण के लिए इन स्कूलों का बेसिक मूल्यांकन व सरल मूल्यांकन विधियों पर किया गया। टीईईपी के तहत मूल्यांकन शिक्षा प्रक्रिया का गुणवत्ता जांच के लिए प्रारंभिक मूल्यांकन विधियां पर चर्चा की गई। मौके पर माउंट लिटरा जी स्कूल के क्रिएटिव डायरेक्टर सुनीता सिन्हा ने ताकत, कमजोरी, अवसर, खतरा के विश्लेषण पर कार्यशाला में जानकारी दी। उन्होंने कहा कार्यशाला का उद्देश्य वर्तमान शिक्षा प्रक्रिया में कमियों का पता लगाना है। सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त करने के लिए स्कूली बच्चों और स्कूल दोनों के लिए केंद्रित और प्रक्रिया संचालित तरीकों के साथ उन्हें दूर करना है। कार्यशाला को वट विश्लेषण और पाठ योजना के पहलुओं का विस्तार से कवर करने के लिए डिजाइन किया गया। इस मूल्यांकन के परिणाम के रूप में कई ताकत और अवसरों की पहचान की गई। कार्यशाला विशेष रूप से कमियों को दूर करने और स्कूलों का समर्थन करने के लिए आयोजित की गई। कोरोना काल के लिए कार्यशाला का आयोजन 3 साल के अंतराल के बाद किया गया। कार्यक्रम में 14 विद्यालयों के 5 प्राचार्यों सहित कुल 27 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम स्कूलों को आगामी मूल्यांकन चक्र के लिए अपनी मूल्यांकन तैयारियों को बढ़ाने और विस्तारित करने में मदद करेगा। मौके पर विद्यासागर उच्च विद्यालय, बमनगोरा की प्रिंसिपल प्रतिभा वर्मा के द्वारा सुनीता सिन्हा को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। कार्यक्रम का आयोजन निजी, सरकारी, अर्ध-सरकारी, शहरी, अर्ध-शहरी और ग्रामीण स्कूलों के लिए चलाया जा रहा है।

भाजपा ने जमशेदपुर में चलाया जनसंपर्क अभियान

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। केंद्र सरकार के नौ वर्ष पूरे होने पर भारतीय जनता पार्टी जमशेदपुर सहित पूरे प्रदेश में विशेष जनसंपर्क अभियान चला रही है। गुरुवार को जमशेदपुर पुर्वी विधानसभा के बारीडीह विद्यापति नगर में भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सह पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास ने भाजपा कार्यकताओं के संग क्षेत्र के नागरिकों व दुकानदारों को केंद्र की मोदी सरकार के नौ साल की जनहितैषी योजनाओं से संबंधित पत्र का वितरण किया। मंडल अध्यक्ष संतोष ठाकुर के नेतृत्व में कार्यकताओं ने 'संपर्क से समर्थन' अभियान के तहत लोगों के घरों व दुकानों पर जाकर प्रधानमंत्री के 9 साल की प्रमुख उपलब्धियों को उनके समक्ष रखा। इस दौरान मोदी सरकार के टोल फ्री नंबर के माध्यम से समर्थन देने का आग्रह किया। अभियान के दौरान क्षेत्र के लोगों में उत्साह देखा गया। भाजपा

कार्यकताओं ने वर्तमान सरकार की वादाखिलाफी और भ्रष्टाचार पर आमजनों को जागरूक किया। मोदी सरकार ने नौ सालों में देश के सभी क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास किया है। सरकार ने न केवल वंचित, शोषित लोगों को मुख्य धारा से जोड़ा बल्कि उनका सशक्तिकरण भी किया।आज दुनिया के अर्थशास्त्री, विश्लेषक सभी एक स्वर में कह रहे 21वीं सदी भारत की सदी है। पूरी दुनिया भारत को लेकर एक नए विश्वास से भरी है। मौके पर संतोष ठाकुर, संजीव सिंह, संजय सिंह, बिनोद सिंह, कुमार अभिषेक, अरुण कुमार, पंकज मिश्रा, ओम पोद्दार, गंगा प्रसाद, रंजीत सिंह, विनय कुमार, संजय शर्मा, राकेश सिंह, गणेश पाल, रंजीत कुमार समेत अन्य मौजूद रहे। वही सांसद विद्युत महतो व जिलाध्यक्ष गुंजन यादव ने जनसंपर्क अभियान के तहत जुगसलाई और गोविंदपुर में कार्यकर्ताओ संग घर-घर जाकर लोगों से मुलाकात की। भाजपा कार्यकताओं ने गोविंदपुर मुख्य मार्ग, हाट बाजार व कॉलोनी में जनसम्पर्क अभियान चलाकर मोदी सरकार की प्रमुख उपलब्धियों से आमजनों को अवगत कराया। मौके पर पप्पू सिंह, पवन सिंह, कमलेश सिंह, आशीष राय, बिमल बैठा, शिवजी प्रसाद, विमलकांत झा, सतीश सिंह, इंदरजीत सिंह, राजीव चौहान, विकास सिंह, विपीन सिंह, सुबोध शाही, विमलकांत झा, अमित पांडेय, अरविंद सिंह, आशुतोष सिंह, रिशु कुमार, मिथलेश, नीरज गुप्ता, राहुल द्विवेदी, कृष्णा सिंह, शंकर, सुजय पांडे, गौरी कुमारी, स्नेहलता, शिव शांडिल, विजय, अरुण झा, प्रमोद सिंह, शम्भू सिंह समेत अन्य मौजूद रहे।

ट्रेलर और ट्रक की हुई टक्कर

चांडिल(आजाद सिपाही संवाददाता)। चांडिल थाना अंतर्गत कांदरबेड़ा चौक पर सड़क दुर्घटना में ट्रेलर चालक वाहन के अंदर ही फंसे रहे। जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस व स्थानीय लोगों के सहयोग से हाईड्रा की मदद से कड़ी मशक्कत के बाद चालक को बाहर निकाला गया। पुलिस ने घायल चालक को इलाज के लिए अस्पताल पहुचाया। बताया जा रहा है सड़क दुर्घटना गुरुवार की सुबह की है। चांडिल की ओर से जमशेदपुर आम लेकर जा रही ट्रक व चांडिल की ओर जा रही खाली ट्रेलर के बीच जोरदार टक्कर हो गई। ट्रेलर का चालक वाहन के अंदर ही फंसे रहे। इसके बाद हाइड्रा की मदद से ट्रेलर के अंदर फंसे चालक को बाहर निकाला गया। चांडिल थाना प्रभारी ने बताया ट्रेलर चालक के पैर में चोट लगी है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है।

जलापूर्ति योजना पूरी होने तक टैक्स वसूली बंद करे नगर विकास विभाग : ओमप्रकाश

आजाद सिपाही संवाददाता

आदित्यपुर। जन कल्याण मोर्चा और आदित्यपुर अधिवक्ता संघ ने जलापूर्ति योजना और सीवरेज योजना को लेकर अब आरपार की लड़ाई लड़ने की तैयारी में जुट गई है। दूसरी बार मिले एक्सटेंशन की अवधि 30 जून को समाप्त होगी। लेकिन अब तक दोनों योजना का 50 फीसदी भी काम पूरा नहीं हुआ। मोर्चा ने इसे जनता के लिए दुर्भाग्यपूर्ण बताया। गुरुवार को जानकारी देते हुए मोर्चा के सदस्यों ने बताया इसके लिए नगर विकास विभाग, वन विभाग, रेलवे, पथ निर्माण विभाग और आवास बोर्ड पूरी तरह से जिम्मेवार है। जिला बार एसोसिएशन के उपाध्यक्ष सह जन कल्याण मोर्चा के अध्यक्ष ओमप्रकाश ने बताया बीते 2019 के 23 फरवरी को पेयजल योजना व 23 नवंबर 2017 में सीवरेज

योजना का शिलान्यास किया गया था। लेकिन अब तक किसी भी विभाग के बीच आपस में तालमेल नहीं बनी। उन्होंने कहा इस प्रकार के कार्य से वे लोग जनहित याचिका दायर करेंगे। दोनों संगठनों ने मांग किया जब तक योजनाएं पूरी नहीं होती तब तक झारखंड सरकार आदित्यपुर नगर निगम क्षेत्र के सभी नागरिकों से टैक्स लेना बंद करे। उन्होंने कहा सीवरेज योजना 255 करोड़ की है और जलापूर्ति योजना 395 करोड़ की। दोनो योजनाएं आदित्यपुर के करीब 60 हजार परिवारों के लिए बना था। लेकिन यहां के लोग कीचड़ भरी सड़कों पर चलने को विवश हैं। पेयजल के अभाव में 600 रुपये में 1000 लीटर पानी खरीदकर पीने को विवश हैं। जबकि नगर विकास विभाग होल्डिंग टैक्स में बेतहाशा वृद्धि कर आम नागरिकों के जेबें खाली करने में पर अड़ी है। उन्होंने कहा मंत्री के समीक्षा और आदेश के बावजूद कार्य अब तक अधूरे हैं।

अंग्रेजों और संथाल के बीच हुए संघर्ष की मार्टिलो टावर दिलाती याद

आजाद सिपाही संवाददाता

पाकुड़। सिदों कांन्हू पार्क में स्थित ऐतिहासिक मार्टिलो टावर की याद हूल क्रांति की याद ताजा कर देता है । मार्टिलो टावर अंग्रेजों और संथाल के बीच हूई संघर्ष का अवशेष हैं 1856 से अंग्रेज हुकूमत के सरमार्रटी के द्वारा रातोरात आदिवासी संथाल के हमले से बचने के लिए यहां टावर का निर्माण किया गया था । जिससे संथाल हमले से बचने का मौका मिला ।कहा जाता है कि ब्रिटिश सेना संथाल विद्रोह को रोकने के लिए टावर के अंदर से फायरिंग की थी । जिसमे बिट्रिश सेना ने हजारों संथाल लड़ाकू को हत्या कर दी थी । लेकिन संथाल के योद्दा अपनी कालाकारी दिखाते हुए वार

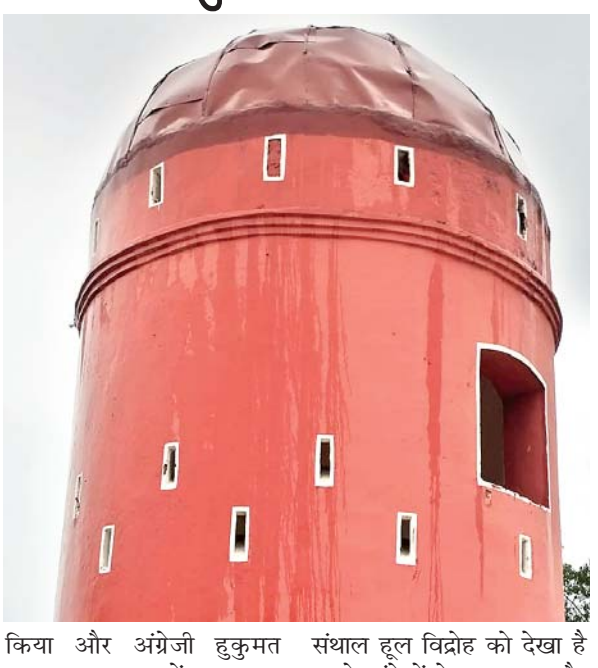

किया और अंग्रेजी हुकुमत भगाया । वास्तव में यह टावर संथाल हूल विद्रोह को देखा है । जो अंग्रेजों के तानासाह और जमींदारों के खिलाफ हूल क्रांति की याद इस दिन को ताजा कर देती । हूल विद्रोह का वास्तविक अर्थ क्रांति बगावत है । इस विद्रोह को संथाल परगना का प्रथम जन क्रांति भी कहा जाता है। काल मार्क्स ने संथाल विद्रोह को भारत की प्रथम जन क्रांति की संज्ञा दी है। इस विद्रोह को सिंदो कांन्हू चांद भैरो और फूरो झानों ने शुरूआत की थी । और ये सभी आपस में भाई बहन थे ।1855 को भोगनाडीह गांव में लगभग 400 गांव के 6000 से अधिक आदिवासी जमा होकर इस सभा किया और कहा कि अपना देश अपना राज्य का नारा दिया और यही से हूल क्रांति का आगाज किया था । इसी दिन को हूल दिवस के रूप में मनाया जाता है।

सोनारी में शांतिपूर्ण तरीके से मनी बकरीद

जमशेदपुर (आजाद सिपाही संवाददाता)। त्याग,बलिदान,समर्पण,आपसी भाइचारे व इंसानियत का पैगाम देने वाले बकरीद शांतिपूर्ण तरीके से मनाया गया। गुरुवार को सोनारी के खुटाडी राम मंदिर के समीप और परदेशीपाड़ा विरमंच अखाड़ा के समीप सोनारी थाना व शांति समिती के सदस्य ने शांति का माहौल बनाये रखे। ताकि कोई भी परेशानी या तकलीफ आमजनों तक न पहुंच सके।

गढ़वा जिले में आपसी भाईचारा और सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में मनाया गया बकरीद का त्योहार

अकीदतमंदों ने मांगी अमन-चैन की दुआ

नमाज अदा करने के बाद अकीदतमंदों ने खुदा की राह में बकरा की कुर्बानी पेश की

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। जिला में ईद- उल- अजहा का त्योहार अकीदत व मसर्रत के साथ मनाया गया। इस मौके पर मुस्लिम समुदाय के लोगों ने स्थानीय इदगाहों, मस्जिदों व मदरसों में दो रिकअत वाजिब नमाज- ए- ईद - उल- फितर अदा की। नमाज अदायगी को लेकर इन स्थलों पर सुबह से ही नमाजियों की भीड़ जमा होने लगी थी। नमाज अदा करने के बाद लोग एक-दूसरे से गले मिलकर ईद- उल- फितर की बधाई दी। वहीं घर पहुंच कर अकीदतमंदों ने खुदा की राह बकरा की कुबार्नी पेश की।

जिला मुख्यालय स्थित जामा मस्जिद रांकी मोहल्ला में जामा मस्जिद के पेश ईमाम हाफिज अब्दुस्समद ने नमाज-ए-ईद-उल-अजहा अदा कराई। जबकि टंडवा मस्जिद में मौलाना शाहजाद आलम मिसवाही, उंचरी मस्जिद में मुफ़्ती मो यूनुस, इंदिरा गांधी रोड स्थित छोटी मस्जिद में हाफिज नेयाज, अली नगर ऊंचरी मस्जिद में मौलाना रफीउद्दीन, शरीफ नगर के मस्जिद में मौलाना शेर मोहम्मद, कल्याणपुर मस्जिद में मौलाना यूसुफ एवं मदरसा तबलिगुल इस्लाम के मस्जिद में मौलाना लियाकत हुसैन ने ईद- उल-अजहा की नमाज अदा कराई।

गढ़वा शहर एवं श्री बंधीधरनगर अनुमंडल में बकरीद की नमाज अदा करते इस्लाम धर्मावलंबी

केतार में नमाज के बाद एक-दूसरे को बधाी देते लोग तथा मेराल प्रखंड में बकरीद की नमाज अदा करते अकीदतमंद

श्री बंशीधर नगर

त्याग एवं बलिदान का त्योहार ईद उल अजहा (बकरीद) का त्योहार अनुमंडल मुख्यालय सहित आसपास के क्षेत्रो में आपसी भाईचारे के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण में शांतिपूर्ण तरीके से मनाया गया। ईद उल अजहा का नमाज गोसाईबाग स्थित ईदगाह में, बरडीहा जामा मस्जिद, कधवन कोइन्दी ईदगाह में, कुशदण्ड ईदगाह, नरही ईदगाह सहित अन्य ईदगाह एवं मस्जिदों में मुस्लिम समुदाय के लोगों ने नमाज अदा की। इस दौरान मुल्क में आपसी भाईचारा एवं अमन चैन की दुआ मांगी गई। साथ ही लोगों ने एक दूसरे को गले मिलकर ईद उल अजहा का मुबारकबाद भी दिया। इसके बाद लोगों ने कुर्बानी की रस्म अदा की। गोसाईबाग स्थित ईदगाह में मौलाना अब्दुल कादिर साहब ने नमाज अदा करायी। मौके पर सदर तोहिद खान, सलाहुद्दीन खान, आमीन खान, लालबाबू खान, हाजी नेजाम खान, तस्लीम खान, शमीम खान, शोएब आलम, तस्लीम खान, पप्पू खान, हैदर खान, आजाद खान, फुलटून खान, समसुल सिद्दीकी, महमूद आलम सीनियर, सद्दाम आलम, बाबू, सुहैल, शाहबाज, सलमान, अजहरुल सहित बड़ी संख्या में लोगों ने ईद उल अजहा की नमाज अदा की। इधर बरडीहा मस्जिद में ईद उल अजहा का नमाज हाफिज मनउवर अंसारी ने अदा करायी। इस अवसर पर सदर मुश्ताक अहमद शेख,डॉ ताहीर हुसैन, राहत हुसैन, उस्मान अंसारी, सलीम अंसारी, शमीम अख्तर, वकील अहमद, मकबूल अहमद, फिरोज आलम, राकिब अनवर, डॉ रिजवान अहमद, मसउवर अंसारी, अब्दुल हफीज, अमीर हसन अंसारी, अजीज, शाहिद, भानु, मकसूद, रागिब, शाहिद, कासिफ, रासिब,खालिद गुलाम, समसिर, असलम, अहमद सहित बड़ी संख्या में लोगों ने नमाज अदा की। ईद उल अजहा का त्योहार शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न कराने को लेकर एसडीपीओ प्रमोद केशरी, थाना प्रभारी नीतीश कुमार सिंह दल बल के साथ भ्रमण करते नजर आये।

केतार

केतार प्रखंड क्षेत्र ईद-उल अजहा का पर्व अकीदत से मनाया गया। मुस्लिम समुदाय के लोग बेलावार, नावाडीह व केतार ईदगाह के साथ मस्जिदों में बकरीद की नमाज सुबह 8 बजे के करीब अदा की। वहीं प्रखंड क्षेत्र के सभी इदगाहों पर नमाज उत्साह पूर्वक अदा कर अमन चैन की दुआएं मांगी गई एवं हजारों की संख्या में लोगों ने गले मिलकर एक दूसरे को मुबारकबाद पेश किया। वहीं मस्जिद के इमाम मौलाना नसीम अहमद द्वारा सभी कौम के भाइयों को माली कुर्बानी देने व मोहब्बत और अमन चैन के साथ इस मुल्क में जिंदगी गुजारने के लिए अल्लाह से सामूहिक दुआएं की गई। इस दौरान अंजुमन कमेटी ने आए हुए अतिथियों को मदरसा में ही शीरनी खाने को लेकर विशेष इंतजाम किया गया था। इस मौके पर केतार थाना प्रभारी संतोष कुमार रवि, पत्रकार सह सामाजिक कार्यकर्ता इम्तेयाज आलम, अंजुमन सदर शमीम अंसारी, अल्ताफ अंसारी, हकीमुदिन अंसारी, असीम अंसारी, मेराजुदीन अंसारी, जमायत अंसारी, अजीम अंसारी व अन्य शामिल थे।

मेराल

प्रखंड क्षेत्र में ईद-उल-अजहा का त्योहार शांति और सौहार्दपूर्ण वातावरण में मनाया गया। खराब मौसम के बावजूद मुस्लिम समुदाय के लोगों में उत्साह देखा गया। सुबह से ही ईदगाहों तथा मस्जिदों में लोग विशेष नमाज के लिए पहुंचने लगे थे, जहां सामूहिक रूप से नमाज अदा कर अमन चैन व तरक्की की दुआ मांगी गई। नमाज के बाद लोगों ने एक-दूसरे को गले मिलकर बकरीद की मुबारकबाद दी। बकरीद का नमाज शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने को लेकर थाना इंचार्ज अजीत कुमार, संजय कुमार कुशवाहा, सुरजीत चौधरी के नेतृत्व में पुलिस बल के जवानों की तैनाती की गयी थी। जिसकी मॉनिटरिंग बीडीओ प्रवेश कुमार साव व सीओ निकिता बाला कर रहे थे।

मवेशी कारोबारी से लूटपाट करने वाले गिरोह का एक सदस्य गिरफ्तार

दो देसी पिस्टल, एक मैगजीन, एक फरसा और 30 हजार रुपये बरामद

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। सदर थाना क्षेत्र के पिपरा पंचायत अंतर्गत फोरलेन टोल प्लाजा के पास मवेशी व्यापारी और चालक के साथ लूटपाट करने वाले गिरोह के एक सदस्य को गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार हंसकेर निवासी रवि तिवारी के पास से दो देसी पिस्टल, एक मैगजीन, एक फरसा और 30 हजार रुपये बरामद किया गया है। उक्त जानकारी एसडीपीओ अवध कुमार यादव ने सदर थाना में प्रेस वार्ता कर दी। उन्होंने बताया कि नावाडीह बाजार निवासी अजमेर आलम गढ़वा थाने में आवेदन देकर फोरलेन टोल प्लाजा के समीप लूटपाट मारपीट करने की प्राथमिकी दर्ज करायी थी। प्राथमिकी के आलोक में एसपी के निर्देश पर त्वरित कार्रवाई करते हुए एक टीम गठित की गयी जिसमें गढ़वा, मेराल थाना, चीनिया थाना और डंडई थाना को भी शामिल किया गया। गढ़वा की कोरवाडीह में चेकिंग के दौरान एक ब्लैक स्कॉर्पियो से एक युवक को पकड़ा गया। पूछताछ के दौरान युवक ने अपना नाम रवि तिवारी बताया जब उसकी तलाशी ली गई उसके पास से दो देसी पिस्तौल एक मैगजीन पांच जिंदा कारतूस 30,000 नगद, एक फरसा बरामद किया गया। एसडीपीओ ने बताया कि गिरफ्तार रवि से पुलिस सख्ती से पूछताछ की तो उसने बताया कि लोटो निवासी अतुल धर दुबे के कहने पर चार साथियों के साथ टोल प्लाजा के पास दो पिकअप पर लादे मवेशी को रोका और मवेशी कारोबारी और चालक से पैसे की मांग की। उस दौरान मवेशी कारोबारी ने अतुल धर दुबे के खाते में 55,000 और सौरभ सिंह के खाते में 25,000 रु. डाले और 20,000 नगद दिया था। उसने बताया कि रात के करीब 3:00 बजे अतुल धर दुबे को किसी ने सूचना दी थी कि दो पिकअप पर 16 मवेशी लदे हुए हैं जो फोरलेन से जा रहे हैं। अतुल ने उसकी सूचना हम लोगों को दी। उसके बाद अतुल धर दुबे, रवि तिवारी, अनजन धर दुबे, सौरव कुमार सिंह सहित अन्य आरोपियों ने वहां पहुंचकर चालक के साथ मारपीट की एवं पिस्टल के दम पर पैसे की लूटपाट की। एसडीपीओ ने बताया कि पुलिस चेकिंग के दौरान जब स्कॉर्पियो पकड़ा गया तो उसमें रवि के साथ अतुल धर दुबे एवं अंजन धर दुबे शामिल थे। जो पुलिस को देख कर फरार हो गए। एसडीपीओ ने बताया कि घटना में शामिल अन्य अपराधियों की भी गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है। बहुत जल्द उक्त लोगों की भी गिरफ्तारी कर ली जाएगी। वहीं रवि के निशानदेही पर रवि के पास से बरामद पिस्टल की खरीद बिक्री के भी पुलिस छानबीन कर रही है। बहुत जल्द उक्त करोबारी को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। प्रेस वार्ता में थाना प्रभारी केके साहू, पुलिस अवर निरीक्षक प्रवीण कुमार, अशोक कुजुर, हित नारायण महतो, दिनेश मरांडी सहित अन्य लोग शामिल थे।

माता-पिता की सेवा से होते हैं सभी मनोरथ पूर्ण : जीयर स्वामी

बंशीधर नगर (आजाद सिपाही)। माता-पिता की सेवा मानव का धर्म है। अपनी सेवा से माता-पिता को संतुष्ट करने वाला 33 कोटि देवताओं को भी संतुष्ट कर लेता है। माता-पिता की सेवा नहीं करने वाले साधक से देवता भी प्रसन्न नहीं होते। माता-पिता देव के समान होते हैं। श्री जीयर स्वामी ने श्रीमद् भागवत कथा के दरम्यान कहा कि भगवान कपिल अपने पिता कर्दम ऋषि के जंगल में जाने के बाद माता देवहूति की सेवा कर रहे थे। स्वामी जी ने कहा कि माता-पिता की सेवा सबसे बड़ा धर्म है। उन्होंने कहा कि घर में माता-पिता रूपी तीर्थ की उपेक्षा कर तीर्थाटन करना मानव के लिये कल्याणकारी नहीं है। शास्त्रों में माता-पिता का स्थान सर्वोच्च है। माता जन्म देने के साथ ही प्रथम गुरु का कार्य करती हैं। पिता पालनकर्ता होता है। इनसे पोषित होने के बाद ही हम दुनिया को जानते हैं। स्वामी जी ने कपिल जी और माता देवहूति संवाद की चर्चा करते हुए कहा कि इन्द्रियों के भटकाव को रोकना चाहिए। अच्छे आचरण, अच्छे विचार और अच्छे कार्य को आत्मसात करना चाहिए। कर्म और आचरण की व्याख्या करते हुए बोले कि दूर से गंगाजल लाकर अच्छा कार्य किया, लेकिन उसमें एक बूंद शराब डाल दिया तो कर्म और व्यवहार दोनों निरर्थक हो गये। आचरण विहीन व्यक्ति का कार्य वही है। मनुष्य के जीवन में आचरण उत्तम होना चाहिए। उतम आचरण से हीन व्यक्ति को वेद भी शुद्ध नहीं कर सकता। काम, क्रोध और लोभ को जीवन की साधना में बाधक बताते हुए कहा कि ये सुन्दर भोजन में कंकड़ जैसे बाधक होते हैं। ये मानव जीवन में घुन के समान हैं, जो जीवन का विनाश कर देते हैं। स्वहित में इनका त्याग करना चाहिये। यदि लोभ और क्रोध, व्यक्ति समाज और राष्ट्रहित में है तो वह मान्य है। धर्मपत्नी की चर्चा करते हुए कहा कि पत्नी को चंद्रमुखी होनी चाहिए। चंद्रमुखी से तात्पर्य सुन्दरता से नहीं, बल्कि ताप से तपित और श्रम से थके मनुष्य को घर में आने पर शांति और शीतलता प्रदान करने से है। यही गृहस्थ धर्म की मर्यादा है। पति को भगवान का स्वरूप मानना चाहिए।

लिओ क्लब ऑफ गढ़वा ज्ञान गंगा के नये सत्र 2023-24 का चुनाव संपन्न

अध्यक्ष तेजस अग्रवाल और उपाध्यक्ष बने अतुल दुबे

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। लिओ क्लब ऑफ गढ़वा ज्ञान गंगा के नए सत्र 2023/24 का हुआ चुनाव जो लायंस क्लब ऑफ गढ़वा ग्रीन की देखरेख में संपन्न हुआ।

मौके पर लायंस ग्रीन के पूर्व अध्यक्ष रवींद्र जायसवाल, संतोष अग्रवाल, लायंस ग्रीन के कोषाध्यक्ष नीरज कुमार, सचिव हर्ष अग्रवाल, लिओ एडवाइजर अमित कुमार, पूर्व सचिव विनय कशयप और लिओ अनुप कुमार ठाकुर के द्वारा सर्वसम्मति से

लिओ तेजस अग्रवाल को अध्यक्ष बनाया गया, उपाध्यक्ष अतुल दुबे, सचिव मानष अग्रवाल, उपसचिव हर्ष कश्यप, कोषाध्यक्ष अंकुर दुबे को बनाया गया तथा अनुप कुमार ठाकुर को पीआरओ, टेमर अनमोल अग्रवाल, बोर्ड ऑफ डायरेक्टर गौरव केशरी, श्रीकांत केशरी, जाहिर अंसारी, अमानुदीन अंसारी, प्रदिप्ता आर्या, पियुस सोनी, सार्थक अग्रवाल सदस्य के रूप में शामिल हैं।

इस चुनाव में महत्वपूर्ण योगदान लायंस क्लब ऑफ गढ़वा ग्रीन के सभी सदस्यों का रहा। उनकी ओर से सभी लिओ सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई दी गयी।

पूर्व लिओ एडवाइजर अमित कुमार ने बताया कि लिओ क्लब ऑफ गढ़वा ज्ञान गंगा ग्रीन का एक अंग है, जो सामाजिक कार्यों के बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेता है।

रविन्द्र जयसवाल ने बताया कि लिओ ज्ञान गंगा अपने सामाजिक कार्यों में बेहतर प्रदर्शन करता है जिससे इनका अपने जिला ही नहीं मल्टिपल तक भी अलग पहचान है।

हर्ष अग्रवाल ने बताया कि आज के बच्चे में इस प्रकार के सामाजिक कार्यों में हिस्सा लेना बहुत ही सराहनीय काम है, जो लगातार छह वर्ष से करते आ रहे हैं और आगे भी निरन्तर जारी रहेगा।

भंडरिया प्रखंड सह अंचल कार्यालय में जनता अधिकार दिवस का आयोजन

भंडारिया (आजाद सिपाही)। उपायुक्त शेखर जमुआर के निर्देश पर भंडरिया प्रखंड सह अंचल कार्यालय में सीओ मदन माली की अध्यक्षता में जनता अधिकार दिवस का आयोजन किया गया। इस आयोजन में जमीन से संबंधित मृतक के परिवार को चल अचल संपत्ति एवं पीडीएस से संबंधित कुल 15 आवेदन प्राप्त हुए इन मैं से 7 आवेदन का ऑन द स्पॉट निष्पादन किया गया शेष आवेदन पर जल्द ही सुनवाई कर दिया जाएगा इसके साथ ही बरगढ़ प्रखंड के 7 परिवार को वन अधिकार अधिनियम के तहत वन पट्टा का वितरण किया गया इस मौके पर प्रखंड प्रमुख रुकमणी कुमारी उप प्रमुख शारदा देवी कर्मी देवी संदीप कुमार गुप्ता अन्य लोग उपस्थित थे।

पौधरोपण के लिए पर्यावरण परिवार ने किया स्थल का निरीक्षण

गढ़वा (आजाद सिपाही)। फलदार, छायादार और ईमारती सहित विभिन्न प्रजातियों के पौधरोपण के लिए पर्यावरण परिवार ने स्थल निरीक्षण किया। इस दौरान शहर के कचहरी रोड स्थित नवादा क्षेत्र के श्री जानकी बाग में 250 पौधा लगाने का निर्णय लिया गया है।

इस संबंध में जानकारी देते हुए पर्यावरण परिवार के अध्यक्ष डॉ. पतंजलि केसरी ने बताया कि पर्यावरण संरक्षण के लिए श्री जानकी बाग में विभिन्न प्रकार के 250 पौधे लगाने का निर्णय लिया गया है। पौधरोपण से प्रदूषण नियंत्रण की दिशा में साकारात्मक पहल

तो होगा ही, साथ ही साथ सुबह और शाम में बाग घुमनेवालों को भी इसका लाभ मिलेगा। कुछ ही समय में पौधे पेड़ बन जाएंगे और लोगों को छाया के साथ फल भी मिलेगा। इसके अलावा बेशकीमती लकड़िया भी प्राप्त होंगी। उन्होंने बताया कि भरठिया गांव में पौधरोपण के लिए 300 गड्ढे बनाये जा चुके हैं। 30 जून को उसमें पौधरोपण किया जाएगा। सचिव नितिन तिवारी ने कहा कि पर्यावरण और मानव समाज के बीच अन्योनाश्रय संबंध है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य अपने जन्मदिन, शादी सालगिरह सहित अन्य अवसरों पर पौधारोपण कर अपने समय को यादगार बनायें।

मौके पर नीरज श्रीधर स्वर्गीय, अमित कुमार, विशेश्वर चंद्रवंशी, सुदामा बिंद, सुनील कुमार बिंद, आनंद कुमार, मोदी चंद्र बिंद, अरविंद कुमार, लखन बिंद,संतोष कुमार सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

बोलेरो वाहन के धक्के से महिला की मौत

धुरकी (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र के रकशी गांव स्थित अकेलवा टोला निवासी एक महिला की मौत बोलेरो वाहन के धक्के से हो गई। बताया जाता है कि इलाज के दौरान महिला की मौत गढवा में हुई। मिली जानकारी के अनुसार रकशी गांव के अकेलवा टोला निवासी अमरनाथ यादव की पत्नी फुलवंनती देवी (35) अपने पुत्र के साथ मोटरसाइकिल से जा रही थी उक्त महिला स्वतः मोटरसाइकिल से गिर गयी थी। पीछे से आ रहा बोलरो वाहन उक्त महिला पर चढ़ गया। आनन फानन में इलाज के लिए उसे गढ़वा ले जाया गया, जहां महिला की मृत्यु हो गयी। बोलरो वाहन रकशी के कृष्णा बेदिया का बताया जाता है। इस संबंध में पूछे जाने पर पर थाना प्रभारी सदानन्द कुमार ने कहा कि पुलिस मामले की जांच कर रही है। दोषियों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की जायेगी।

बैठक : रमकंडा प्रखंड की चेटे पंचायत से 1 जुलाई को होगा जल संरक्षण अभियान का शुभारंभ

650 एकड़ भूमि पर किया जायेगा पौधरोपण

मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर होंगे कार्यक्रम के मुख्य अतिथि

उपायुक्त ने पदाधिकारियों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग कर दिए आवश्यक दिशा निर्देश

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। जिला में भूगर्भ जल स्तर में लगातार कमी होते जा रहा है। जलस्तर कम हो जाने के कारण जिले को पेयजल की भीषण समस्या से गुजरना पड़ा है। इस समस्या का एक प्रमुख कारण विगत वर्षों में कम बारिश होना तथा दूसरा कारण बारिश के जल का संरक्षण नहीं हो पाना है। जिले को जल संकट की समस्या के समाधान हेतु दिनांक 01 जुलाई 2023 (शनिवार) को जल संरक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ रमकंडा प्रखंड के चेटे पंचायत परिसर में पूर्वाह्न 10 बजे से किया जाएगा। मुख्य अतिथि के रूप में मिथिलेश कुमार ठाकुर, मंत्री, पेयजल एवं स्वच्छता, विभाग, झारखंड होंगे। इस कार्यक्रम के दौरान सम्पूर्ण जिला में जल संग्रहण की योजना यथा-सॉकपीट, वर्मी कम्पोस्ट, रेन वाटर हार्वेस्टिंग, पंचायत भवन में पौधरोपण आदि के साथ-साथ बिरसा हरित ग्राम योजना के तहत वृक्षारोपण की योजना वृहत पैमाने पर प्रारंभ किया जाएगा। साथ ही नई योजनाओं की स्वीकृति प्रदान की जाएगी।

इस संबन्ध में उपायुक्त शेखर जमुआर द्वारा जिला एवं प्रखंड स्तर के पदाधिकारियों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। उन्होंने बताया कि गढ़वा जिला अंतर्गत सभी प्रखंडों में दिनांक 01 जुलाई को नई योजना प्रारंभ करने हेतु बिरसा हरित ग्राम योजना, रेन वाटर हार्वेस्टिंग, वर्मी कंपोस्ट, सोखा गड्ढा एवं पंचायत सचिवालय में वृक्षारोपण करने आदि की स्वीकृति प्रदान की जाएगी। इसके लिए गढ़वा जिला अंतर्गत कुल 189 पंचायतों हेतु 3581 योजनाओं की स्वीकृति प्रदान की जाएगी। 01 जुलाई को 650 एकड़ भूमि पर पौधरोपण किया जायेगा, इसके अतिरिक्त जल संचयन की विभिन्न योजना के तहत लगभग 2500 योजनाओं की शुरुआत के साथ-साथ कुल 142 पंचायत भवन परिसर में पौधरोपण कार्य किया जाना है। बताया गया कि जल संरक्षण हेतु सभी आंगनबाड़ी केंद्र, सभी पीएचसी, सभी विद्यालय में भी पौधरोपण करने हेतु संबंधित विभाग के पदाधिकारी को निर्देश दिया गया है। उपायुक्त द्वारा आम लोगों से अपील की गई है कि सरकारी परिसर में लगाये गये पौधे को बचाने में अपनी भागीदारी सुनिश्चित की जाये ताकि भविष्य में जल संकट का समाधान हो सके।

सगमा के युवक की आंध्रप्रदेश में ट्रेन से कट कर मौत

सगमा (आजाद सिपाही)। धुरकी थाना क्षेत्र के सगमा प्रखंड के सोनडीहा गांव निवासी मजदूर विनीत राम की मृत्यु ट्रेन से कटकर आंध्रप्रदेश के विजयवाड़ा में हो गयी। इसकी सूचना के बाद परिजनों का रोरोकर बुरा हाल हो गया है। परिजनों से प्राप्त जानकारी के अनुसार सोनडीहा गांव निवासी मजदूर विनीत राम पिता देवकुमार राम बीते 28 जून को बीरबल गांव निवासी लालमुनि राम के साथ कन्याकुमारी मजदूरी के लिए घर से निकला था, मगर घर से निकलने के तीसरे दिन मृत्यु की खबर सुनकर पूरे परिवार में शोक की लहर देखी जा रही है। परिजनों ने उपायुक्त गढ़वा से किसी भी तरह से शव को सोनडीहा मंगवाने की मांग की है।

सर्पदंश से युवक की मौत, परिजनों ने सीओ से की मुआवजा की मांग

रंका (आजाद सिपाही)। रंका प्रखंड अंतर्गत बाहाहारा पंचायत के ग्राम गासेदाग निवासी स्व. गिरधारी भुईयां के पुत्र विजय भुईयां उम्र लगभग 25 वर्ष को बीती रात्रि चार बजे भोर में करैत सांप ने डंस लिया। जिससे उसकी हालत खराब हो गयी। सर्पदंश से पीड़ित को परिजन झाड़-फूंक कराने लगे। हालत बिगड़ते देख परिजन रंका रेफरल अस्पताल छह घंटे विलम्ब से लेकर पहुंचे। सूचना मिलते के साथ ही चिकित्सक इलाज करने में जुट गए। उपचार करने के दौरान मरीज ने दम तोड़ दिया। चिकित्सकों ने परिजनों पर अस्पताल देर से लाने का आरोप लगाया। परिवार जनों ने रंका अंचलाधिकारी से मुआवजा देने की मांग की। जिसमें अंचलाधिकारी ने कहा कि थाना में प्राथमिकी दर्ज कराकर मृतक का पोस्टमार्टम रिपोर्ट सरकार को भेजा जाएगा, तभी सरकारी मुआवजा मिल सकता है। मृतक के पोस्टमार्टम हेतु प्राईवेट गाड़ी से गढ़वा अंत्यपरीक्षण हेतु भेजने के लिए झारखंड सरकार के पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री सह गढ़वा विधायक मिथिलेश कुमार ठाकुर के द्वारा दो हजार रुपए तत्काल सहयोग राशि परिजनों को प्रदान की गयी और आगे भी सहयोग करने का आश्वासन दिया गया। इस अवसर पर झामुमो रंका युवा प्रखंड अध्यक्ष दीपक कुमार सोनी, सोनदाग पंचायत अध्यक्ष संतोष ठाकुर सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

झारखंड के मुख्य सचिव ने किया मैक्लुस्कीगंज में पर्यटन स्थलों का निरीक्षण

पर्यटन के विकास को लेकर होगा हरसंभव प्रयास : सुखदेव सिंह

आजाद सिपाही संवाददाता

खलारी। झारखंड सरकार के मुख्य सचिव सुखदेव सिंह और पर्यटन, कला, संस्कृति, खेलकूद और युवा कार्य विभाग के सचिव मनोज कुमार गुरुवार को मैक्लुस्कीगंज में पर्यटन की स्थिति से रूबरू होने पहुंते थे। रांची जिला के खलारी प्रखंड अंतर्गत मैक्लुस्कीगंज विश्व प्रसिद्ध एंग्लो इंडियन गांव है। दोनों अधिकारी सबसे पहले टूरिस्ट इंफार्मेशन सेंटर स्थित ड्रीम डेस्टीनेशन पहुंचे। इसके बाद डेगा डेगी नदी, राणा काटेज, जीरो माइल्स, सर्वधर्म स्थल दुल्ली व नकटा पहाड़ गये। डेगा डेगी नदी जाने के क्रम में सड़क की बदहाल स्थिति देख सीधे संबंधित अधिकारी को फोन लगाकर बात की। डेगा डेगी नदी के निकट एक वाच टावर लगवाने का निर्देश दिया, ताकि आने वाले पर्यटक प्रकृति का खूबसूरत नजारा अच्छी तरह देख सकें। वहां से राणा काटेज पहुंचे जहां

मैक्लुस्कीगंज में पर्यटन की स्थिति से रूबरू होते झारखंड के मुख्य सचिव सुखदेव सिंह, सचिव मनोज कुमार व अन्य।

दीपक राणा ने अपना पूरा परिसर घुमाया। इसके बाद वे जीरो माइल्स रिसोर्टस पहुंचे। यहां बुके देकर उनका स्वागत किया गया। यहां भोजन की व्यवस्था की गयी थी। वहां, मुख्य सचिव ने जीरो माइल्स की सुविधाओं की सराहना की। इसके बाद दुल्ली स्थित सर्वधर्म स्थल देखने पहुंचे। यहां स्थित मंदिर, मजार, अर्द्धनिर्मित चर्च एवं गुरूद्वारा का निरीक्षण किया।

मुख्य सचिव एवं सचिव ने सर्वधर्म स्थल की देखरेख करने वाले स्थानीय ग्रामीण श्रवण यादव से बात की। स्थानीय लोगों ने सर्वधर्म स्थल के बारे में बताया। मुख्य सचिव ने अधूरे चर्च व गुरुद्वारा सहित मंदिर, मजार व पूरे परिसर को दुरुस्त कराने की इच्छा जताई। इस बीच रास्ते में ही मुख्य सड़क किनारे स्थित वन विभाग के जर्जर हो चुके गेस्ट हाउस को देखने भी गए। इसके बाद नकटा पहाड़ पहुंचे। नकटा पहाड़ तक पक्की सड़क नहीं होने के कारण मुख्य सड़क किनारे ही कार छोड़ बोलेरो से नकटा पहाड़ तक पहुंचे। मुख्य सचिव व पर्यटन सचिव नकटा पहाड़ के उपर चढ़ने लगे। साथ चल रहे पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों व सुरक्षा गार्ड्स भी पहाड़ी पर साथ चढ़ रहे थे। पर ऊंची चढ़ाई और जोखिम बताकर चढ़ाई के बीच से ही दोनों को लौटा लिया गया। फिर नीचे से ही पहाड़ी का नजारा लिए। इस बीच पहाड़ के शिखर से लौटी कुछ ग्रामीण किशोरियों व युवतियों से उपर के स्थिति के बारे में पूछे। मुख्य सचिव व पर्यटन सचिव मैक्लुस्कीगंज में पर्यटन स्थलों की सुविधाओं को देख नाराजगी जाहिर की। पर्यटन विभाग के अधिकारियों को फोन पर कहा कि एक टीम बनाकर मैक्लुस्कीगंज के एक-एक पर्यटन स्थल का मुआयना करें और योजना बनाकर सुविधाएं सुनिश्चित कराएं। जाते समय मुख्य सचिव ने कहा कि उन्होंने आवश्यक निर्देश दिया है। मैकलुस्कीगंज में पर्यटन के लिए जो कुछ हो सकेगा किया जायेगा। राज्य के मुख्य सचिव व पर्यटन सचिव के दौरे से यह तय हो गया है कि मैक्लुस्कीगंज में पर्यटन के दिन बहुरने वाले हैं। इस मौके पर खलारी के वरीय पुलिस उप अधीक्षक अनिमेष नैथानी, खलारी के अंचल अधिकारी शिशुपाल आर्य, खलारी थाना प्रभारी पुनि फरीद आलम और मैकलुस्कीगंज थाना प्रभारी राणा जंगबहादुर सिंह भी उपस्थित थे।

पर्यटन स्थल के रूप में विकसित होगा खूंटी का रंगरोड़ी धाम, अर्जुन मुंडा ने की पहल

आजाद सिपाही संवाददाता

खूंटी। प्रखंड के प्रसिद्ध धार्मिक और पर्यटनस्थल रंगरोड़ी धाम के दिन अब बहुरने वाले हैं। केंद्रीय जनजातीय मामलों के मंत्री और खूंटी के सांसद अर्जुन मुंडा के प्रयास से इस शिवधाम का विकास किया जाएगा। इसे लेकर डीडीसी नीतीश कुमार सिंह और जिला सांसद प्रतिनिधि मनोज कुमार ने गुरुवार को रंगरोड़ी धाम का दौरा किया और स्थानीय पंचायत प्रतिनिधियों और ग्रामीणों के साथ बातचीत की। जिला सांसद प्रतिनिधि ने कहा कि रंगरोड़ी धाम के विकास में सांसद निधि के अलावा केंद्र सरकार भी सहयोग करेगी। उन्होंने कहा कि रंगरोड़ी धाम का न सिर्फ धार्मिक महत्व है, बल्कि यह एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल भी है, जहां हर दिन सैलानी पहुंचते हैं। उन्होंने कहा कि गुफा में विराजमान स्वयंभू शिवलिंग के प्रति लोगों में अटूट श्रद्धा है। विकास होने से इस क्षेत्र में सैलानियों और भक्तों का आवागमन बढ़ेगा और स्थानीय लोगों को रोजगार मिलेगा।

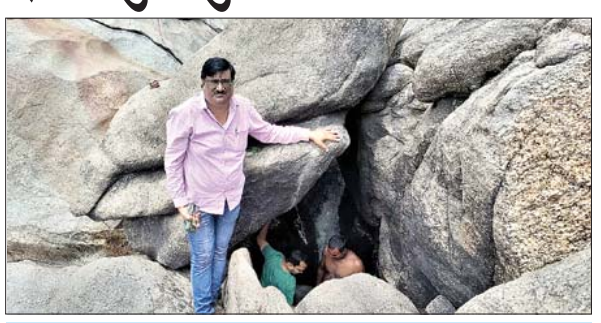

अनुपम है रंगरोड़ी धाम की प्राकृतिक सुंदरता : डीडीसी

वहीं, रंगरोड़ी की सुंदरता को देखकर डीडीसी नीतीश कुमार सिंह ने कहा कि वाकई यहां की प्राकृतिक सुंदरता अनुपम है। गुफा में उतरकर शिवलिंग का दर्शन करना भी काफी सुखद है। उन्होंने कहा कि रंगरोड़ी धाम को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा। इससे सैलानियों की संख्या में बढ़ोतरी होगी और स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर मिलेंगे। वहीं, मुखिया भदवा उरांव ने कहा कि क्षेत्र काफी पिछड़ा है लेकिन काफी मनोरम है। यही कारण है कि सैलानी यहां खींचे चले आते हैं। जबकि प्रखंड प्रमुख छोटराय मुण्डा ने कहा कि समाज और व्यक्ति का विकास तब होता है जब क्षेत्र विकसित होता है। पर्यटन को बढ़ावा मिलने से सड़कें सुधरेंगी और आवागमन होगा, तो स्थानीय लोगों को रोजगार मिलेगा। उन्होंने रंगरोड़ी के विकास के लिए पहल किये जाने पर अर्जुन मुंडा के प्रति आभार व्यक्त किया। मौके पर ग्राम प्रधान मड़की पाहन, बिशु पाहन, सिरी महतो आदि मौजूद थे।

उन्होंने कहा कि केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुडा ने इसके विकास का बीड़ा उठाया है। विकास की योजना बनाने के लिए ही उप विकास आयुक्त ने इस दिन रंगरोड़ी धाम का दौरा कर स्थानीय लोगों से बातचीत की।

पिपरवार में अकीदत के साथ मनी बकरीद मस्जिदों और इदगाह में उमड़ी भारी भीड़

आजाद सिपाही संवाददाता

पिपरवार। सीसीएल पिपरवार कोयलांचल और आस पास के ग्रामीण इलाको में गुरुवार को ईद-उल-अजहा (बकरीद) का त्योहार आपसी सौहार्द और सादगी के साथ मनायी गई। बकरीद की नमाज अदा करने को लेकर कोयलांचल क्षेत्र के सभी मस्जिदों और ईदगाह में भारी भीड़ देखी गई। क्षेत्र के सभी मस्जिदो और ईदगाह में अपने निर्धारित समय पर नमाज अदा की गई। बचरा जामा मस्जिद में सुबह सात बजे बकरीद की नमाज अदा की गई। बचरा जामा मस्जिद के ईमाम हाफिज मुमताज ने नमाज पढ़ायी, जिसके बाद क्षेत्र, राज्य एंव देश की खुशहाली और आपसी भाईचारगी की दुआ मांगी गई। वहीं, बहेरा, कल्याणपूर, न्यू मंगरदाहा, राय और पुरानीराय में भी अकीदत के साथ बकरीद की नमाज अदा की गई। इसके बाद लोगों ने एक-दूसरे से गले मिलकर त्योहार की बधाई दी। बच्चों में त्योहार का उत्साह देखा गया। इधर, नमाज के बाद लोगों ने अपने-अपने घरों में बकरे की कुर्बानी दी। दूसरी ओर, त्योहार को लेकर स्थानीय पिपरवार पुलिस की ओर से सुरक्षा का पुख्ता इंतेजाम किये गये थे। सभी मस्जिदों व ईदगाह में पुलिस बल के जवानों को तैनात किया गया था। पिपरवार थाना प्रभारी गोविंद कुमार खुद दंडाधिकारी के साथ पूरे क्षेत्र का भ्रमण कर सुरक्षा व्यवस्था की जानकारी ले रहे थे। पिपरवार क्षेत्र के सभी जगहों पर आपसी भाईचारगी व शांतिपूर्ण माहौल मे बकरीद का त्योहार मनाया गया। इधर बचरा जामा मस्जिद के ईमाम हाफिज मुमताज आलम ने बकरीद की नमाज के बाद अपने तकरीर में कहा कि जकात अदा करने वाले सभी मुस्लमानों पर कुर्बानी फर्ज है। कहा कि बीमार, लाचार और माली हालात खराब रहने वाले यदि कुर्बानी देने से वंचित रहे तो वह गुनाह के हकदार नहीं होते हैं, लेकिन यदि मालदार होने के बावजूद जो कुर्बानी नहीं देता है वो गुनाह का हकदार होता है। इसलिए जकात अदा करने वाले प्रत्येक मुस्लमानों पर कुर्बानी फर्ज है। उन्होंने कोयलांचल क्षेत्र के सभी लोगों को ईद-उल-अजहा की बधाई दी। साथ ही राज्य एंव देश की खुशहाली के लिए दुआ मांगा।

तमाड़-बुंडू में अकीदत के साथ मनी बकरीद, मांगी अमन-चैन की दुआ

आजाद सिपाही संवाददाता

बुंडू/तमाड़/रड़गांव। बुंडू में गुरुवार को कुर्बानी का त्योहार ईद-उल अजहा (बकरीद) हर्षोल्लास एवं शांति पूर्वक मनाया गया। जामा मस्जिद में सुबह 7.30 बजे नमाज अदा की गई। जामा मस्जिद में ईद उल अजहा के नमाजियों को अंजुमन मुस्लेमीन कमेटी के अध्यक्ष मोहम्मद खलील की अध्यक्षता में मोजिन मोहम्मद शमीम ने नमाज अदा करवाया। इसके बाद लोगों ने एक-दूसरे से गले मिलकर बकरीद की मुबारकबाद दी। जामा मस्जिद में मोहम्मद शहीद, मोहम्मद कमरुज्जमा, मोहम्मद अशरफ, मोहम्मद अमजद खान आदि मौजूद थे। इस दौरान लोगों ने दर्जनों बकरों की कुर्बानी दी और एक-दूसरे को सेवइयां खिलाकर मुंह मीठा कराया। दूसरी ओर, तमाड़ प्रखंड के रडगांव के जमा मस्जिद में शांतिपूर्ण ईद-उल-अजहा की नमाज अदा की गयी। रडगांव के दोनों मस्जिदों में नमाज अदा की गयी। वहीं, तीन दिनों से हो रही बारिश को देखते हुए ईदगाह में नमाज अदा नहीं हुई, बल्कि रडगांव मुस्लिम कमेटी ने निर्णय लिया कि नमाज मस्जिदों में ही किया जाय, ताकि नमाजियों को परेशानी ना हो। इसके बाद सभी मुस्लिम भाइयों ने अपने-अपने घरों में शांति से कुर्बानी की।

खूंटी जिले में हर्षोल्लास के साथ मना ईद-उल-अजहा का त्योहार

आजाद सिपाही संवाददाता

मस्जिदों में पढ़ी गयी विशेष नमाज, मांगी खुशहाली एवं अमन-चैन की दुआ

खूंटी। जिला मुख्यालय सहित सभी प्रखंड और ग्रामीण इलाकों में त्याग, बलिदान और प्रेम का त्योहार ईद-उल-अजहा (बकरीद) गुरुवार को आपसी भाईचारा के साथ सौहार्द्रपूर्ण माहौल में मनाया गया। जिला मुख्यालय में करी रोड स्थित जामा मस्जिद, जन्नतनगर स्थित मदीना मस्जिद और पाशा कॉलोनी स्थित मस्जिद ए जोहरा में सुबह ईद-उल-अजहा की विशेष नमाज अदा की गई। नमाजियों ने खूंटी सहित देश में खुशहाली और अमन-चैन की दुआ मांगी। नमाज के बाद लोग कब्रिस्तान गए जहां अपने पुरखों और सगे संबंधियों की कब्र पर फातिहा पढ़ा गया। ज्ञात हो कि बकरीद मुस्लिम समाज का दूसरा सबसे बड़ा त्योहार है। इससे ईद-उल-अजहा या कुर्बानी का त्योहार भी कहा जाता है। इस दिन मुस्लिम समुदाय के लोग ईदगाह और मस्जिदों में जमात के साथ विशेष नमाज अदा करते हैं। इस्लाम धर्म की मान्यता के अनुसार पैगंबर हजरत इब्राहिम अलैह इस्सलाम ने कुर्बानी देने की प्रथा की शुरूआत की थी। तभी से इस परंपरा को निभाया जा रहा है। यह पर्व मुस्लिमों के लिए बहुत खास है। इस पर्व से जुड़ी कई मान्यताएं भी हैं। इस्लाम के अनुसार हजरत इब्राहिम अलैह इस्सलाम अल्लाह के पैगंबर थे। ऐसा कहा जाता है कि एक बार अल्लाह ने हजरत इब्राहिम अलैह इस्सलाम से अपने सबसे प्यारी चीज को कुर्बान करने का हुक्म दिया। पैगंबर साहब को अपना एकलौता बेटा इस्माइल सबसे अधिक प्रिय था। खुदा के हुक्म के अनुसार उन्होंने अपने प्रिय इस्माइल को कुर्बान करने का मन बना लिया। इस बात से इस्माइल भी खुश थे कि वह अल्लाह की राह पर कुर्बान होगा। जब हजरत इब्राहिम अलैह इस्सलाम अपने बेटे इस्माइल अलैह इस्सलाम को कुर्बानी देने लगे, तो उसकी जगह एक दुंबा कुर्बान हो गया। इस तरह इस्माइल बच गए तभी से हर साल पैगंबर साहब द्वारा दी गई कुर्बानी की याद में बकरीद मनाई जाती है। इस्लाम के अनुसार जिस व्यक्ति के पास पैसा न हो या उस पर किसी तरह का कोई कर्ज हो तो वह कुर्बानी नहीं दे सकता। कुर्बानी देनेवाले पर किसी तरह का कोई कर्ज नहीं होना चाहिए, तभी उसकी कुर्बानी मानी जाती है। जिस पशु की कुर्बानी दी जा रही है वह पूरी तरह से स्वस्थ होना चाहिए। उसके मांस के तीन हिस्से करने जरूरी होते हैं। इनमें से एक हिस्सा खुद के इस्तेमाल के लिए रखा जाता है, दूसरा गरीबों के लिए और तीसरा संबंधियों व पड़ोसियों में बांटा जाता है।

हर्षोल्लास के साथ मनायी गयी बकरीद

इचागढ़ (आजाद सिपाही)। प्रखंड के गुदडी टोला वनडीह और गौरांगकोचा में हर्षोल्लास के साथ भाईचारा का पर्व बकरीद मनाया गया। गुरुवार की सुबह सात बजे बनडीह ईदगाह में बकरीद की नमाज अदा कर लोगों ने एक-दूसरे से गले मिलकर बकरीद की बधाई दी। इस दौरान

बकरे की कुर्बानी देकर ईबादत पूरी की गई और गरीबों के साथ खाना बांटा गया। इस मौके पर इमाम हुसैन कमाल अंसारी, बीडीओ कीकू महतो, थाना प्रभारी गौरव मिश्रा, एएसआई मलिंद्र सिंह, मुस्ताक अंसारी, सिद्दिक अंसारी, मोकिम खान, सेराज अंसारी, खलील अंसारी आदि मौजूद थे। वहीं, ईचागढ़ पुलिस की ओर से त्योहार के मदेनजर सुरक्षा के पुखता इंजाम किये गये थे।

डेहकेला में ससनदीरी में तोड़फोड़, आदिवासी समाज के दो गुटों में बनी टकराव की स्थिति

खूंटी (आजाद सिपाही)। मुरहू के डेहकेला गांव निवासी मथुरा कंडीर द्वारा अपने वंश के खतियानी रैयती जमीन पर डेढ़ माह पूर्व यानी 15 मई को पूर्वजों का पारंपरिक स्मारक संस्कार (दिरी चपि) संपन्न कर पूर्वजों का जो स्मारक पत्थर (ससन दिरि) स्थापित किया था, उसे गांव के ही दूसरे पक्ष के आदिवासी समाज के लोगों ने बुधवार को तोड़फोड़ कर नष्ट कर दिया। इस संबंध में मथुरा कंडीर ने मुरहू थाने में एक लिखित शिकायत देकर आरोपितों के विरुद्ध सख्त कानूनी कार्रवाई करने और नष्ट किए गए उनके पूर्वजों के स्मारक पत्थर को पुनः विधि सम्मत स्थापित कराने की मांग की है। अपनी शिकायत में उसने कहा है कि बुधवार दोपहर 2.30 ढाई बजे विनय ओड़ेया, मुचिराय ओडेया, राजेन ओडेया जगरनाथ मुंडा, करमू ओड़ेया सहित उनके परिवार के लगभग दो दर्जन महिला-पुरुष बंदूक, कुल्हाड़ी, घाना (बड़ा हथौड़ा) फरसा, लाठी-डंडा, तीर-धनुष आदि हथियारों से लैस होकर उनके घर-आंगन में घुस आए और भद्दी भद्दी गालियां देते हुए घर के पिछवाड़े में स्थापित पूर्वजों के स्मारक पत्थरों (ससन दिरि) को तोड़कर पूरी तरह से नष्ट कर डाला। इसके साथ ही उसी स्थल पर गाड़े गए धार्मिक सरना झंडा को भी काटकर गिरा दिया। उसने कहा कि स्मारक संस्कार के बाद से ही वे लोग बार-बार जान से मारने व स्मारक पत्थर (ससन दिरि) तोड़ने की धमकी दे रहे थे। उसने कहा कि गांव में हमें नीच वंश व बाहरी कहकर ऐसा बर्ताव किया जाता है। वे हमें गांव से भगाकर हमारी खतियानी जमीन से बेदखल करने का षड्यंत्र कर रहे हैं। उधर, मामला संज्ञान में आने के बाद पुलिस पूरे मामले की जांच में जुटी है। साथ ही गांव में किसी प्रकार की कोई अप्रिय घटना ना हो इसे लेकर भी सतर्क है।

राहे में भालू के हमले में वृद्ध घायल

राहे (आजाद सिपाही)। प्रखंड के दोकाद पंचायत अंतर्गत खोपड़ीकोचा-पहाड़टोली गांव में 75 वर्षीय हलधर महतो को भालू ने हमला कर घायल कर दिया है। घटना गुरुवार की शाम 8 बजे की है। हलधर महतो घर के सामने सड़क पर टहल रहे थे, तभी झाड़ी से अचानक एक भालू निकलकर आया और हमला कर दिया। वह सड़क पर गिर कर चीखने-चिल्लाने लगा। उनकी आवाज सुनकर लोग पहुंचे और भालू के चंगुल से बचाकर घर लाये। इसके बाद अस्पताल भेजा गया है।

अनियंत्रित कार पुल के नीचे गिरी, तीन घायल

खूंटी (आजाद सिपाही)। जिले के अड़की थाना क्षेत्र की कोरबा घाटी के पास गुरुवार को सरायकेला से खूंटी आ रही एक कार अनियंत्रित होकर पुल के नीचे गिर गयी। जिससे उसमें सवार तीन लोग घायल हो गए। उनकी पहचान खूंटी थाना क्षेत्र के बेलाहाथी निवासी अजय राम (30), कमल सिंह (55) और सुख सिंह (50) के रूप में हुई है। घायलों को स्थानीय लोगों की मदद से सदर अस्पताल भर्ती कराया गया। जहां दो लोगों की गंभीर स्थिति को देखते हुए उन्हें रिम्स अस्पताल रेफर कर दिया गया। जबकि कमल सिंह का इलाज सदर अस्पताल में हो रहा था, लेकिन जब एक्स रे कराने की बात आई तो अस्पताल में बिजली हुल होने के कारण उसे भी रांची रेफर कर दिया।

स्वच्छता पखवाड़ा के तहत पिपरवार में कई कार्यक्रमों का आयोजन

प्लास्टिक की जगह जूट बैग का करें इस्तेमाल: सीबी सहाय

पिपरवार जीएम ने हरी झंडी दिखाकर किया स्वच्छता रथ रवाना, जुट बैग का किया वितरण

आजाद सिपाही संवाददाता

पिपरवार। सीसीएल पिपरवार कोयलांचल क्षेत्र में मनाये जा रहे स्वच्छता पखवारा कार्यक्रम के तहत गुरुवार को अधिकारियों और कर्मचारियों को जुट बैग का वितरण किया गया। पिपरवार क्षेत्र के जीएम सीबी सहाय ने उपस्थित अधिकारियों और कर्मचारियों के बीच जुट बैग का वितरण करते हुए लोगों से इसका उपयोग करने की अपील की। कहा कि जीवन के हर क्षेत्र में स्वच्छता को पहली प्राथमिकता दी जानी चाहिए। दैनिक जीवन में जिस प्रकार हमलोग सुबह सबसे पहले उठकर घर की सफाई करते हैं उसी प्रकार

जूट बैग का वितरण करते जीएम सीबी सहाय।

हर क्षेत्र में स्वच्छता को अगर प्राथमिकता दी जाए तो स्वच्छ वातावरण का निर्माण होगा। इससे शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक उन्नति में मदद मिलेगी। स्वच्छता के क्षेत्र में पर्यावरण संरक्षण के महत्व को देखते हुए हमें प्लास्टिक बैग की जगह जुट के बैग का उपयोग करना चाहिए। जिससे पर्यावरण को काफी हद तक संरक्षित किया जा सकता है। इस अवसर पर कार्मिक एंव प्रशासनिक अधिकारी आलोक मनीष सोय, स्टाफ आफिसर विद्युत एवं यांत्रिक एके पाठक, एसके सिंह, आरएम गौतम, कार्मिक प्रबंधक रवि बाड़ा सहित अन्य अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित थे। इधर, स्वच्छता पखवारा कार्यक्रम के तहत क्षेत्र के लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से जीएम सीबी सहाय ने स्वच्छता जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उन्होंने कहा कि यह रथ पूरे क्षेत्र में भ्रमण कर लोगों को स्वच्छता के महत्व को समझाते हुए इसके लिए पहल करने की अपील करेगा। रथ के माध्यम से लोगों में प्लास्टिक से बनी वस्तुओं के हानिकारक प्रभाव के विषय में जानकारी देते हुए जुट या कागज के बैग को उपयोग करने के लिए प्रेरित करेगा। इस मौके पर एसओंपी आलोक मनीष सोय, क्षेत्रीय सुरक्षा पदाधिकारी अरुण कुमार महतो, जगदीश मंडल, रवि बाड़ा, ज्योति कुशवाहा, अश्विनी दारद, रविन्द्र सिंह सहित अन्य लोग मौजूद थे।

11 सूत्री मांगों को लेकर राकोमयू व एनके प्रबंधन के बीच हुई सकारात्मक बैठक

खलारी (आजाद सिपाही)। राष्ट्रीय कोयला मजदूर यूनीयन और एनके प्रबंधन के बीच गुरुवार को मजदूरों की समस्याओं

सहित 11 सूत्री मांगों को लेकर बैठक हुई। डकरा स्थित महाप्रबंधक कार्यालय में आयोजित बैठक में राकोमयू द्वारा दिये गए 11 सूत्री मांग पत्र पर चर्चा की गई। जिसमें मोहननगर, धमधमिया, सुभाष नगर कोलोनी में पानी आपूर्ति के लिए शीघ्र कार्रवाई करने, कालोनियों में नाले की सफाई, आवास मरम्मत, स्कूल बस की अवस्था में सुधार, सीएमपी एफ को अपडेट करने, पदोन्नति, समय पर एसएलपी एव अन्य कार्य को तय समय के अंदर करने पर सहमति बनी। बैठक में महाप्रबंधक संजय कुमार ने सभी समस्याओं पर सकारात्मक पहल करने का आश्वासन दिया। साथ ही विभागीय अधिकारियों को इसके लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिया है। बैठक में यूनियन की ओर से ललन प्रसाद सिंह, फूलेशवर यादय, सुनील कुमार सिंह, जेडएच खान, प्रदिप कुमार, धीरज कुमार, हलीम खान, जगन्नाथ महतो, देवपाल मुंडा, सुरेंद्र चौहान, प्रमिला देवी, धनंजय चौहान, चंद्रदिप पासवान, तिला महतो, दीपनारायण महतो, मिना देवी, चंदा महतो, वीर बहादूर, इंदल कुमार, अभिमन्यू, विदेशी गंझू, संतोष उरांव, महेंद्र यादव, राघव चौबे, जबकि प्रबंधन की ओर से एसओपी ज्योति कुमार, नवनीत शेखर, पीओ नरेश सिंह, पीओ जे के सिंह, अनील कुमार सिंह, राहूल कुमार आदि उपस्थित थे।

आसपास के विभिन्न प्रखंडों में शांति एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में मनाया गया बकरीद का त्योहार

नमाज अदा कर अमन-चैन की दुआ मांगी

अनगड़ा में बकरीद की नमाज के बाद एक-दूसरे को पर्व की बधाई देते लोग।

लापुंग में बकरीद की नमाज अदा करते लोग।

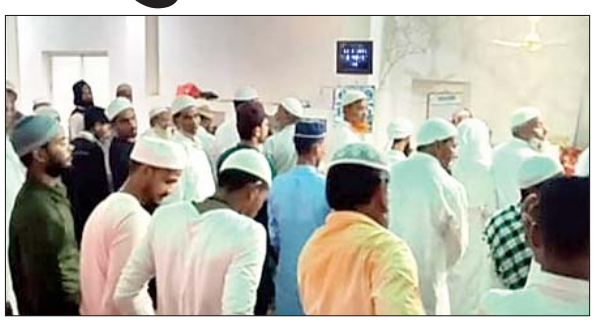

मांडर में नमाज के मौके पर उपस्थित लोग।

आजाद सिपाही टीम

रांची। रांची आसपास क्षेत्र के विभिन्न प्रखंडों में ईद-उल-अजहा (बकरीद) का त्यौहार शांति, भाईचारगी और सौहार्दपूर्ण वातावरण में उल्लास एवं अकीदत के साथ मनाया गया। बकरीद के मौके पर क्षेत्र के मस्जिदों एवं ईदगाहों में इस्लाम धर्मावलंबियों ने बकरीद की नमाज अदा कर क्षेत्र एवं मुल्क में अमन शांति की दुआ मांगी। बकरीद की नमाज के बाद सभी लोगों ने एक-दूसरे के गले मिल बधाईयां दी। बकरीद की नमाज के बाद इस्लाम धर्मावलंबियों ने अपने-अपने घरों में अल्लाह की राह में बकरे की कुर्बानी पेश की।

अनगड़ा

अनगड़ा प्रखंड में बकरीद का त्योहार उल्लासपूर्ण वातावरण में मनाया गया। इस अवसर पर महेशपुर, चिलदाग, हेसल, मासू, साल्हन, जोन्हा, राजाडेरा आदि मस्जिदों में सुबह बकरीद की नमाज अदा की गई। इसके बाद लोगों ने एक-दूसरे से गले मिलकर बकरीद की मुबारकवाद दी। नमाज अदा करने के बाद लोग कुर्बानी के प्रबंध में लग गए।

इटकी

इटकी प्रखंड क्षेत्र में ईद-उल-अजहा (बकरीद) पर्व सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में मनाया गया। मौके पर विशेष नमाज अदा की गयी व कुर्बानी दी गयी। कुर्बानी का सिलसिला तीन दिनों तक जारी रहेगा। बारिश के कारण इस वर्ष इटकी के ईदगाह में नमाज अदा नहीं की गयी। जामा मस्जिद में मौलाना तल्हा ने नमाज अदा करायी व अन्य मस्जिदों में भी नमाज अदा की गयी। बाद में एक-दूसरे के गले लगकर त्यौहार की बधाईयां देने का सिलसिला चलता रहा। त्यौहार को लेकर पुलिस प्रशासन पूरी तरह से मुस्तैद दिखा। थाना प्रभारी अमित प्रशांत के नेतृत्व सशत्र बलों की गश्त जारी रही।

लापुंग

लापुंग प्रखंड के ककरिया, फतेहपुर में गुरुवार को बकरीद पर्व की नमाज अकीदत के साथ अदा की गयी। साथ ही क्षेत्र की अमन चैन, खुशहाली की दुआ मांगी गई। नमाज के बाद सभी ने गले लगकर एक-दूसरे को बकरीद की बधाई दी। फतेहपुर के इस्लाम धर्मावलंबी गोविंदपुर के मस्जिद में व ककरिया के मस्जिद में हफीज अजीज साहब ने ईद की नमाज अदा की। वहीं ईद के मौके पर इमरान खान, समीउल्लाह हक, जलील साहब, तनवीर साहब, अस्लाम साहब, रब्बील साहब, मोयुद्दीन साहब, शमीम साहब, नजीर खान व नसीम आलम मो. शहीद मियां व सफीक मियां व अनवर खान समेत कई लोगों ने बकरीद की बधाई दी।

मांडर-चान्हो

मांडर एवं चान्हो प्रखंड के ग्रामीण इलाकों में बकरीद का पर्व सौहार्दपूर्ण वातावरण में मनाया गया। मस्जिदों और ईदगाहों में अकीदत के साथ बकरीद की नमाज अदा कर अमन शांति, भाईचारा, मुल्क और राज्य की खुशहाली की दुआ मांगी गई। प्रशासन की ओर से मस्जिद और ईदगाहों में सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किये गये थे। नमाज के बाद लोगों ने एक-दूसरे से गले मिल कर मुबारबाद दी।

नगड़ी

नगड़ी प्रखंड के आसपास में ईद उल अजहा की नमाज अदा की गई। मौके पर नगड़ी, देवरी, एड़चोरो, बंधेया, बरसा, नयासराय, मटटोली, टुडूंल,के मस्जिदों तथा ईदगाहों में निर्धारित समय में बकरीद की नमाज अदा की गई। मस्जिदे बेलाल देवरी में मौलाना जेयउर रहमान, मदीना मस्जिद हाई स्कूल में करी मनुवर एवं मस्जिदे फातिमा बांध टोली में मौलाना अब्दुल अजीज, जामा मस्जिद नगड़ी में मौलाना अबु ओबेदा ने ईद उल अजहा की नमाज अदा करायी। नमाज के बाद लोगों ने एक-दूसरे को बधाई दी।

महत्वपूर्ण न्यूज

भाजपा खिजरी मंडल कार्यकर्ताओं ने चलाया जनसंपर्क अभियान

नामकुम (आजाद सिपाही)। भारतीय जनता पार्टी खिजरी मंडल के कार्यकर्ताओं ने संयुक्त रूप से मंडल अंतर्गत बूथ नंबर 227, 228, 238 एवं 240 पर जनसंपर्क अभियान चलाया। महिला मोर्चा राष्ट्रीय मंत्री आरती सिंह एवं खिजरी विधान सभा सांसद प्रतिनिधि प्रमोद कुमार सिंह के सयुंक्त नेतृत्व में जनसंपर्क अभियान चलाकर मोबाइल से 9090902024 नंबर पर मिस कॉल कराया गया। प्रमोद कुमार सिंह ने केंद्र सरकार के नौ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में सेवा, सुशासन और गरीब जन-कल्याण योजनाओं से अवगत कराया। कार्यक्रम प्रज्ञा भारती, हरिश कुमार गंझू, सुबोध सिंह टनटन, जयंती देवी, शिल्पी शालिनी, गोरखनाथ सिंह, संजय पाहन, बिरसा मुंडा, बीरेन्द्र कुमार, बीरेंद्र पांडे, बबीता देवी आदि शामिल थे।

झारखंड गवर्नमेंट टूल रूम टाटीसिलवे में प्रमाण पत्र वितरण समारोह आयोजित

नामकुम (आजाद सिपाही)। झारखंड गवर्नमेंट टूल रुम टाटीसिलवे के सभागार में प्रमाण पत्र वितरण समारोह का आयोजन किया गया। मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में अपर निदेशक डिपार्टमेंट ऑफ इंडस्ट्रीज प्रशांत कुमार साव उपस्थित थे। सबसे पहले मुख्य अतिथि का स्वागत संस्था के प्राचार्य महेश कुमार गुप्ता ने पुष्प गुच्छ देकर किया। उसके बाद उन्हें टूल रुम का भ्रमण कराया गया। पीएलसी का उपयोग करके औद्योगिक स्वचालन में इंटर्नशिप अवधि 1 माह, ऑटोमोबाईल इंजीनियरिंग में इंटर्नशिप अवधि 1 माह एवं ऑटोकार्ड के प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके प्रशिक्षणार्थियों को मुख्य अतिथि के द्वारा प्रमाण पत्र वितरण किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि ने टूल रुम में मौजूद इंफ्रास्ट्रक्चर की तारीफ करते हुये छात्रों को ज्यादा से ज्यादा इसका लाभ उठाने की बात कही। प्राचार्य महेश कुमार गुप्ता ने टूल रुम में चल रहे विभिन्न स्किल डेवलपमेंट कोर्सेज की जानकारी दी एवं छात्रों को बधाई देते हुये उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। कार्यकम का संचालन ट्रेनिंग इंचार्ज मंगल टोप्पो एवं समापन भाषण प्रशासनिक अधिकारी आशुतोष मिश्रा ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में टूल रुम के पूर्णेन्दु पंकज, आईटी स्किल इंस्टक्टर कुमार अविनाश का विशेष योगदान रहा।

ट्रांसफॉर्मर जलने से अंधेरे में डूबा गांव

नामकुम (आजाद सिपाही)। प्रखंड अंतर्गत टाटीसिलवे क्षेत्र के मिश्रा टोली गांव का 100 केवी का ट्रांसफॉर्मर कुछ दिनों से जला है। जिससे पूरा गांव अंधेरे में है। उमस भरी गर्मी से लोग बेहाल हैं। इसके बावजूद विभाग इस ओर ध्यान नहीं दे रहा है। ट्रांसफॉर्मर को नहीं बदले जाने को लेकर ग्रामीणों का रोष गहराता जा रहा है। मिश्रा टोली में विद्युत आपूर्ति के लिये विभाग की तरफ से 100 केवी का ट्रांसफॉर्मर लगाया गया था। यह ट्रांसफार्मर कुछ दिनों पहले जल गया। इससे करीब सौ से अधीक घर अंधेरे में डूब गये। ग्रामीणों ने तत्काल ट्रांसफॉर्मर जलने की सूचना विभाग को दी थी। बावजूद इसके आज तक उसे बदला नहीं गया। बिजली के अभाव में एक तरफ जहां लोग चैन की नींद नहीं सो पा रहे हैं, वहीं पानी के लिये परेशान होना पड़ रहा है। जिन लोगों ने इनवर्टर लगा रखा है, उनकी बैट्री चार्ज नहीं होने से शोपीस बन गयी है। मोबाइल चार्ज करने के लिये लोगों को इधर-उधर की दौड़ लगानी पड़ रही है। अमित कुमार मिश्र, गिरिधर मिश्र, हलधर मिश्र, कृष्ण मुरारी मिश्र, अभय मिश्र, विजयनाथ मिश्र, मोनू महतो, बंधन महतो आदि ग्रामीणों ने विभाग का ध्यान आकृष्ट कराते हुये जले हुये ट्रांसफॉर्मर को बदल कर नया ट्रांसफॉर्मर लगाने की मांग की है।

भाजपा का सिकिदिरी मंडल में चलाया गया महा जनसंपर्क अभियान

सिकिदिरी (आजाद सिपाही)। भारतीय जनता पार्टी सिकीदिरी मंडल अन्तर्गत नवागढ़ पंचायत के सभी बूथों में गुरुवार को महा जनसंपर्क अभियान चलाया गया। कार्यक्रम का नेतृत्व भाजपा एसटी मोर्चा रांची जिला ग्रामीण के महामंत्री बुधराम बेदिया कर रहे थे। कार्यक्रम में मुख्य रूप से भाजयुमो प्रदेश उपाध्यक्ष सत्यदेव मुंडा शामिल थे। इस महा जनसंपर्क अभियान में लोगों को मोदी सरकार के 9 सालों के कार्यों को विस्तार से बातया गया। साथ ही लोगों से आने वाले 2024 के चुनाव में फिर से भाजपा को वोट करने की अपील कि गई एवं मोदी जी के हाथों में देश की कमान सौंपने का सुझाव दिया गया। कार्यक्रम में दिलीप मिर्धा, दासिया बेदिया, जुगल बेदिया, बनु बेदिया, सुरेश लोहरा, अघनु बेदिया, गहनु बेदिया, जीतराम मुंडा, गोविंद मुंडा एवं ग्रामीण शामिल थे।

टुंडाहुली मुखिया रमेश को सांसद संजय सेठ ने भाजपा की पट्टा पहना कर पार्टी में कराया शामिल

ओरमांझी (आजाद सिपाही)। भाजपा ओबीसी मोर्चा के ओरमांझी मंडल कोषाध्यक्ष व ओरमांझी पंचायत के उपमुखिया संतोष गुप्ता व सदमा पंचायत के मुखिया सुनील उरांव की पहल पर टुण्डाहोली पंचायत के मुखिया रमेश बेदिया भाजपा में शामिल हुए। रांची सांसद संजय सेठ ने पार्टी का पट्टा पहनाकर भाजपा में आने के लिए धन्यवाद दिया। सांसद ने संपर्क से समर्थन कार्यक्रम के तहत इनके साथ संवाद किया और कहा ग्राम सभा की मजबूती में ही देश की मजबूती है। मोदी सरकार के 9 वर्ष के सफलतम कार्यकाल और लोक कल्याणकारी नीतियों पर चर्चा की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कल्याणकारी योजनाएं से कोई व्यक्ति अछूता न रहे इसका संकल्प दिलाया गया। गांव के अंतिम व्यक्ति तक मोदी जी की योजनाओं का लाभ पहुंचे इसका ख्याल रखा जाए। लोकसभा चुनाव को लेकर लोग काफी उत्सुक हैं। लोग नरेंद्र मोदी को फिर से प्रधानमंत्री के रूप में देखने का मन बनाये बैठे हैं। रमेश बेदिया के शामिल होने पर राज्य सभा सांसद प्रो. आदित्य प्रसाद साहू, किसान मोर्चा प्रदेश उपाध्यक्ष अमरनाथ चौधरी, ग्रामीण जिला उपाध्यक्ष मानकी राजेंद्र साही, सांसद प्रतिनिधि राजेश गुप्ता, मण्डल अध्यक्ष दिलीप मेहता, रामकुमार महतो, दीपक बड़ाईक, विक्रांत तिवारी, संतोष कुशवाहा, अरूण मण्डल, शशि मेहता, आनन्द महतो आदि ने पार्टी में स्वागत करते हुए बधाई दी।

इटकी में भगवान जगन्नाथ का रथ मुख्य मंदिर पहुंचने के साथ घुरती रथयात्रा मेला संपन्न

इटकी (आजाद सिपाही)। इटकी में भगवान जगन्नाथ अपने मुख्य मंदिर में गुरुवार को रथ पर सवार होकर वापस आये। मौके पर घुरती रथयात्रा मेला लगा। इसी के साथ गत नौ दिनों से जारी मौसी बाड़ी में भगवान का प्रवास व रथयात्रा महोत्सव का समापन हुआ। मौके पर मौसीबाड़ी मंदिर से मुख्य जगन्नाथ मंदिर तक रथयात्रा निकाली गयी। रथ पर भगवान जगन्नाथ, भाई बलराम व बहन सुभद्रा सवार थे। रथ को श्रद्धालुओं ने रस्सी के सहारे खींचते हुए मुख्य मंदिर पहुंचाया। भगवान के रथ को खींचने के लिए भक्त उत्सुक नजर आए। जिसमें महिला व बच्चे भी शामिल थे। रथयात्रा के दौरान अन्य लोगों के अलावा पूर्व विधायक गंगोत्री कुजूर, लाल रामेश्वर नाथ शाहदेव, भोगन सोरेन, अजीत केसरी, कृष्णा राम तिवारी व हर्षवर्धन पांडेय सहित अन्य शामिल थे।

अनगड़ा में 2 जुलाई को होनेवाले युवा कांग्रेस सम्मेलन को लेकर की गयी तैयारी बैठक

अनगड़ा (आजाद सिपाही)। प्रखण्ड में आगामी 2 जुलाई को आयोजित होने वाले प्रदेश स्तरीय युवा कांग्रेस सम्मेलन की तैयारियों को लेकर गुरुवार को होटल राजधानी गोंदलीपोखर में कांग्रेस पार्टी की एक बैठक प्रखण्ड युवा कांग्रेस अध्यक्ष विशाल स्वांसी की अध्यक्षता में हुई। बैठक में सम्मेलन को सफल बनाने के लिए जनसंपर्क अभियान चलाने तथा अधिक से अधिक संख्या में युवा कार्यकर्ताओं की भागीदारी सुनिश्चित करने का निर्णय लिया गया। इसके लिए बूथ स्तर पर कार्यकर्ताओं को जिम्मेवारी सौंपी गई। मौके पर जिला ग्रामीण युवा कांग्रेस के संगठन विस्तार पर भी चर्चा की गई तथा मिशन 2024 के लिए अभी से ही तैयारी में लग जाने को कहा गया। मौके पर प्रखण्ड उपाध्यक्ष मुन्ना मुण्डा, बरतु मुण्डा, मिनहाज आलम, युवा कांग्रेस के जिला उपाध्यक्ष मनोहर मुण्डा, सुरेश कुमार, रामभजन सिंह मुण्डा, रोशन कुजूर, कृष्णा कुमार, नरेन्द्र सिंह, महेश करमाली सहित अन्य उपस्थित थे।

चार जुलाई को होने वाली कांवड़ यात्रा को लेकर महिलाओं ने की महाकालेश्वर धाम ओरमांझी में बैठक

ओरमांझी (आजाद सिपाही)। ओरमांझी प्रखंड के उलातु के गगारी पहाड़ में स्थित महाकालेश्वर धाम में सावन माह के पहले दिन आयोजित की जाने वाली कांवड़ यात्रा के सफल आयोजन को लेकर ओरमांझी क्षेत्र की महिलाओं की बैठक राधा कृष्ण मंदिर ओरमांझी में किरण देवी की अध्यक्षता में हुई। बैठक में सफल आयोजन व महिलाओं की अधिकाधिक भागीदारी हो इसके लिए गहन विचार विमर्श किया गया। कांवड़ यात्रा को सफल बनाने के लिए व्यापक प्रचार-प्रसार करने के लिए रूपरेखा तैयार की गयी। जिसमें लाउडस्पीकर से प्रचार करने व घर घर जाकर लोगों से अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने के लिए प्रेरित करने का निर्णय लिया गया। सावन के पहले दिन मंगलवार 4 जुलाई को सुबह छह बजे राधा कृष्ण मंदिर में सभी को एकत्रित होना है। कांवड़ यात्रा में शामिल होकर पवित्र छठ घाट डोमा नदी ओरमांझी से जल उठाकर महाकालेश्वर धाम में जल अर्पित करने का संकल्प लिया गया। बैठक में मनी देवी, कविता देवी, बसंती देवी, ऊषा देवी, गुड़िया देवी, सरीता देवी, कंचन देवी, तेतरी देवी, धनवा देवी, मीणा देवी, द्रौपदी देवी, कुन्ती देवी, निर्मला देवी, जमनी देवी सहित काफी संख्या में महिलाएं उपस्थित थीं।

बिजली मिस्त्री पोल से गिरा, टूटी कमर

सिकिदिरी (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र के सुरसू पंचायत के हरजालुम गांव निवासी बिजली मिस्त्री चरण बेदिया ने ग्यारह हजार वोल्ट बिजली का शटडाउन को लेकर बिजली पोल के उपर काम कर रहा था। उसी क्रम में ग्यारह हजार वोल्ट बिजली चालू कर दी गयी। जिससे चरण बेदिया पोल से नीचे गिर गया और उसकी कमर टूट गयी। वह दैनिक मजदूर के रूप में काम करता था। सूचना मिलने पर आजसू पार्टी प्रखंड उपाध्यक्ष अमर सिंह मुंडा, श्याम सुंदर बेदिया, शंकर बेदिया ने घटनास्थल पर पहुंच कर इलाज के लिए अनगड़ा सीएचसी पहुंचाया, जहां से रिम्स रेफर कर दिया गया।

भाजपा ने अनगड़ा मंडल के विभिन्न पंचायतों में चलाया जनसंपर्क अभियान

लोगों को मोदी सरकार के नौ साल की उपलब्धियों को बताया गया

आजाद सिपाही संवाददाता

अनगड़ा। केन्द्र में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सरकार के 9 वर्ष पूर्ण होने पर 30 जून तक चलने वाले महाजनसंपर्क अभियान सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण कार्यक्रम के तहत गुरुवार को अनगड़ा मंडल के गेतलसूद, सिरका, राजाडेरा, लुपुंग आदि पंचायत क्षेत्रों में घर-घर जनसंपर्क अभियान चलाया गया। पूर्व विधायक रामकुमार पाहन के

नेतृत्व में चलाए गए इस जनसंपर्क अभियान के क्रम में भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा लोगों को केन्द्र सरकार की उपलब्धियों को बताया गया तथा उनके बीच पम्पलेट बांटे गए। मौके पर कहा गया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सरकार सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण के ये 9 वर्ष विकास, गरीब, किसान, नौजवान और महिलाओं के जीवन में खुशहाली लाने के लिए समर्पित रहा है। इस अभियान में मंडल अध्यक्ष रामनाथ महतो, सुनील कुमार महतो, धनीराम महतो, राजेन्द्र महतो, सुप्रेश महतो, शिकारी महतो, गौरीशंकर मुण्डा, बलराम मुण्डा, जगेश्वर महतो, कुंती देवी, बालेश्वर महतो, संजय नायक, सुरेश महतो, सुनीता देवी, बिरंची देवी, हेमनाथ महतो, सोनू महतो आदि कार्यकर्ता शामिल थे।

52 पड़हा राजा के सदस्यों ने बैठक कर तीन सदस्यों से मांगा स्पष्टीकरण

स्पष्टीकरण नहीं देने पर पड़हा राजा की ओर से किया जायेगा समाजिक बहिष्कार

आजाद सिपाही संवाददाता

नामकुम। उदयपुर सिटी परगना 52 पड़हा राजा की महिला अध्यक्ष सुशीला भुट कुंवर की अध्यक्षता में गुरुवार को नामकुम खरीदाग स्थित जतरा स्थल में बैठक की गयी।

इस दौरान सक्रिय सदस्य व ग्रामीणों व पड़हा राजा के पदाधिकारी उपस्थित हुये। मौके पर 52 गावों के प्रतिनिधियों को अवगत कराया गया कि 52 पड़हा राजा के पूर्व पदाधिकारी एवं कुछ

स्वार्थी तत्वों के द्वारा अनधिकृत ढंग से गलत दोषारोपण लगाते हुये समिति को भंग कर बदनाम करने की कोशिश की गयी थी। मौके पर सभी पदाधिकारियों की उपस्थित में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि जो भी पड़हा समिति को बदनाम करने पर पड़ा है।

पड़हा के पूर्व अध्यक्ष मनियस टांव, हरिश्चन्द्र सिंह मुंडा व महेन्द्र कच्छप पर कार्रवाई करने के लिये 20 सदस्यीय टीम बनाकर स्पष्टीकरण मांगा जायेगा और स्पष्टीकरण नहीं मिलने पर सर्वसम्मति से पड़हा समाज के द्वारा तीनों व्यक्तियों का समाजिक बहिष्कार किया जायेगा।

इस बैठक में मुख्य रूप से प्रदीप तिर्की, नन्हें कच्छप, चामू बेक, सुरेश नायक, मरियम लकड़ा, जुरा पाहन, सिलास महीस होरो, जुएल एक्का, जीता कच्छप, एतवा कच्छप, रोजलिन मिंज, रजनी तिग्गा, जुएल मिंज, फुनकेरिया होरो, जोसेफ एक्का, संजय होरो, रामु कच्छप, मदिन टुटी, महाबीर मुंडा, दिनेश नायक, सुजीत लकड़ा, सुलेमान होरो, सुजीत तिर्की, विनोद होरो, सहदेव सिंह, बालेश्वर बडाईक, करमा गाड़ी, मनोज महतो, याकुव लकड़ा, किशोर महतो सहित अन्य ग्रामीण उपस्थित थे।

कार्यक्रम : बड़कीगोड़ांग गांव में प्राकृतिक खेती पर कार्यशाला सह वृक्ष रक्षाबंधन कार्यक्रम आयोजित

नवागढ़ को आदर्श आदिवासी पंचायत बनाने का लिया गया है निर्णय : निशा उरांव

आजाद सिपाही संवाददाता

सिकिदिरी। नवागढ़ पंचायत के बड़कीगोड़ांग गांव में गुरुवार को प्राकृतिक खेती पर कार्यशाला सह वृक्ष रक्षाबंधन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में निशा उरांव पंचायती राज निदेशक झारखण्ड सरकार, स्वामी भवेशानंद जी महराज सचिव रामकृष्ण मिशन आश्रम मोराबादी रांची शामिल थे।

विदित हो कि नवागढ़ पंचायत को रामकृष्ण मिशन आश्रम एवं आईएएस सुनील कुमार वर्णवाल के द्वारा संयुक्त रूप से आदिवासी आदर्श पंचायत बनाने का कार्य हो रहा है। इसके अंतर्गत जो कार्य हुआ है, उसमें पूरे पंचायत में जैविक खेती करना, सामूहिक विकास के लिए श्रमदान से बड़की गोड़ांग में 1.5 किलोमीटर पथ निर्माण का कार्य किया गया है, का उद्घाटन अतिथि के द्वारा किया गया। साथ ही पेड़ रक्षाबंधन कार्यक्रम के तहत ग्रामीणों को जंगल रक्षा के प्रति जागरूक किया जा सके इसलिए पेड़ रक्षाबंधन कार्यक्रम किया गया। मुख्य अतिथि निशा उरांव ने अपने संबोधन में कहा कि आप सब धन्य हैं, जो रामकृष्ण मिशन आश्रम जैसी संस्था आप लोगों के साथ कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि आज हम इस पंचायत में अतिथि के रूप में आये हैं लेकिन अब जब भी आऊंगी मां के रूप में आऊंगी अर्थात इस पंचायत को सरकार द्वारा पायलेट प्रोजेक्ट में आदर्श आदिवासी पंचायत के रूप में लिया गया है। जिसकी प्रक्रिया पूरी कर ली गई है।

मौके पर जिला परिषद सदस्य राजेन्द्र शाही मुंडा, प्रमुख अनगड़ा दीपा उरांव, मुखिया भुवनेश्वर बेदिया, अनिता बरला, राजेन्द्र बेदिया, अजित सिंह, राजेश कुमार, मनोज सिंह, डॉ अभिजित दत्ता, डॉ. विशाल के अलावा कार्यक्रम को सफल बनाने में चिरंजीवी मण्डल, प्रदीप महतो, रोहित शाही, सोमरा बेदिया, सुदिप्त सतप्ती, जगरनाथ बेदिया, लालसाय मुण्डा, जयराम बेदिया, जगदीश भोगता, बालसाय मुण्डा, धनीराम बेदिया, पोदीना मुण्डा, कालीचरण मुण्डा, सावना बेदिया, सोहन बेदिया, गंगाराम मुण्डा आदि का अहम योगदान रहा।

विधायक ने क्षेत्र में किये अपने नौ वर्षो के कार्य का पेश किया लेखा-जोखा

विश्रामपुर में 1650 करोड़ रुपये की विकास योजनाओं का हुआ क्रियान्वयन: रामचंद्र

आजाद सिपाही संवाददाता

मेदिनीनगर। पूर्व मंत्री सह स्थानीय विधायक रामचंद्र चंद्रवंशी ने कहा कि विश्रामपुर विस क्षेत्र पूर्ण विकास की ओर अग्रसर है। पिछले नौ वर्षो में विश्रामपुर विस क्षेत्र में 1650 करोड़ की विकास योजनाओं का क्रियान्वयन हुआ। जो एक बड़ी उपलब्धि है। जिसे आम जनमानस के समर्थन से हासिल किया गया है। श्री चंद्रवंशी बिश्रामपुर के नावाडीह कला स्थित आरसीआईटी के सभागार में आयोजित प्रेस वार्ता में बोल रहे थे। उन्होंने अपने पिछले नौ वर्षो

के कार्यकाल का लेखा जोखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि विस क्षेत्र में 54 से अधिक सड़क का निर्माण कार्य कराया गया। वही छः विद्युत सबस्टेशन का नव निर्माण कराया गया। जिनमें नावाडीह,नवा बाजार,पतरिया,तोलरा,उंटारी रोड व कजरू कला गांव का विद्युत सब स्टेसन शामिल है। विस क्षेत्र में 13 पुल-पुलिया का निर्माण कराया गया। जो आवागमन को सुलभ कराने में वरदान साबित हुआ। वहीं भवन निर्माण विभाग से प्रखंड व कई पंचायत भवन का निर्माण कार्य कराया गया। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य मंत्री रहते क्षेत्र में नौ स्वास्थ्य केंद्र का निर्माण कराया गया जो एक बड़ी उपलब्धि से कम नहीं। विस क्षेत्र की दर्जनों प्राथमिक विद्यालय को मध्य विद्यालय प्रोन्नत कराया गया। कई मध्य विद्यालय को उच्च विद्यालय में प्रोन्नत कराया गया। इतना ही नहीं उच्च विद्यालय में प्लस टू की पढ़ाई की व्यवस्था भी कराई गई। इसके साथ-साथ अपने निजी विश्वविद्यालय में स्कूल से पीएचडी तक की पढ़ाई की व्यवस्था की। साथ में इंजीनियरिंग व मेडिकल कॉलेज की स्थापना कराई। इसके अलावा केंद्र व राज्य सरकार के सभी कल्याणकारी योजनाओं को वास्तविक जरूरतमंदों तक पहुंचाया गया। आम लोगो को सीधा लाभ पहुंचाने हेतु मुफ्त अनाज,आवास,गैस चूल्हा,विधवा पेंशन,वृद्धा पेंशन,विकलांग पेंशन,नल जल योजना सहित अनेकों कार्य को धरातल पर उतारा। श्री चंद्रवंशी ने कहा कि विश्रामपुर विधानसभा क्षेत्र के गढ़वा जिला के कांडी व बरडीहा प्रखंड में भी ब्लॉक बिल्डिंग, सब स्टेशन,पुल निर्माण,अस्पताल भवन का निर्माण सहित कई उल्लेखनीय कार्य किया गया।

विश्रामपुर के पंचमुखी मंदिर प्रांगण में हुआ शिव चर्चा का आयोजन

विश्रामपुर/पलामू (आजाद सिपाही)। विश्रामपुर के ऐतिहासिक पंचमुखी मंदिर प्रांगण में गुरुवार को शिव परिवार की ओर से शिव चर्चा का आयोजन किया गया। इससे पहले शिव भक्तों ने मंदिर में विशेष पूजा-अर्चना की गयी। इसके बाद शिव के भजन-कीर्तन के साथ शिव चर्चा शुरू हुई। भक्तों ने कहा कि शिव परिवार का तीन मूल मंत्र है। पहला दया, दूसरा चर्चा और तीसरा ओम नमः शिवाय को प्रणाम संस्कृति से जोड़ना है। शिव गुरु थे गुरु है और गुरु रहेंगे। शिव गुरु परिवार के सभी सदस्य हमेशा शिव चर्चा में लीन रहते हैं। मौके पर भजपा एससी मोर्चा अध्यक्ष सुरेंद्र भारती, अरविंद जहरीला, एस कुमार मेहता, दीपक कुमार, विंदेश्वर कुमार, बेबी देवी सहित शिव परिवार के सदस्य थे।

हरिहरगंज में सभी ने मिल कर मनायी बकरीद

हरिहरगंज/पलामू (आजाद सिपाही)। बकरीद त्योहार के अवसर पर गुरुवार को हरिहरगंज में कड़ी सुरक्षा के बीच मस्जिदों में नमाज अदा की गई और हजरत इब्राहिम के त्याग को याद किया गया। नमाज अदा के बाद लोग एक-दूसरे के गले मिलकर मुबारकबाद दिए। इस दौरान अररूआ खुर्द, सतगांवा, अंसारी बिगहा, बंजारी, कटैया, बेलौदर, सियरभूका सहित अन्य जगहों पर ईद-उल-अजहा का पर्व मनाया गया। वहीं नमाज अदा के दौरान पुनी सह थाना प्रभारी सुदामा कुमार दास के नेतृत्व में सभी मस्जिदों के पास पर्याप्त संख्या में पुलिस जवानों की तैनाती की गई थी। थाना प्रभारी सुदामा कुमार दास ने बताया कि बकरीद सुरक्षा और समरसता के साथ मनाया जा रहा है। वहीं, मौलाना सलाहुद्दीन साहब, मो इसरार आलम और डॉ रिजवान ने बताया कि ईद-उल-अजहा का पर्व सर्वोच्च त्याग और बलिदान की प्रेरणा देता ही है, साथ ही लोगों पर अमन, चैन, शांति व खुशहाली की नेमत भी बरसाता है। इस मौके मोहम्मद यूनिस, रियाज, मुस्लिम अंसारी, कमल राजा, अली सकील, मुतुर्जा, खालिद राजा, असलम नवाब आदि ने नमाज अदा कर क्षेत्र में अमन चैन की दुआ मांगी।

बकरीद पर मांगी गयी अमन-चैन की दुआ

नीलांबर-पीतांबरपुर/पलामू (आजाद सिपाही)। प्रखंड मुख्यालय समेत ग्रामीण क्षेत्रों में गुरुवार को ईद-उल-अजहा (बकरीद) का त्योहार हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस दौरान इदगाह, बड़ी मस्जिद, में सुबह सात बजे नमाज अदा कि गई। वहीं छोटी मस्जिद कोट में नमाज अदा कर क्षेत्र- राज्य के साथ ही देश-दुनिया में अमन-चैन की दुआ मांगी गयी। दूसरी ओर, शांति व्यवस्था को लेकर लेस्लीगंज पुलिस प्रशासन काफी मुस्तैद दिखी। वहीं प्रखंड के मुरूबार, रामसागर आदि मस्जिदों में भी नमाज अदा की गई। इस मौके पर हाफिजुल रहमान, मिस्टर महमूद, उप मुखिया हिमायू खान, नसीम राजा, चंगेज खान, फिरोज खान और इरफान खान आदि ने एक-दूसरे से गले मिलकर बकरीद की मुबारकबाद दी।

जामा मस्जिद में पढ़ी गयी बकरीद की नमाज, मांगी खुशहाली की दुआ

सतबरवा/पलामू (आजाद सिपाही)। सतबरवा प्रखंड के करमा जामा मस्जिद में गुरुवार को बकरीद की नमाज मौलाना गुलाम सरवर के नेतृत्व में पढ़ी गई। वहीं, बड़ी मस्जिद सतबरवा में भी अपने गांव समाज में सुख शांति के लिए नमाज पढ़ी गई और गले मिलकर एक-दूसरे दो बकरीद की मुबारकबाद दिए। मौके पर उपस्थित सामाजिक कार्यकर्ता जुम्मन मियां ने कहा कि बकरीद सादगी सौहार्द व भाईचारे के लिए जाना जाता है आज के दिन हम लोग अपने गांव समाज की अमन-चैन की दुआ करते हैं। ईद हो या बकरीद हम लोग खुशी खुशी सब मिलजुल कर शांति पूर्वक त्योहार मनाते हैं।

बीमारियों से बचने के लिए स्वास्थ्य जागरूकता जरूरी : अशोक चौधरी

झरगड़ा पंचायत में सामुदायिक स्वास्थ्य जागरूकता अभियान का शुभारंभ

आजाद सिपाही संवाददाता

हुसैनाबाद। प्रखंड क्षेत्र के झरगड़ा में उद्यमी कल्याण शिक्षण संस्थान की ओर से गुरुवार को स्वास्थ्य जागरूकता अभियान का शुभारंभ किया गया। 30 दिवसीय इस अभियान में संस्थान की ओर से मलेरिया (हाथी पॉव), कलरा, हैजा, जांडिस, गठिया, एड्स एवं एनीमिया समेत कई अन्य बीमारियों के बारे में ग्रामीणों को जागरूक किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुखिया अशोक कुमार चौधरी ने किया। उन्होंने लोगों को

संबोधित करते हुए कहा कि उद्यमी कल्याण संस्थान द्वारा ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के बीच विभिन्न प्रकार की बीमारियों से बचाव के लिए चलाया जा रहा जागरूकता अभियान सराहनीय प्रयास है। उन्होंने लोगों से संस्थान द्वारा बताए जा रहे स्वास्थ्य संबंधी उपयोगी जानकारी को अपने दिनचर्या में शामिल कर निरोग रहने की अपील की। इस मौके पर संस्थान के मनोज गुप्ता, अमर कुमार, रोजगार सेवक अजय कुमार, राजू प्रसाद, दिलीप चौधरी, प्रदुमन साव, शिक्षिका सुमन कुमारी, नंदू यादव, धर्मेंद्र और जितेंद्र चौधरी आदि मौजूद थे।

रैयती जमीन पर जबरन बिजली खंभे गाड़ किया गया 33 हजार वोल्ट विद्युत प्रवाहित

विश्रामपुर/पलामू (आजाद सिपाही)। भोगू से शंखा तक एनएच-39 फोरलेन सड़क निर्माण को लेकर अधिग्रहण की प्रक्रिया जारी है। अभी तक भू स्वामियों की अधिग्रहण की जाने वाली जमीन का न तो एलपीसी निर्गत किया गया है और ना ही मुआवजे की राशि का भुगतान ही हुआ है। बावजूद इसके एनएचआइ ने जबरन निर्माण कार्य की प्रक्रिया को शुरू कर दिया है। एनएचआइ द्वारा कई जगहों पर राखड का भंडारण किया जा रहा है। सड़क निर्माण संबधित कई अन्य कार्य भी शुरू कर दिया गया है। जिसमें एनएचआइ द्वारा सड़क किनारे गड़े बिजली के पुराने खंभों और तार को हटाकर जबरन रैयती खेत में गाड़ दिया गया। तार खींचकर 33 हजार वोल्ट विद्युत भी प्रवाहित कर दिया गया। विद्युत कार्य कराने वाले संवेदक द्वारा इस कार्य को मनमाने तरीके से कराया जा रहा है। तय सुरक्षा मानकों का पालन भी नहीं किया गया है। जिससे कभी भी बड़ी दुर्घटना घट सकती है। विद्युत खंभे को झुकाओं से रोकने हेतु लगाया गया स्टेगहरे हरे पेड़ में बांध दिया गया है।

हुसैनाबाद में सौहार्द्र व अकीदत के साथ मनायी गयी बकरीद

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। सौहार्द और अकीदत के साथ गुरुवार को कुर्बानी का त्योहार बकरीद मनाया गया। सुबह से हो रही बारिश के कारण मुस्लिम समुदाय के लोगों ने अपने घर के समीप मस्जिद व ईदगाह में अकीदत के साथ बकरीद की नमाज अता की। जबकि सिया समुदाय के लोगों ने जामा मस्जिद के समीप ईदगाह की नमाज पढ़ी और क्षेत्र व घर परिवार की सलामती की कामना की। नमाज के बाद गले मिलकर बकरीद की मुबारकबाद दी।

स्पोर्ट्स

सैफ चैंपियनशिप में चार टीमें भारत, कुवैत, बांग्लादेश और लेबनान सेमीफाइनल में पहुंच चुकी है। एक जुलाई को कुवैत-बांग्लादेश, जबकि लेबनान-भारत के बीच मुकाबला होगा।

भारत-लेबनान दोनों शानदार फॉर्म में, उसी दिन कुवैत-बांग्लादेश का भी मुकाबला

सेमीफाइनल में 1 जुलाई को लेबनान से भिड़ेगा भारत

एजेंसी

नई दिल्ली। सैफ चैंपियनशिप में चार टीमें सेमीफाइनल में पहुंच चुकी हैं। ग्रुप-ए से जहां कुवैत और भारत ने अंतिम चार में जगह बनाई, वहीं ग्रुप-बी से लेबनान और बांग्लादेश की टीम सेमीफाइनल में पहुंची। अब अंतिम चार के मुकाबले में ग्रुप-ए में शीर्ष स्थान पर रहने वाली टीम ग्रुप-बी में दूसरे स्थान पर रहने वाली टीम से और ग्रुप-बी में शीर्ष स्थान पर रहने वाली टीम ग्रुप-ए की दूसरी टीम से भिड़ेगी। यानी कुवैत का मुकाबला बांग्लादेश से और लेबनान का सामना भारत से होगा। दोनों सेमीफाइनल एक जुलाई को खेले जाएंगे। कुवैत-बांग्लादेश मुकाबला दोपहर तीन बजे से और भारत-लेबनान मैच शाम साढ़े सात बजे से शुरू होगा।

आपस में कब-कब भिड़ चुकी हैं भारत-लेबनान की टीमें

दोनों टीमों का पहली बार सामना 1977 में प्रेसिडेंट कप में हुआ था। तब भारत ने लेबनान को 4-2 से करारी शिकस्त दी थी। इसके बाद दोनों टीमें 1993 में दो बार फीफा वर्ल्ड कप क्वालिफायर में भिड़ी थीं। एक मैच 2-2 से ड्रॉ रहा था, जबकि दूसरे मैच में लेबनान ने भारत को 2-1 से हराया था। इसके बाद 2007 में भी इन दोनों टीमों के बीच फीफा वर्ल्ड कप क्वालिफायर में भिड़त हुई। आठ अक्तूबर 2007 को हुए मैच में लेबनान ने भारत को 4-1 से करारी शिकस्त दी थी। इसके बाद 30 अक्तूबर 2007 को दोनों टीमों के बीच खेला गया मैच 2-2 की बराबरी पर समाप्त हुआ था। 19 अगस्त 2009 को दोनों टीमें दोस्ताना मैच में एक बार आमने-सामने आईं। तब लेबनान ने भारत को 1-0 से हरा दिया था। इसके बाद 2023 इंटरकॉन्टिनेंटल कप में दोनों का आमना-सामना हुआ। इस टूर्नामेंट में एक मैच 0-0 से ड्रॉ रहा, वहीं फाइनल में भारत ने लेबनान को 2-0 से हराया। 1977 के बाद टीम इंडिया ने लेबनान पर पहली जीत दर्ज की थी। भारतीय टीम इस जीत के लय को सैफ चैंपियनशिप के सेमीफाइनल में भी बरकरार रखना चाहेगी। अब तक ग्रुप स्टेज में टीम इंडिया ने जिस तरह का खेल दिखाया है, उसको देखते हुए लेबनान के लिए रास्ता आसान नहीं रहने वाला है।

भारत-लेबनान दोनों ही शानदार फॉर्म में

लेबनान ने ग्रुप (बी) स्टेज के अपने आखिरी मैच में बुधवार को मालदीव को 1-0 से हरा दिया। टीम के लिए कप्तान हसन माटूक ने 24वें मिनट में फ्री-किक पर महत्वपूर्ण गोल दागा। इस टीम ने ग्रुप स्टेज के अपने तीनों मैच जीते और शीर्ष स्थान पर रही। वहीं, भारतीय टीम ग्रुप (ए) स्टेज में अपने तीन में से दो मैच जीतने में सफल रही थी। उसने पाकिस्तान को 4-0 और नेपाल को 2-0 से हराया था। कुवैत के खिलाफ आखिरी ग्रुप मैच 1-1 से ड्रॉ रहा था। ऐसे में दोनों टीमों के बीच दिलचस्प टक्कर देखने को मिल सकती है। बतातें चलें कि भारत ने हाल ही में हुए इंटरकॉन्टिनेंटल कप के फाइनल में लेबनान को ही हराया था और ट्रॉफी अपने नाम की थी। अब तक दोनों टीमें आठ बार भिड़ चुकी हैं। इसमें से भारत ने दो और लेबनान ने तीन मैच जीते हैं। वहीं, तीन मुकाबले ड्रॉ रहे हैं। हालांकि, यह एक नॉकआउट मैच होगा, इसलिए इसमें ड्रॉ की कोई गुंजाइश नहीं होगी। 90 मिनट तक मैच ड्रॉ रहने पर मैच 30 मिनट के एक्स्ट्रा टाइम में जाएगा। इसे भी दो हाफ में खेला जाएगा। वहीं, एक्स्ट्रा टाइम में भी स्कोर बराबर रहने पर मैच पेनल्टी शूटआउट में जाएगा।

भारत-लेबनान की फीफा रैंकिंग

दोनों टीमों की फीफा रैंकिंग की बात करें तो लेबनान 99वें स्थान पर काबिज है, जबकि भारत की फीफा रैंकिंग 101 है। दोनों टीमों के पिछले पांच मैचों की बात करें तो भारत ने अपने पिछले पांच में से तीन मैच जीते हैं, जबकि दो मैच ड्रॉ रहे हैं। वहीं, लेबनान को अपने पिछले पांच में से तीन मैचों में जीत मिली है। एक मैच ड्रॉ रहा है, जबकि एक में उसे हार का सामना करना पड़ा।

कम करनी होगी छेत्री पर निर्भरता

भारतीय टीम ने पाकिस्तान पर 4-0 से जीत जरूर हासिल की, लेकिन नेपाल के खिलाफ 2-0 से जीत में पहले एक घंटे के दौरान उसे कोई गोल नसीब नहीं हुआ था। इसी तरह कुवैत के खिलाफ भी छेत्री ने ही गोल का खाता खोला था। गोल के मामले में टीम की 38 वर्षीय स्ट्राइकर सुनील छेत्री पर निर्भरता काफी ज्यादा है। उन्होंने टीम के कुल सात में से अब तक पांच गोल किए हैं। टीम के मिडफील्डर साहल अब्दुल समद का कहना है कि उनके समेत टीम के दूसरे खिलाड़ियों को ज्यादा से ज्यादा लक्ष्य पर निशाना साधना होगा, जिससे छेत्री पर पड़ रहे भार को कम किया जा सके।

रात के अंधेरे में अज्ञात अपराधियों ने बनाया निशाना, चाकू से किये कई वार

पुटकी बाजार में चेंबर अध्यक्ष के भाई की चाकू मार कर हत्या

पुटकी पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज कर शुरू की जांच

आजाद सिपाही संवाददाता

धनबाद। धनबाद-बोकारो मुख्य मार्ग के पुटकी कोलियरी गेट के सामने बुधवार की देर रात एक व्यक्ति की अपराधियों द्वारा धारदार हथियार से गोद कर हत्या कर दिए जाने का मामला प्रकाश में आया है। मृतक की पहचान संतोष शर्मा (35) के रूप में की गई है। वह पुटकी बाजार का रहने वाला था। महुदा के लाल बंगला में जूता-चप्पल की दुकान का संचालक है। संतोष पुटकी बाजार चेंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष का चचेरा भाई था। घटना की जानकारी गुरुवार की सुबह पुटकी पुलिस की पेट्रोलिंग टीम ने संतोष के स्वजनों को दी। पुलिस की मानें तो जिस समय संतोष को बरामद किया गया वह गंभीर रूप से घायल था। उसे तुरंत अस्पताल ले जाया गया, लेकिन रास्ते में ही उसने दम तोड़ दिया। अस्पताल पहुंचने पर चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने बताया कि संतोष के शरीर पर धारदार हथियार के लिए कई वार से बने गहने घाव के निशान भी मिले हैं। पुलिस ने शव का पंचनामा करने के बाद उसे पोस्टमार्टम के लिए धमबाद अस्पताल भेज दिया। साथ ही अज्ञात के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस पता लगाने की कोशिश कर रही है कि किन कारणों के चलते संतोष की हत्या की गई है। उधर, सामाचार लिखे जाने तक इस मामले में किसी की गिरफ्तारी की कोई सूचना नहीं है।

शादी का झांसा देकर युवती का यौन शोषण का आरोप, आरोपित गिरफ्तार

नाबालिग अवस्था से ही यौन संबंध बनाने का आरोप

आजाद सिपाही संवाददाता

कतरास। बाघमारा थाना क्षेत्र में 20 वर्षीय एक युवती ने बरोरा निवासी विजय कुमार साव नामक 25 वर्षीय युवक पर शादी का झांसा देकर यौन शोषण करने के बाद शादी से मुकर जाने का मामला प्रकाश में आया है। वहीं, पीड़िता की लिखित शिकायत के बाद पुलिस ने कार्रवाई करते हुए आरोपित युवक को गिरफ्तार कर गुरुवार को उसे जेल भेज दिया। लगे हाथ पीड़िता को मेडिकल जांच के लिए अस्पताल भेज दिया। युवती ने पुलिस से की शिकायत में बताया कि उसके पिता की मौत के बाद आरोपी युवक शादी का झांसा देकर नाबालिक अवस्था से ही उसके साथ यौन संबंध बनाने लगा। इसी तरह लंबा समय बीत गया। वह जब भी विजय से शादी की बात कहती तो वह बहला फुसला कर बातों को टाल दिया करता था। इसी बीच विजय के परिवारवालों ने उसकी शादी दूसरी लड़की से पक्की कर दी। जब इस बात को लेकर युवक से उसने पूछताछ की तो उसने कहा कि 10 लाख रुपये देने पर ही वह उससे शादी कर पाएगा। अगर उसने उक्त रकम नहीं दी तो उसके परिवार वाले उससे (विजय) से शादी नहीं होने देंगें। इसके बाद पीड़िता पुलिस के पास पहुंच गयी। उसने न्याय की गुहार लगाते हुए कहा कि पिता की मौत हो जाने के बाद से परिवार तंगहाली की जिंदगी जी रहा है। शादी का झांसा देखर यौन शोषण करने के बाद युवक अब शादी से मुकर रहा हैं। युवती ने आरोपी युवक के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की मांग की है। दूसरी ओर, उक्त घटना का खुलासा होने पर ग्रामीणों में भी आरोपित के प्रति आक्रोश है।

समाजसेवी ने थामा जदयू का दामन

कतरास (आजाद सिपाही)। श्यामडीह मोड़ स्थित यूथ फोर्स प्रधान कार्यालय में जदयू प्रदेश महासचिव सह यूथ फोर्स के प्रधान संयोजक दीप नारायण सिंह की अगुवाई में बैठक हुई। जहां तोपचांची प्रखंड अंतर्गत पाथलचपड़ा निवासी सामाजिक कार्यकर्ता सुमन देवी और राज कुमार मुर्मू ने जदयू का दामन थामा। दीप नारायण सिंह ने उन्हें पार्टी में शामिल कराया। उन्होंने पार्टी में शामिल होने पर दोनों को बधाई देते हुए कहा कि आज पूरे झारखंड में जदयू मजबूत हो रही है। पार्टी में सामाजिक कार्यकर्ता, महिला और युवा बड़ी संख्या में प्रतिदिन जुड़ रहे हैं। आने वाले 2024 लोकसभा और झारखंड विधानसभा चुनाव में इसका प्रभाव देखने को मिला। आने वाले समय में जदयू गिरिडीह लोकसभा क्षेत्र में महिलाओं और युवाओं को रोजगार मिले इसके लिए आंदोलन करेगी। इस मौके पर जदयू प्रदेश सचिव (महिला प्रकोष्ठ) बिंदु देवी, जदयू जिला महासचिव इंदल सिंह, जदयू बाघमारा प्रखंड अध्यक्ष गोपाल चंद्र गोप, सूरज कुमार, सुभाष सिंह और प्रिंस कुमार आदि उपस्थित थे।

धनबाद के डीआरएम ने सार्वजनिक माफी नहीं मांगी तो करेंगे उग्र आंदोलन : रमाशंकर तिवारी

डीआरम पर कर्मचारी के साथ दुर्व्यवहार का आरोप, आजसू ने की निंदा

आजाद सिपाही संवाददाता

कतरास। आजसू के जिला प्रधान सचिव सह सांसद प्रतिनिधि रामाशंकर तिवारी की अध्यक्षता में गुरुवार को नावागढ में बैठक हुई। जिसमें धनबाद डीआरएम द्वारा अपने ही अधिनस्थ कर्मचारी बसंत उपाध्याय के साथ किये गये अमानवीय व ्बद्र व्यवहार की कड़ी निंदा की गई। बतातें चलें कि धनबाद रेलवे अस्पताल में कार्यरत बसंत उपाध्याय को वहां के डॉक्टर ने सख्त निर्देश दे रखा था कि कोई भी मरीज उनके चेंबर में आए तो उसे बाहर ही उसका जूता-चप्पल खोलने पर ही अंदर जाने की इजाजत दी जाए। इसी बीच डीआरएम की पत्नी जब रेलवे अस्पताल में डॉक्टर के चेंबर में पहुंची तो बसंत उपाध्याय ने उन्हें चप्पल खोलकर अंदर जाने को कहा। इसी बात से डीआरएम साहब नाराज हो गए। उन्होंने बसंत उपाध्याय की ड्यूटी समाप्त होने के बाद उन्हें अपने कार्यालय में बुलाकर कथित रूप से उसके कपड़े उतरवाकर अश्लील शब्दों का प्रयोग करते हुए बेइज्जत किया। इसका बसंत उपाध्याय के दिमाग पर गहरा आघात लगा और वह तनाव में बीमार हो गया, जिसका धनबाद के असफी अस्पताल में इलाज भी चल रहा है। इससे पहले इसीआर के रेलवे यूनियन के लोगों ने भी डीआरएम के व्यवहार के विरोध में हंगामा किया था। रमाशंकर तिवारी ने कहा कि कोई भी जाति के कनीय अधिकारी व कर्मचारी हो और उसके साथ वरिय उच्चाधिकारी इस तरह अपने कार्यालय में बुलाकर कपड़ा उतरवा ले और अश्लील भाषा के साथ भला-बूरा कहेगा तो उसे बर्दास्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने कड़े लहजे में चेतावनी दी कि धनबाद डीआरएम अविलंब सार्वजनिक रूप से बसंत उपाध्याय से माफी मांगे। ऐसा नहीं करने पर आजसू डीआरएम कार्यालय में उग्र प्रदर्शन करने को बाध्य होगा। इस मौके पर पार्टी के प्रखंड अध्यक्ष राकेश गयाली, कार्यकारी अध्यक्ष गौतम गोप, विकाश सरकार, प्रेम कुमार तिवारी, मुकेश महतो, राजेश उरांव, अनीश सिंह, अजय पासवान और सुभाष हांसदा आदि उपस्थित थे।

बकरीद पर मांगी गयी अमन-चैन की दुआ

आजाद सिपाही संवाददाता

लोयाबाद। ईदगाह, मदनाडिह, निचितपूर, लोयाबाद पावर हाउस मस्जिद में गुरुवार को इद-उल अजहा (बकरीद) की नमाज अदा की गयी। मुस्लिम समाज के लोगों ने नमाज के बाद देश-दुनिया में अमन-चैन के साथ ही सभी की सलामती, सौहार्द और तरक्की की सामूहिक दुआ मांगी गई। इसके बाद एक-दूसरे से गले मिलकर बकरीद की मुबारक दी। नमाज अदा करने के बाद लोगों ने अल्लाह तआला की खुशनवदी हासिल करने के लिए बकरे की कुर्बानी दी। लोयाबाद ईदगाह में अलहाज मौलाना मोहम्मद गुलाम रसूल साहब ने खिताब करते हुए कहा कि ईद-उल-अजहा का त्योहार कुर्बानी व त्याग का एक ऐसा संदेश देता है जिसकी मिसाल रहती दुनिया तक नहीं मिलेगी। उन्होंने कहा कि मुहब्बत व फरमांबरदारी की ये लजवाल मिशाल जो बाप और बेटे ने कायम की थी कि अल्लाह तआला को इस कद्र महबूब हुई कि कयामत तक के लिए अपने मजहब ए तौहीद में शामिल कर जिंदा जावेद कर दिया। दूसरी ओर, विधि व्यवस्था संधारण में थानेदार राजन कुमार राम व पुलिस बल को सक्रिय देखे गए। ईदगाह में थानेदार और पुलिस कर्मियों ने भी मुस्लिम समुदाय के लोगों से गले मिल कर ईद की मुबारकबाद दी। मुस्लिम कमेटी के अध्यक्ष इम्तियाज अहमद महामंत्री मो असलम मंसूरी व चैंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष राज कुमार महतो ने शांतिपूर्ण माहौल में त्योहार संपन्न होने पर पुलिस के साथ ही लोगों को भी बधाई दी।

बेरमो में अकीदत के साथ मनी बकरीद, मांगी अमन-चैन की दुआ

आजाद सिपाही संवाददाता

करगली/बेरमो। बेरमो कोयलांचल में गुरुवार को हर्षोल्लास के साथ ईद-उल-अजहा (बकरीद) का त्योहार मनाया गया। मुस्लिम समाज के इस महापर्व में क्षेत्र के हिंदू भी शामिल हुए और भाईचारे का संदेश दिया। बेरमो के सभी मस्जिदों व ईदगाहों में ईद-उल-अजहा की दो रिकअत नमाज इमामों ने पढ़ाई। मुसलमानों ने बकरीद की नमाज अदा कर अपने परिवार के साथ ही देश-दुनिया व क्षेत्र की सलामती की दुआ मांगी। इसके बाद एक-दूसरे से गले मिलकर बकरीद की मुबारकबाद दी। इसके बाद कुर्बानी देकर रस्म अदा की गई और एक-दूसरे के घर जाकर लजीज व्यंजनों का लुत्फ उठाया।

13 स्थानों पर अदा की गयी नमाज

बेरमो थाना क्षेत्र के 13 स्थानों पर सुबह में लोगो ने बकरीद की नमाज अदा की। जिसमें करगली फुटबॉल ग्राउंड, करगली स्थित महिला मंडल सहित राजाबेड़ा के अंसारी मोहल्ला और शाह मोहल्ला, भेड़मुक्का, पटेल नगर के मदनी मस्जिद और मक्का मस्जिद, रहीमगंज, बीडीओ ऑफिस के रजा नगर, ढोरी स्टाफ क्वार्टर, अमलो बस्ती, सुभाष नगर खनका, रामनगर मदरसा शामिल है। वहीं, फुसरो के पुराना बीडीओ ऑफिस, रहीमगंज, भेड़मुक्का, पटेलनगर व रजानगर, स्टाफ क्वाटर, घुटियाटांड, करगली, जरीडीह बाजार, सुभाषनगर, अमलो, चलकरी बस्ती, संडेबाजार, गांधीनगर, कुरपनिया, आदि इलाकों की मस्जिदों व ईदगाहों में सुबह होते ही ईद-उल-अजहा की नमाज पढ़ने को बच्चों से लेकर बड़ों तक की भीड़ जुटने लगी। बच्चे काफी खुश नजर आए।

सतर्क रहा प्रशासन

त्योहार के दौरान शांति व्यवस्था कायम रखने को लेकर बेरमो पुलिस की ओर से कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की गयी थी। सभी मस्जिदों व ईदगाहों के निकट प्रशासन की ओर से प्रतिनियुक्त दंडाधिकारियों के साथ ही स्थानीय पुलिस के जवान व अधिकारी मुस्तैद रहे। बेरमो थाना प्रभारी रविंद्र कुमार सिंह के नेतृत्व में जगह-जगह पेट्रोलिग की टीम मोर्चा संभाले हुए तत्पर दिखी। इस बार पुलिस प्रशासन ने विधि व्यवस्था को लेकर पुख्ता इंतजाम किया था।

कसमार में इद-उल-अजहा शांतिपूर्ण संपन्न

कसमार (आजाद सिपाही)। कसमार थाना क्षेत्र के कसमार, गररी, मंजुरा, मधुकरपुर, बगियारी, हरनाद, कमलापुर, नौवाजारा सहित अन्य जगहों पर गुरुवार को सौहार्दपूर्ण वातावरण में शांतिपूर्ण तरीके से इद-उल अजहा संपन्न हुआ। मुस्लिम समुदाय के लोगों में सुबह से ही काफी उत्साह देखा गया। मुस्लिम समुदाय के लोगों ने ईदगाह पहुंचकर ईद-उल-अजहा (बकरीद) की नमाज अदा कर राज्य व देश के लिए अमन चैन की दुआ मांगी। वहीं, त्योहार के मद्देनजर प्रशासनिक अधिकारियों की कड़ी सुरक्षा व्यवस्था थी। कसमार बीडीओ बिजय कुमार व कसमार थाना के एएसआई अनिल कुमार क्षेत्र के भ्रमण करते दिखे। लोगों को बकरीद की मुबारकबाद भी दी।

ऑटो-बाइक की भिड़ंत में एक घायल, हालत गंभीर

लोयाबाद (आजाद सिपाही)। लोयाबाद थाना अंतर्गत एकड़ा शिव मंदिर के समीप गुरुवार की दोपहर दो बजे ऑटो और बाइक के बीच टक्कर हो गई। इस हादसे में बाइक सवार गंभीर रूप से घायल हो गया। स्थानीय लोगों की मदद से उसे तत्काल उपचार के लिए करकेंद स्थित अस्पताल में भर्ती कराया जहां चिकित्सक ने प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए धनबाद एसएनएमएमसीएच भेज दिया। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि करकेंद की तरफ से बाइक सवार लोयाबाद की ओर जा रहा था। तभी एक हाइवा से ओवरटेक करने के चक्कर में विपरीत दिशा से आ रहे ऑटो से टकरा गया। उसकी पहचान नहीं हो सकी है।

पर्यावरण को संतुलित रखने के लिए पौधा जरूर लगायें: मनोज

फुसरो/बेरमो (आजाद सिपाही)। स्वच्छता पखवाड़ा के तहत सीसीएल ढोरी क्षेत्र की ओर से गुरुवार को विनोद बिहारी महतो सरस्वती विद्या मंदिर गुंजरडीह मुंगो में पौधारोपण किया गया। यहां जीएम मनोज कुमार अग्रवाल, तारमी पीओ शैलेश प्रसाद ने दर्जनों फलदार एवं छायादार पौधे लगाकर पर्यावरण बचाओ का संदेश दिया। जीएम ने स्कूली बच्चों को पेड़-पौधों के महत्व के बारे में बताया और पौधारोपण के लिए प्रेरित किया। वहीं, बच्चों ने भी पौधे लगाएं एवं उन्हें सुरक्षित रखने का संकल्प लिया। जीएम ने कहा कि पर्यावरण को संतुलित रखने के लिए सभी को पौधे अवश्य लगाना चाहिए। इस अवसर पर बच्चों और स्थिनियों के बीच जूट की थैली और पौधा का वितरण किया गया। मौके पर एसओ सिविल उज्जवल कुमार सिंह, सीएसआर अधिकारी शैलेश कुमार, सीसीएल सुरक्षा पदाधिकारी सीताराम यूके, एसडीओसीएम परियोजना के सेल अधिकारी राजेश गुप्ता, नावाडीह प्रमुख पूनम देवी, चपरी मुखिया आरती देवी, गुंजरडीह मुखिया जयलाल महतो, सांसद प्रतिनिधि यशोदा देवी, विनोद बिहारी महतो सरस्वती विद्या मंदिर गुंजरडीह मुंगो अध्यक्ष गौरीशंकर महतो, कोषाध्यक्ष लोकेश्वर महतो, प्रधानाचार्य सूर्यदेव मंडल, प्रधानाचार्य तुपकाडीह मंटू कुमार गिरि, आचार्य अनंतलाल पांडेय, योधन महतो, सुनील कुमार, मिथिलेश गिरी आदि मौजूद थे।

प्रदीप जगदीश और कैलाश राजेश जैसे कई नामचीन लोगों की संलिप्तता से धड़ल्ले से चल रहा कारोबार

पुलिस की नाक के नीचे चल रहा अवैध कोयले का काला कारोबार

मोटी कमाई का प्रलोभन देकर कुछ स्थानीय लोगों की मिलीभगत से की जा रही अवैध मुहानों की खुदाई

समिद खान

भाटडीह ओपी क्षेत्र कोयला तस्करों के लिए बन चुका है बड़ा बाजार

मुहाने की अवैध खुदाई कर जंगल में बोरियों में भर कर रखा गया कोयला।

महुदा (आजाद सिपाही)। कोयलांचल धनबाद के भाटडीह ओपी क्षेत्र के मुरलीडीह पांच व 13 नंबर समेत अन्य ठिकानों पर कई बड़े-बड़े अवैध मुहाने खोलकर व्यापक स्तर पर कोयले की अवैध खुदाई कर करोड़ों रुपये का अवैध कारोबार चल रहा है। काला हीरा कहे जाने वाले कोयले की मची खुली लूट का आलम यह है कि जिले के बड़े-बड़े और नामचीन कोयला तस्कर कथित रूप से स्थानीय लोगों को मोटी कमायी का प्रलोभन देकर दर्जनों अवैध माइंस खोल दिये है। वर्तमान में तस्कर ने कथित पुलिस प्रशासन समेत तमाम संबंधित महकमों से साठगांठ कर इन दिनों व्यापक पैमाने पर कोयले का अवैध कारोबार कर रहे हैं। इतना ही नहीं तस्कर कोयले का उक्त कारोबार बीसीसीएल एवं फोरेस्ट विभाग की जमीन पर संचालित कर रखे है जिससे न केवल पर्यावरण का खतरा उत्पन्न हो रहा, बल्कि बगल में स्थापित महुदा जलापूर्ति योजना और पावर हाऊस के विद्युत सब स्टेशन पर भी खतरा गहरा गया है। अनवरत चल रहे इस बड़े काले कारोबार में स्थानीय पुलिस प्रशासन, जिला फोरेस्ट विभाग समेत बीसीसीएल प्रबंधन एवं उनके सुरक्षा तंत्र के औसुबल की प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप समर्थन बताया जा रहा है। सूत्रों की मानें तो कोयले के इस अवैध कारोबार में कथित रूप से प्रदीप जगदीश और कैलाश राजेश जैसे अन्य नामचीन लोगों की संलिप्तता भी बतायी जा रही है, जो धनबाद के विख्यात कारोवारी प्रमोद, राजेश, संजय आदि के संरक्षण में काम को अंजाम दे रहे हैं। हालांकि इस क्षेत्र में चल रहे कोयले के अवैध कारोबार को लेकर नव नियुक्त प्रभारी ने सूचना मिलने पर सख्त कार्रवाई की बात तो कही है, पर हैरत की बात यह है कि पुलिस इससे अनजान होने का दिखावा भी कर रही है, जो समझ से परे है। क्योंकि पुलिस की साठगांठ के बिना इस काले कारोबार को चला पाना मुमकिन नहीं है। क्षेत्र में कोयला के अवैध कारोबार का आलम यह है कि यहां एक-एक व्यक्ति 4-5 माइंस खोलकर प्रतिदिन सैकड़ों टन अवैध कोयलों को ट्रकों के माध्यम से बंगाल, टाटा और उत्तर प्रदेश आदि के मंडियों में भेज रहे हैं। हालांकि बीसीसीएल और पुलिस के अधिकारी बीच-बीच में छापामारी कर अवैध कारोबार पर अंकुश लगाने की कोशिश और कुछ माइंस की भराई जरूर करते हैं। पर लोगों की मानें तो यह सब महज दिखावा है। गौरतलब हो कि भाटडीह ओपी क्षेत्र कोयला तस्करों के लिये बड़ा बाजार बन चुका है। राज्य की बेशकीमती संपदा लूटी जा रही है।

रेल संरक्षा आयुक्त ने झारतरभा से खंबेश्वरपाली के बीच नवीन लाइन कार्य का किया निरीक्षण

आजाद सिपाही संवाददाता

संबलपुर। दक्षिण पूर्वी सर्किल के रेल संरक्षा आयुक्त एएम चौधरी ने गुरुवार को संबलपुर मंडल में बलांगीर-खुर्दा रोड नयी लाइन परियोजना के झारतरभा से खंबेश्वरपाली स्टेशनों के बीच नयी लाइन के काम का निरीक्षण किया।

चौधरी ने ओवरहेड उपकरणों, पुलों, सिग्नल और दूरसंचार उपकरणों, रेलवे ट्रैक आदि जैसे संरक्षा संबंधी पहलुओं का निरीक्षण किया और खंबेश्वरपाली से झारतरभा स्टेशनों के बीच गति परीक्षण भी किया। मंडल में इस खंड के नयी लाइन और विद्युतीकरण के बाद यह ट्रेनों के सुचारू संचालन की सुविधा प्रदान करेगा।

निरीक्षण के दौरान संबलपुर के मंडल रेल प्रबंधक विनीत सिंह, पूर्व तट रेलवे के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण) पी श्रीनिवास और पूर्व तट रेल मुख्यालय और संबलपुर मंडल के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी साथ थे।

मुख्यमंत्री ने तीन लाख रुपये देने की घोषणा की

त्रिपुरा के सीएम माणिक साहा से बात की

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। मुख्यमंत्री श्री नवीन पटनायक ने कल बाहुड़ा यात्रा के दौरान क्योंझर जिले के केंदुआ गांव में 3 लोगों और कोरापुट जिले के कोलाब नगर में एक व्यक्ति की मौत पर गहरा दुख व्यक्त किया और मृतक के परिजनों के लिए मुख्यमंत्री के राहत कोष से 3 लाख रुपये सहायता की घोषणा की है। और शोक संतप्त परिवार के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की मुख्यमंत्री ने

भुवनेश्वर। मुख्यमंत्री श्री नवीन पटनायक ने आज त्रिपुरा के मुख्यमंत्री श्री माणिक साहा से बाहुड रथ यात्रा के बारे में टेलीफोन पर बात की। त्रिपुरा के कुमारघाट इलाके में बाहुडा रथ यात्रा के दौरान करंट लगने से 7 लोगों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए. इस घटना पर मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने गहरा दुख व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री श्री पटनायक ने पीड़ितों के परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त की। उन्होंने कहा कि वह और ओडिशा के लोग दुख की इस घड़ी में त्रिपुरा के लोगों के साथ मजबूती से खड़े हैं।

घायलों को मुफ्त इलाज मुहैया कराने का आदेश दिया है और उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की है। मुख्यमंत्री ने घायल व्यक्तियों के शीघ्र स्वस्थ होने की भी कामना की।

वेदांता एल्युमीनियम अपने विविध कार्यबल को और मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है

- कंपनी अब अपने सभी प्राथमिक स्थानों पर लगभग 30 ट्रांसजेंडर कर्मचारियों को रोजगार देती है

आजाद सिपाही संवाददाता

भूवनेश्वर/नई दिल्ली। भारत के सबसे बड़े एल्युमीनियम उत्पादक वेदांता एल्युमीनियम ने एक समावेशी और विविध कार्यस्थल को बढ़ावा देने के लिए अपने समर्पण की पुष्टि करने के अवसर के रूप में गौरव माह मनाया। हाल ही में ओडिशा के लांजीगड़ में दो ट्रांसजेंडर पेशेवरों का अपने परिचालन में स्वागत करके, कंपनी अब अपने सभी प्राथमिक स्थानों पर लगभग 30 ट्रांसजेंडर कर्मचारियों को रोजगार देती है। इनमें ओडिशा के झारसुगुड़ा में इसका मेगा एल्यूमीनियम स्मेल्टर, लांजीगड में इसकी विश्व स्तरीय एल्यूमिना रिफाइनरी और छत्तीसगड में स्थित भारत की प्रतिष्ठित एल्यूमीनियम उत्पादक इसकी सहायक कंपनी बाल्को शामिल है। यह वास्तव में विविध कार्यस्थल को बढ़ावा देने के वेदांत एल्युमीनियम के मिशन में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में आता है, अपने विविध कार्यबल

को मजबूत करने के कंपनी के प्रयासों पर वेदांता लिमिटेड के सीईओ एल्युमीनियम बिजनेस श्री राहुल शर्मा ने कहा, जैसा कि हम अपने वैश्विक बाजारों और ग्राहकों के विविध और जटिल परिदृश्य को नेविगेट करते हैं, हम इसके सभी रूपों में विविधता को अपनाने के विशाल मूल्य को पहचानते हैं। विविध दृष्टिकोण, अनुभव, कौशल और शैक्षिक पृष्ठभूमि वाले व्यक्तियों की तलाश करके, हम कर्मचारी केंद्रितता के अपने स्तंभ और अच्छी तरह से व्यापार रणनीतियों को विकसित करने की क्षमता को मजबूत करते हैं। सच्ची योग्यता लिंग से परे है, और हम एक ऐसी संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध हैं जहां हर कर्मचारी और भागीदार अपनी असीमित क्षमता को उजागर करने के लिए अपनाए गये।

भुवनेश्वर-धनबाद, पुरी-पटना और पुरी-तिरुपति के लिए विशेष ट्रेनें

- विशाखापत्तनम से बेंगलुरु, बनारस, सिकंदराबाद, तिरूपति और मेहबूबनगर के लिए विशेष ट्रेनें।
- विशाखापत्तनम-रंगपड़ा उत्तर और संबलपुर-इरोड पूर्व तट रेलवे से नई विशेष ट्रेनें।

आजाद सिपाही संवाददाता

भूवनेश्वर। भूवनेश्वर 29/06 यात्रा करने वाली जनता की मांगों को ध्यान में रखते हुये और नियमित ट्रेनों में अतिरिक्त भीड़ को कम करने के लिए, पूर्व तट रेलवे क्षेत्राधिकार से और उसके माध्यम से विशेष ट्रेनों की सेवाओं को निम्नलिखित के अनुसार विस्तारित करने का निर्णय लिया गया है।

भुवनेश्वर-धनबाद : भुवनेश्वर से प्रतिदिन प्रस्थान करने वाली 02832 भुवनेश्वर-धनबाद स्पेशल एक्सप्रेस 31 अगस्त 2023 तक चलेगी। वापसी दिशा में, धनबाद से प्रतिदिन प्रस्थान करने वाली 02831 धनबाद-भुवनेश्वर स्पेशल एक्सप्रेस 1 सितंबर 2023 तक चलेगी।

पुरी और पटना : प्रत्येक शनिवार को पुरी से प्रस्थान वाली 08439 पुरी-पटना स्पेशल एक्सप्रेस अब 26 अगस्त 2023 तक चलेगी। वापसी दिशा में, प्रत्येक रविवार को पटना से प्रस्थान वाली 08440 पटना-पुरी स्पेशल एक्सप्रेस अब 27 अगस्त 2023 तक चलेगी।

प्रत्येक गुरुवार को पटना से प्रस्थान वाली 03230 पटना-पुरी स्पेशल एक्सप्रेस अब 31 अगस्त 2023 तक चलेगी। वापसी में, प्रत्येक शुक्रवार को पुरी से प्रस्थान वाली 03229 पुरी-पटना स्पेशल एक्सप्रेस अब 1 सितंबर 2023 तक चलेगी।

भूवनेश्वर-तिरुपति : प्रत्येक शनिवार को भुवनेश्वर से प्रस्थान करने वाली 02809 भुवनेश्वर-तिरुपति स्पेशल एक्सप्रेस अब 29 जुलाई 2023 तक चलेगी प्रत्येक रविवार को तिरुपति से प्रस्थान करने वाली 02810 तिरुपति-भुवनेश्वर स्पेशल एक्सप्रेस अब 30 जुलाई 2023 तक चलेगी।

विशाखापत्तनम-बनारस : प्रत्येक बुधवार को विशाखापत्तनम से प्रस्थान करने वाली 08588 विशाखापत्तनम-बनारस स्पेशल एक्सप्रेस अब 12 जुलाई 2023 तक चलेगी। प्रत्येक गुरुवार को बनारस से प्रस्थान करने वाली 08587 बनारस-विशाखापत्तनम स्पेशल एक्सप्रेस अब 13 जुलाई 2023 तक चलेगी।

विशाखापत्तनम-सिकंदराबाद : प्रत्येक बुधवार को विशाखापत्तनम से प्रस्थान करने वाली 08579 विशाखापत्तनम-सिकंदराबाद स्पेशल एक्सप्रेस अब 26 जुलाई 2023 तक चलेगी। प्रत्येक गुरुवार को सिकंदराबाद से प्रस्थान करने वाली 08580 सिकंदराबाद-विशाखापत्तनम स्पेशल एक्सप्रेस अब 27 जुलाई 2023 तक चलेगी।

विशाखापत्तनम-तिरुपति : विशाखापत्तनम से प्रत्येक सोमवार को प्रस्थान करने वाली 08583 विशाखापत्तनम-तिरुपति स्पेशल एक्सप्रेस अब 31 जुलाई 2023 तक चलेगी। प्रत्येक मंगलवार को तिरुपति से प्रस्थान करने वाली 08584 तिरुपति-विशाखापत्तनम स्पेशल एक्सप्रेस अब 1 अगस्त 2023 तक चलेगी।

विशाखापत्तनम-मेहबूबनगर : प्रत्येक मंगलवार को विशाखापत्तनम से प्रस्थान करने वाली 08585 विशाखापत्तनम-मेहबूबनगर स्पेशल एक्सप्रेस अब 25 जुलाई 2023 तक चलेगी। प्रत्येक बुधवार को मेहबूबनगर से प्रस्थान करने वाली 08586 मेहबूबनगर-विशाखापत्तनम स्पेशल एक्सप्रेस अब 26 जुलाई 2023 तक चलेगी।

विशाखापत्तनम-बेंगलुरु कैंट : प्रत्येक रविवार को विशाखापत्तनम से प्रस्थान करने वाली 08543 विशाखापत्तनम-बेंगलुरु कैंट स्पेशल एक्सप्रेस अब 30 जुलाई 2023 तक चलेगी। प्रत्येक सोमवार को बेंगलुरु कैंट से प्रस्थान करने वाली 08544 बेंगलुरु कैंट-विशाखापत्तनम स्पेशल एक्सप्रेस अब 31 जुलाई, 2023 तक चलेगी।

08915 विशाखापत्तनम-बेंगलुरु कैंट स्पेशल एक्सप्रेस यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को कम करने के लिए 1 जुलाई 2023 (शनिवार) को 13:15 बजे विशाखापत्तनम से रवाना होगी। यह ट्रेन रविवार को सुबह सात बजे बेंगलुरु कैंट पहुंचेगी।

पूर्व तट रेलवे से चलेंगी दो और विशेष ट्रेनें:

विशाखापत्तनम-रंगपड़ा उत्तर : जनसाधारण स्पेशल विशाखापत्तनम से 08562 विशाखापत्तनम-रंगपड़ा उत्तर स्पेशल 30 जुलाई 2023 तक प्रत्येक रविवार (शनिवार को दोपहर 12.10 बजे) 0010 बजे रवाना होगी और सोमवार को 1000 बजे रंगपड़ा उत्तर पहुंचेगी। वापसी दिशा में, रंगपड़ा उत्तर से 08561 रंगपड़ा उत्तर-विशाखापत्तनम स्पेशल 1 अगस्त, 2023 तक प्रत्येक मंगलवार को 05:15 बजे रवाना होगी और बुधवार को 15:35 बजे विशाखापत्तनम पहुंचेगी। इस ट्रेन में सात द्वितीय श्रेणी सीटें और दो गार्ड सह सामान वैन हैं, जो दोनों दिशाओं से विशाखापत्तनम और रंगपड़ा उत्तर स्टेशनों के बीच महत्वपूर्ण स्टेशनों पर रुकती हैं।

संबलपुर-एरोड : संबलपुर से 08311 संबलपुर-एरोड स्पेशल 26 जुलाई, 2023 तक प्रत्येक बुधवार को 1055 बजे रवाना होगी और गुरुवार को 1950 बजे एरोड पहुंचेगी। वापसी दिशा में, एरोड से 08312 एरोड-संबलपुर स्पेशल 28 जुलाई 2023 तक प्रत्येक शुक्रवार को 1345 बजे रवाना होगी और शनिवार को 21:15 बजे संबलपुर पहुंचेगी। इस ट्रेन में एक एसी-2 टियर, तीन एसी-3 टियर, नौ स्लीपर क्लास, तीन सेकेंड क्लास सीटिंग और दो गार्ड कम लगेज वैन हैं, जो टिटिलागड-रायगड़ा-विजयनगरम स्टेशनों के माध्यम से संबलपुर और एरोड स्टेशनों के बीच महत्वपूर्ण स्टेशनों पर रुकती हैं।

KGVK
HDFC BANK PARIVARTAN
A step towards progress

KGVK (Krishi Gram Vikas Kendra)
Vill.: Rukka, Post: Neori Vikash, District : Ranchi- 835217

Skill/Entrepreneurship Development through
Green-preneurship Promotion Project
Under the HDFC Bank Parivartan Program

Do you want to start your own agriculture/green sector based business/ enterprise, then participate in **Skill Based Entrepreneurship Development Program,** which will help you to establish your enterprise/ business and run it successfully.

Benefits of starting your own business:
- You will be your own boss.
- You can also provide employment to others.
- There is no limit to your income.
- You can do your work as per your wish, there is no interference of others.
- You can contribute to the development of the society.

Eligibility criteria to participate in the training program:
1. Age : Minimum 18 years.
2. Education qualification : Minimum Matriculation.
3. Should not be blacklisted from any bank in the past.
4. Must have your own land.

For detailed information Contact:
KGVK
Village :Rukka, Post : Neori Vikas,
District : Ranchi-835217
Contact : 9304496173

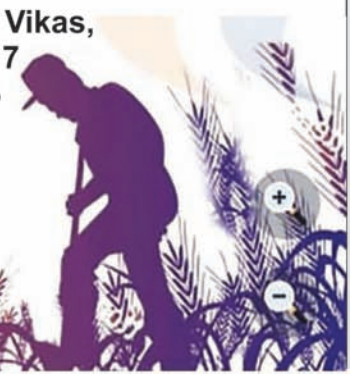

हूल दिवस
पर समस्त जिले वासियों को
हार्दिक बधाई शुभमकानाएं
शुभकामनाएं

लालू रविदास
पाकुड़, झारखंड

हूल दिवस
पर पाकुड़ जिलावासियों
को हार्दिक
शुभकामनाएं

संथाल से
उठी थी
जल,
जंगल
एवं
जमीन
छोड़ने
के नारे
की गूंज

राहुल साह
पाकुड़, झारखंड

आजाद सिपाही की ओर से स्वत्वाधिकारी लैंडस्केप मीडिया प्रा. लि., प्रकाशक एवं मुद्रक हरिनारायण सिंह के लिए 176 कोकर चौक, ओल्ड एचबी रोड, रांची 834001 (झारखंड) से प्रकाशित तथा डीबी प्रिंट सोल्यूशंस (ए यूनिट ऑफ डीबी कार्प लिमिटेड), प्लॉट नं. 535 एवं 1272, ललगुटवा, पुलिस स्टेशन, रातू, रांची से मुद्रित।
संपादक : हरिनारायण सिंह, **स्थानीय संपादक* :** विनोद कुमार,***पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के लिए जिम्मेदार, **राज्य समन्वय संपादक :** अजय शर्मा। समस्त दिवानी विवादों, न्यायोचित कार्रवाइयों एवं दंडित परिवादों के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। फोन : 9264434560, **R.N.I. No.-JHAHIN/2015/65109,** Postal Registration No. **RN/249/2019-21**